संजीव नेवर

VAISHYA
SHUDRA
BRAHMIN
KSHATRIYA
HINDU

हिन्दू धर्म के दलित

DALITS OF HINDUISM

(Now in Hindi)

हिन्दू धर्म
के
दलित

हिन्दू धर्म
के
दलित

: लेखक :

संजीव नेवर

: अनुवाद :

मृदुला

अनुवादक की कलम से

जातिवाद आज भारतवर्ष की एक ज्वलंत समस्या है, जिसमें पूरा देश जल रहा है। आज की अन्य सभी समस्याएं इस जातिवाद के पेड़ की शाखाएं हैं। हालांकि जातिवाद सिर्फ हिन्दू धर्म में ही नहीं है बल्कि मुसलमान और ईसाई भी इससे ग्रसित हैं। परन्तु, मुख्य रूप से जातिवाद को हिन्दूधर्म का मुखौटा बनाकर पेश किया जाता है। आज की युवा पीढ़ी भी हिन्दू धर्म के मूल तत्वों से अनजान है। ऐसे काल में जब भ्रष्टाचार और आतंकवाद जैसे राक्षस मुंह फाड़ कर खड़े हों और मानवता के अस्तित्व पर ही संकट छाया हो तो यह और भी आवश्यक हो जाता है कि इन सभी समस्याओं के मूल पर प्रहार किया जाए। ताकि हम एक स्वस्थ, समृद्ध और उन्मुक्त भारत का निर्माण कर फ़िर से अपना खोया गौरव प्राप्त कर भारत को विश्व गुरु बना सकें।

अग्निवीर आज के काल का एक अग्रणी क्रांतिकारी आन्दोलन है जो भारत की सभी समस्याओं पर अपना सटीक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। अग्निवीर के संस्थापक और इस पुस्तक (Dalits of Hinduism) के लेखक संजीव नेवर अपनी तीव्र बुद्धि,व्यापक विश्लेषण करने की क्षमता और अपने सुलझे हुए समाधानों के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने भारतवर्ष की इस समस्या का मूल कारण और उसके समाधानों पर अत्यंत गहन विश्लेषण कर तर्क और प्रमाणों से हिन्दू धर्म पर लगे जातिवाद के आरोप को जड़ से उखाड़ा है।

जातिवाद पर आधारित राजनीति और इसके दलदल से निकलने के समाधानों पर भी यह पुस्तक व्यापक प्रकाश ड़ालती है। हिन्दू धर्म पर लगे इस आरोप को मिटा सच्चे हिन्दुत्व की स्थापना करने में यह पुस्तक एक क्रांतिकारी कदम है।

इस पुस्तक का हिंदी अनुवाद मुझे करने के लिए कहा गया, इसका मुझे गर्व है। जनसामान्य के लिए इसका हिंदी अनुवाद करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष और समाधान प्राप्त हुआ। अनुवाद की प्रक्रिया में मैंने स्वयं भी कई नई बातें सीखीं और मेरी भी कई शंकाओं का समाधान हुआ।

भारतवर्ष के प्रत्येक नागरिक, खासतौर से युवा वर्ग को इसका स्वाध्याय जरुर करना चाहिए और दिल-दिमाग को खुला रखते हुए इस विषय पर आत्म-चिंतन करना चाहिए।

अंत में, मैं अग्निवीर का धन्यवाद करना चाहूंगी कि उन्होंने संजीव भाई की पुस्तकों का

अनुवाद करने का अवसर मुझे दिया और इस बहाने मां भारती की सेवा करने का सौभाग्य प्रदान किया।

जल्द ही हम जातिवाद के राक्षस का वध कर एक सुन्दर, सुदृढ़ समाज और एक मजबूत भारत बनाएं!

मृदुला

भूमिका

वेद – हिन्दू धर्म के मूलाधार ग्रन्थ, कहते हैं कि बंटवारा कार्यों का होना चाहिए, दिलों का नहीं। मनुष्य तन के चार मुख्य पहलू हैं – बुद्धि (ब्राह्मण), बल (क्षत्रिय), व्यवस्थापन (वैश्य) और सहयोग (शूद्र), जिस में मस्तिष्क बुद्धिमत्ता का प्रतिक है, हाथ बल को दर्शाते हैं, उदर व्यवस्थापन करता है और पैर सहयोग प्रदान करते हैं।

मनुष्य को मनुष्य बनाने के लिए इन सब का आपस में ताल-मेल से काम करना जरुरी है, सिर्फ मस्तिष्क, हाथ, उदर या पैर अपने आप में सम्पूर्ण शरीर नहीं बना सकते।

ब्राह्मण अलग से कोई जाति नहीं है बल्कि ब्राह्मणत्व एक गुण-धर्म है जो हम सभी में कम--अधिक मात्रा में पाया जाता है। इसी तरह, शूद्र भी कोई अलग जाति नहीं है बल्कि शूद्र्त्व भी एक गुण-धर्म है जो हम सभी में मौजूद है। हम सभी ब्राह्मण हैं, हम सभी शूद्र हैं, हम सभी मनुष्य हैं। भले ही हिन्दू धर्म द्वेषी हिन्दू धर्म को जाति-आधारित भेदभाव करने वाला एक दकियानूसी मत कहकर कितना ही उधम क्यों न मचाते रहें, हम देखते हैं कि महाभारत में हस्तिनापुर जैसे शक्तिशाली राज्य का महामंत्री 'विदुर' बना - जो शूद्र या दासी पुत्र था। 'वाल्मिकि' जो तथाकथित नीची जाति के कहे जाते हैं - उन्हें सम्पूर्ण हिन्दू समाज 'महर्षि' के रूप में पूजता है - माता सीता ने उन्हें पिता मानकर अपने आख़िरी दिन उनके आश्रम में बिताए। ऐसे ही, गणिका (वेश्या) के पुत्र महर्षि 'जाबाल' अथर्ववेद के ऋषि बने - ऐसे असंख्य उदाहरण मिलेंगे।

इस पुस्तक में हम इन मिथ्या धारणाओं को नष्ट करेंगे और हिन्दू धर्म की बुनियाद - सामाजिक समता की नीति को प्रस्थापित करेंगे।

'हिन्दू धर्म को जानें' श्रृंखला की यह द्वितीय पुस्तक है। यह श्रृंखला सभी मिथक नष्ट कर सच्चे हिन्दू धर्म की स्थापना करती है। इस श्रृंखला की प्रथम पुस्तक 'हिन्दू धर्म में गौ मांस नहीं' - हिन्दू धर्म में गौमांस भक्षण के आरोप की धज्जियां उड़ाती है। यह दूसरी पुस्तक हिन्दू धर्म पर लगे एक और आरोप - जन्मना जातिगत भेदभाव को संबोधित करती है।

आपको यह जानकर हर्ष मिश्रित आश्चर्य होगा कि यह सभी आरोप झूठे, निराधार और बकवास हैं। इसके विपरीत, हिन्दू धर्म – समानता, गुण कर्म आधारित योग्यता और न्याय का महानतम दर्शन है - जो कि आधुनिक व्यवस्था से कहीं अधिक परिष्कृत है। आधुनिक

व्यवस्था ईसाई और मुस्लिम युगों के मध्यकालीन पूर्वाग्रहों और रूढियों को हटाने में नाकाम रही है।

ईसाईयत की व्यवस्था में जो कोई भी ईसा मसीह को ईश्वर का पुत्र मानने से इंकार करे और बाइबिल को ईश्वर की किताब के रूप में नकारे – वह नरक का भागी है। इस्लामी व्यवस्था मानती है कि जो मुहम्मद को आख़िरी पैगम्बर न माने और कुरान को अल्लाह की अंतिम किताब न माने – वह हमेशा दोज़ख में जलेंगे। दोनों ही व्यवस्थाएं खुले तौर पर गुलामी को अपने मत का महत्वपूर्ण घटक मानती हैं। यदि इनके प्रचलित अनुवाद सही समझें जाएं, तो ईश्वर की आवाज़ कही जाने वाली ये किताबें इसका विवरण भी देती हैं कि कैसे गुलामों और बांदियों (रखैलों) का वितरण किया जाए।

हिन्दू धर्म इससे भिन्न है। हिन्दू धर्म में वेदों के अतिरिक्त कोई और पुस्तक परमात्मा की वाणी नहीं मानी गई है। और वेद किसी भी प्रकार की – जन्म, लिंग, मत या स्थान आधारित असमानता के इतने कटु निंदक हैं कि - जितनी निंदा करने से राजनीति के चलते आधुनिक व्यवस्था भी कतराती है। “वेद” अर्थात ज्ञान। वेद स्पष्ट घोषणा करते हैं कि किसी भी प्रकार का अन्धविश्वास जो बुद्धि और तर्क से परे हो – वह दुःखदायक है। वेदों की प्रामाणिकता पर न केवल प्रश्न ही पूछे जा सकते हैं अपितु इसे प्रोत्साहित किया गया है। इसलिए हिन्दुओं में इतने विविध पक्ष और विभाग देखे जा सकते हैं। आवश्यकता केवल इस बात की है कि आपकी मंशा और नियत सही हो।

अथर्ववेद स्पष्टतया कहता है कि विश्व में सदा ही भाषाओं, सभ्यताओं, परम्पराओं और मान्यताओं की विविधता रहेगी। भद्र पुरुषों को चाहिए कि वे सम्पूर्ण मानवजाति को एक परिवार समझें।

हिन्दू धर्म पर लगे आरोपों के स्रोत मुख्य रूप से तीन वर्गों में बांटे जा सकते हैं:

- ऐतिहासिक ग्रंथों और घटनाओं पर आधारित आरोप।
- धार्मिक ग्रन्थ जैसे रामायण, महाभारत, पुराण, स्मृति और सूत्र इत्यादि के आधार पर लगाए गए आरोप।
- वेदों के आधार पर लगे आरोप।

एक सुविधाजनक लेकिन निराधार कल्पना यह कर ली गई है कि पूर्व में घटित कुछ भी और संस्कृत में लिखित कुछ भी – हिन्दू धर्म का हिस्सा है।

पर इससे बड़ा झूठ और कुछ नहीं, जैसे लेबनान का हर अरेबिक बेली डांस इस्लाम का सन्देश नहीं है, अंग्रेजी में लिखित हर सन्स एंड लवर्स और लोलिता – बाइबिल नहीं है – उसी तरह हर संस्कृत शब्द भी हिन्दुत्व नहीं है।

बाबर द्वारा अपने समलैंगिक साथी बाबरी के नाम पर किया गया बाबरी मस्जिद का निर्माण जरुरी नहीं कि इस्लामिक हो, पोप जॉन XII का व्यभिचार और अनैतिक आचरण जरुरी नहीं कि ईसाइयत हो, ठीक उसी तरह किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत कर्मों को हिन्दुत्व का लक्षण नहीं माना जा सकता। यदि सारी दुनिया भी क्रोध और नफरत से ग्रसित क्यों न हो जाए, इससे क्रोध और नफरत हिन्दू लक्षण नहीं हो जाते। हिन्दू धर्म शाश्वत सिद्धांतों पर आधारित है – इसलिए क्रोध और नफरत हमेशा हिन्दुत्व के विरुद्ध रहेंगे।

इतिहास की चुनिन्दा घटनाओं और संस्कृत के कुछ असम्बद्ध ग्रंथों के हवाले से लगाए गए आरोप हिन्दू धर्म से सरोकार नहीं रखते। इन सभी आरोपों के बारे में केवल यही कहा जा सकता है कि उस काल में जो कुछ हुआ या जो कुछ किसी ग्रन्थ में लिखा गया या जो कुछ भी समाज में चलन था – वह सब हिन्दू धर्म के विरुद्ध था।

आरोपों के दूसरे वर्ग में धार्मिक ग्रन्थ यथा – रामायण, महाभारत, स्मृति और बाद के काल में लिखे गए ग्रंथों से प्रस्तुत उद्धरण भी कहीं नहीं टिकते। इस वर्ग के अधिकतर आरोप सिर्फ कुछ चुनिन्दा अप्रासंगिक शब्दों के ग़लत अर्थ हैं। कुछ आक्षेप किसी आपत्तिजनक पद या कथा से सम्बंधित हैं - पर इनकी भी पुष्टि नहीं होती। इसका कारण यह है कि यह ग्रन्थ स्वयं अपने मानव रचित होने की घोषणा करते हैं, जिस में त्रुटियां भी हो सकती हैं और हेर-फेर भी किया जा सकता है – अतः ये ग्रन्थ अंतिम प्रमाण नहीं हैं। ये ग्रन्थ धर्म के विषय में अंतिम प्रमाण 'वेद' को ही ठहराते हैं। और वेद कहते हैं कि उन्हें (वेदों को) को समझने के लिए – बुद्धि, तर्क और सहृदयता अंतिम प्रमाण हैं।

यह एक ज्ञात तथ्य है कि वेदों के आलावा हिन्दू धर्म का अन्य कोई ग्रन्थ इतने यत्नपूर्वक संरक्षित नहीं किया गया। इन अन्य ग्रंथों में भारी मात्रा में मिलावट या प्रक्षेपण हुए और आज भी इन के कई संस्करण मिलते हैं। यह ग्रन्थ दृष्टांत के द्वारा, कहानियों से, उपमान से और साहित्यिक प्रयोगों से सही और गलत का एक विशाल चित्र खींचते हैं। इन में कल्पित, मिथ्या और भ्रामक बातें भी हो सकती हैं। आखिरकार, यह उस काल की रचनाएं हैं जब कि कॉपीराईट के कायदे, कूटलेखन (Encryption), अपरिवर्तनशील उपकरण (Read Only Device) और डिजिटल राइट्स मैनेजमेंट नहीं हुआ करते थे। कोई भी केले

के पत्ते पर मोरपंख से कुछ भी लिख सकता था। विश्व की प्राचीनतम सभ्यता के लिए यह असंभव है कि हजारों वर्षों के दौरान हुए हर एक ग्रन्थ के अनगिनत अनुवाद या संस्करण का बनना रोक सके।

यही कारण है कि हिन्दू धर्म किसी भी ग्रन्थ, कहानी या इतिहास से ऊपर है। इन ग्रंथों से लाभ लेने का तरीका यही है कि जो तर्क संगत हो और आपका विवेक जिसकी गवाही दे उसे अपनाएं और जो बकवास लगे उसे नकारें। उन विषयों पर दिमाग खुला रखें जिन में सही-गलत का निर्णय करना मुश्किल हो। और सिर्फ अपने अन्त:करण की आवाज़ को सुनें कि वह अहिंसा, सत्य, धैर्य, आत्म-संयम, करुणा, बुद्धिमत्ता और नि:स्वार्थता के मूल सिद्धांतों की कसौटी पर क्या कहता है।

यह सही है कि रामायण, महाभारत, स्मृति, सूत्र और पुराण में नक़ली और बनावटी पद हैं। कुछ स्मृति, सूत्र और पुराण पूर्णतया नक़ली हैं – जो अज्ञानी, दुष्ट और चालबाज लोगों द्वारा लिखे गए हैं। उदाहरण के तौर पर – भविष्य पुराण में रानी विक्टोरिया और अकबर की स्तुति की गई है। ऐसा लगता है कि अंग्रेजों ने संस्कृत के पंडितों को पैसे देकर उनसे ऐसे पद या छंद बनवाये – जिनमें सन्डे, मन्डे के आलावा विक्टोरिया (विक्टावती) को अभी तक का महानतम शासक बताया गया है।

भारतवर्ष के विद्वान् युगों से कुछ पथभ्रष्ट लोगों के इन प्रयासों से अवगत रहे हैं, वे जानते थे कि ये लोग लोगों को उलझाने और भरमाने वाले जाली ग्रन्थ बना रहे हैं। उन्होंने अंतिम कसौटी निर्धारित की – वेद ही अंतिम प्रमाण हैं – इसके अतिरिक्त अन्य कुछ भी तभी स्वीकार किया जा सकता है जब वह वेदानुकूल हो। आप देख सकते हैं कि यह कसौटी – “श्रुति प्रमाण” – वेद ही अंतिम साक्ष्य हैं – प्रत्येक काल के ग्रंथों में दोहराई गई है।

और वेदों का जतन इस बारीकी से किया गया है कि उस में अक्षर, मात्रा, बिंदू, विसर्ग तक का भी बदल नहीं हो सकता।

महाभारत में इस बुरी तरह से प्रक्षेपण हुआ है कि एक अनुमान के अनुसार मौजूदा महाभारत, मूल महाभारत से दस गुणा अधिक है। कुछ बुद्धिमान लोगों ने महाभारत में यह लिख दिया है कि “ बदमाश, धूर्त लोग महाभारत में प्रक्षेपण कर रहे हैं, तथापि यह पता होना चाहिए कि मूल महाभारत मांस, शराब और व्यभिचार के पूर्णतया विरुद्ध है।”

कृष्ण जैसे नायक पर लम्पटता का आरोप लगाने के लिए – राधा का चरित्र कृष्ण के साथ जोड़ा गया – जिसका आधार एक और जाली ग्रन्थ ब्रह्म वैवर्त पुराण है। अन्य किसी भी

ग्रन्थ में राधा का नाम तक नहीं है। राधा का अर्थ है "सफलता की राह"। इतिहास के किसी काल में किसी ने कृष्ण की सफलता को मूर्ति में ढाल लिया और उसे राधा नाम दिया। इसे और अतिरंजित किया गया और कहानियां जुड़ीं, धार्मिक भावनाओं से मिश्रित रोमांस मसाला डाला गया और राधा-कृष्ण के प्रेम-प्रसंग का कल्पित संसार रच लिया गया। एक कहावत है कि जहां न पहुंचे रवि, वहां पहुंचे कवि! लेखकों और कवियों की कल्पनाओं का कोई पारावार नहीं है! और आज जब कि सारा इतिहास यही साक्ष्य देता है – कृष्ण अत्यंत आत्म-संयमी, क्रियाशील, शक्तिमान और बुद्धिमान व्यक्ति थे – उन्हें रसिक और छैले के रूप में पेश कर कलंकित किया गया।

रामायण में भी प्रचुरता से प्रक्षेपण किया गया है। सम्पूर्ण उत्तर रामायण – जिसमें सीता के निर्वासन और शम्बूक वध जैसी कथाएं हैं – पूरी तरह मनगढ़ंत है। संस्कृत की बुनियादी समझ रखने वाला कोई भी व्यक्ति भाषा से, लहजे से, शब्द शैली से और लेखन पद्धति से यह आसानी से पकड़ सकता है कि उत्तर रामायण – मूल रामायण के हजारों वर्ष पश्चात् बनाई गई है।

मूल रामायण के भी कई अंश प्रक्षेपित हैं - जैसे सीता की अग्निपरीक्षा - यदि संस्कृत के मूलपाठ को क्रम से पढ़ा जाए तो पता चलता है कि यह स्पष्ट मिलावट है। और गौर करें कि यह प्रक्षेपण कई हिन्दू विरोधी स्त्री आंदोलनों का आधार है!

यदि सत्य अपना लिया जाए तो कई साहित्य अकादमी और फिल्म सन्मान वापस बुलाने पड़ेंगे, कई हिन्दू विरोधी संस्थाएं अपना प्रयोजन खो बैठेंगी। कला की कई कृतियां – झूठ की कृतियां बन जाएंगी – क्योंकि हिन्दू धर्म की यह सारी आलोचना – कल्पना पर आधारित है। उनका अस्तित्व इन कल्पनाओं को सच के तौर पर प्रचारित करने में टिका हुआ है। (अच्छा ही हुआ कि जिनका जीवन अकारण ही – हिन्दू धर्म को कोसने में बीता है – वे अपना सन्मान वापस लौटा रहे हैं।)

तेरह सौ वर्षों के विदेशी आक्रमणों ने इस संभ्रम की स्थिति को और अधिक बढ़ाया है। और तब हिन्दू विरोधी विचारधारा द्वारा आलोचित हर एक बात का नेक नियत हिन्दू धर्म प्रेमियों ने बचाव करना शुरू कर दिया। दोनों ही पक्षों ने सिर्फ झूठ को बढ़ाया ही है, एक पक्ष कहता है कि राम खलनायक हैं क्योंकि उन्होंने वेदों का पाठ करने पर एक शूद्र (नीची जाति का व्यक्ति) का वध किया। दूसरा पक्ष नायक के रूप में राम का बचाव करते हुए इस वध के मूर्खतापूर्ण स्पष्टीकरण में - चमत्कार, त्रेता युग के अलग कानून, कुछ अभिशाप, वध के

पीछे का विज्ञान और राम द्वारा मारे जाने पर शूद्र की स्वर्ग प्राप्ति इत्यादि कारण देता है।

इसका परिणाम यह हुआ कि - दोनों पक्ष राम को हिन्दू धर्म के मानदण्ड के रूप में स्वीकारते हुए यह मानते हैं कि राम ने शूद्र का वध किया। अतः राम को एक अति क्रूर व्यक्ति बना दिया गया। अपने जुनून और पूर्वाग्रह के चलते इन दोनों पक्षों में से किसी भी पक्ष ने इस घटना की सत्यता को जांचना जरुरी नहीं समझा।

इस पागलपन ने युगों तक हिन्दूधर्म को दूषित और कलंकित किया और आज यह संकट-पूर्ण स्थिति का रूप ले चुका है। यदि हम अपने मूल आधारों को पुनःजीवित नहीं करेंगे और इन भ्रांतियों का उन्मूलन नहीं करेंगे तो हजारों वर्षों से हिन्दू धर्म के गर्भ में संरक्षित सम्पूर्ण पांडित्य नष्ट हो जाएगा। निरर्थक भौतिकवाद और मतान्ध आतंकवाद के इस युग में यह और भी विकट हो गया है।

हिन्दू धर्म पर लगने वाले तीसरे वर्ग के आरोपों में वैदिक मन्त्रों के अनुवाद हैं – जो जाति-आधारित द्वेष, लिंग भेद, अश्लीलता, शराब, गौमांस इत्यादि के रूप में हैं। ऑनलाइन मंच पर यह बहुत आसान हो गया है कि वेदों के किसी मन्त्र का हवाला देते हुए – किन्हीं धार्मिक ग्रन्थ.कॉम का सन्दर्भ दिया जाए और एक मूर्खतापूर्ण, बेहूदा और बेतुका अनुवाद प्रस्तुत कर – वेदों उर्फ़ हिन्दू धर्म को बकवास करार दिया जाए।

जब से अग्निवीर के प्रयत्नों ने हिन्दू धर्म द्वेषियों को वेदों के आलावा अन्य किसी भी ग्रन्थ का सन्दर्भ देने से मना करते हुए – उन्हें घेर लिया है, तब से यह तरीका और भी ज्यादा प्रचलित हो गया है।

इस तरीके में दिक्कत यह है कि सारे अनुवाद पूर्णतया आधारहीन हैं। इन अनुवादों के लेखक कोई मैक्समूलर, ग्रिफ़िथ या कोई मोनिअर विलियम्स हैं। यदि आप इन लोगों के अन्य कार्यों की समीक्षा करें तो आपको इन अनुवादों में मूर्खता और विसंगतियों के होने का स्पष्ट कारण पता चलेगा – यह सब ब्रिटिश काल के वेतनभोगी ब्रिटिश कर्मचारी थे जिनका स्पष्ट उद्देश्य – हिन्दू धर्म को नीचा दिखाना था। मोनिअर स्पष्टता से लिखता है कि उसका एजेंडा भारत में 'ज़ीसस' का प्रचार करना है। इन में से कईयों के अनुवाद सायण जैसे मध्ययुगीन विद्वानों के कार्य पर आधारित हैं – जिनका कार्यकाल इस्लामिक आक्रमण का काल रहा है।

अग्निवीर ने ध्यानपूर्वक प्रत्येक वेद मन्त्र का अध्ययन किया, हर एक आक्षेप को गौर से देखा और उन सभी आक्षेपों को निरर्थक ही पाया। कुछ वर्षों पूर्व हम यह खुली चुनौती दे चुके हैं

कि वेदों के बीस हजार से भी अधिक मन्त्रों में से कुछ भी आपत्तिजनक निकाल कर दिखाएं और आज तक हम निर्विरोध खड़े हैं।

हम आशा करते हैं कि यह पुस्तक मानवजाति के विस्मृत "मूल दर्शन" को विश्व के सामने लाएगी। भौतिकवाद की अंधी दौड़ और असहिष्णुता के इस उन्मादी काल में – यह समय की पुकार है। आशा है कि आप मानवता के स्रोत – हिन्दू धर्म से नई प्रेरणा प्राप्त करेंगे।

कृपया ध्यान दें कि इस पुस्तक से प्राप्त होने वाली धन-राशि का उपयोग सच्चे हिन्दुत्व के रक्षण में होगा। मानवता की इस सेवा में आप हमारा साथ दे सकते हैं – अपने मित्रों, परिवार के सदस्यों और परिचितों के साथ इसे साझा करें, वितरित करें, उपहार में दें, इसकी सिफारिश करें। आपकी समीक्षाओं और संस्तुतियों का स्वागत है।

धर्मो रक्षति रक्षित:

धर्म (सत्य) का रक्षण और पोषण किया जाना चाहिए – तभी वह आपका रक्षण और पोषण करेगा।

मृदुला

विषय सूची

भाग १: जाति-प्रथा की सच्चाई

अध्याय १

जाति-प्रथा की सच्चाई

केवल वही “नीची जाति” का है जो औरों को नीचा समझता है।

- अग्निवीर

यह अध्याय मुख्य: रूप से उस विचारधारा के लोगों पर केन्द्रित है जो जन्म आधारित जातिगत भेदभाव का पक्ष लेते हैं। इसीलिए सभी लोगों से प्रार्थना है कि हमारी समीक्षा को केवल इस घृणास्पद प्रथा और ऐसी घृणास्पद प्रथा के सरंक्षक, पोषक और समर्थकों के सन्दर्भ में देखा जाए न कि किसी व्यक्ति, समाज और जाति के सन्दर्भ में। अग्निवीर हर किस्म के जातिवाद को आतंकवाद का सबसे ख़राब और घृणित रूप मानता है और ऐसी घृणास्पद प्रथा के सरंक्षक, पोषक और समर्थकों को दस्यु। बाकी हम सब लोग, चाहे वो इंसान के द्वारा स्वार्थवश बनाई गयी तथाकथित छोटी जाति या ऊंची जाति का हो, एक परिवार, एक जाति, एक नस्ल के ही हैं। हम अपने पाठकों से निवेदन करते हैं कि वो ये न समझें कि यह अध्याय वैदिक विचारधारा “वसुधैव कुटुम्बक-म्” के विपरीत किसी व्यक्ति या वर्ग विशेष के लिए लिखा गया है।

जाति-प्रथा से जुड़े हुए कुछ ऐसे तथ्य जिनके बारे में हमें पता होना चाहिए और जिनके बारे में हम सोचें:

ब्राह्मण कौन है?

जाति-प्रथा के बारे में सबसे हँसी की बात ये है कि जन्म आधारित जातिप्रथा अस्पष्ट और निराधार कथाओं पर आधारित हैं। आज ऐसा कोई भी तरीका मौजूद नहीं जिससे इस बात का पता चल सके कि आज के तथाकथित ब्राह्मणों के पूर्वज भी वास्तविक ब्राह्मण ही थे। विभिन्न गोत्र और ऋषि नाम को जोड़ने के बाद भी आज कोई भी तरीका मौजूद नहीं है जिससे कि उनके दावे की परख की जा सके।

अगर हम ये कहें कि आज का ब्राह्मण(जाति/जन्म आधारित) शूद्र से भी ख़राब है क्योंकि ब्राह्मण १००० साल पहले चांडाल के घर में पैदा हुआ था, हमारे इस दावे को नकारने का साहस कोई भला कैसे कर सकता है? अगर आप ये कहें कि ये ब्राह्मण परिवार भरद्वाज गोत्र का है तो हम इस दावे की परख के लिए उसके डी।एन।ए परीक्षण (DNA Test) की मांग करेंगे। और किसी डी।एन।ए परीक्षण के अभाव में तथाकथित ऊँची जाति का दावा करना कुछ और नहीं मानसिक दिवालियापन और खोखला दावा ही है।

क्षत्रिय कौन है?

ऐसा माना जाता है कि परशुराम ने जमीन से कई बार सभी क्षत्रियों का सफाया कर डाला था। स्वाभाविक तौर पर इसीलिए आज के क्षत्रिय और कुछ भी हों पर जन्म के क्षत्रिय नहीं हो सकते!

अगर हम राजपूतों की वंशावली देखें तो ये सभी इन तीन वंशों से सम्बन्ध रखने का दावा करते हैं १। सूर्यवंशी जो कि सूर्य या सूरज से निकले, २। चंद्रवंशी जो कि चंद्रमा या चाँद से निकले और ३। अग्निकुल जो कि अग्नि से निकले। बहुत ही सीधी सी बात है कि इन में से कोई भी सूर्य या सूरज, चंद्रमा या चाँद से जमीन पर नहीं आया। अग्निकुल विचार की उत्पत्ति भी अभी-अभी ही की है। किंवदंतियों-कहानियों के हिसाब से अग्निकुल की उत्पत्ति या जन्म आग से उस समय हुआ जब परशुराम ने सभी क्षत्रियों या राजपूतों का धरती से सफाया कर दिया था। बहुत से राजपूत वंशों में आज भी ऐसा शक या भ्रम है कि उनकी उत्पत्ति या जन्म; सूर्यवंशी, चंद्रवंशी, या अग्निकुल इन वंशो में से किस वंश से हुई है।

स्वाभाविक तौर से इन दंतकथाओं का जिक्र या वर्णन किसी भी प्राचीन वैदिक पुस्तक या

ग्रन्थ में नही मिलता। जिसका सीधा-सीधा मतलब ये हुआ कि जिन लोगों ने शौर्य या सेना का पेशा अपनाया वो लोग ही समय-समय पर राजपूत के नाम से जाने गए।

ऊँची जाति के लोग चांडाल हो सकते हैं

अगर तथाकथित ऊँची जाति के लोग ये दावा कर सकते हैं कि दूसरे आदमी तथाकथित छोटी जाति के हैं तो हम भी ये दावा कर सकते हैं कि ये तथाकथित छोटी जाति के लोग ही असली ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य हैं। और ये ऊँची जाति के लोग असल में चांडालों की औलादें हैं जिन्होंने शताब्दियों पहले सत्ता पर कब्ज़ा कर लिया था और सारा इतिहास मिटा या बदल दिया था। आज के उपलब्ध इतिहास को अगर हम इन कुछ तथाकथित ऊँची जाति के लोगों की उत्पत्ति या जन्म की चमत्कारी कहानियों के सन्दर्भ में देखें तो हमारे दावे की और भी पुष्टि हो जाती है।

अब अगर किसी जन्मगत ब्राह्मण वादी को हमारी ऊपर लिखी बातों से बेईज्ज़ती महसूस होती है तो उसका भी किसी आदमी को तथाकथित छोटी जाति का कहना अगर ज्यादा नहीं तो कम बेईज्ज़ती की बात नहीं है।

हम लोगों में से म्लेच्छ कौन है?

इतिहास से साफ़ साफ़ पता लगता है कि यूनानी, हूण, शक, मंगोल आदि इनके सत्ता पर काबिज़ होने के समय में भारतीय समाज में सम्मिलित होते रहे हैं। इन में से कुछों ने तो लम्बे समय तक भारत के कुछ हिस्सों पर राज भी किया है और इसीलिए आज ये बता पाना बहुत मुश्किल है कि हम में से कौन यूनानी, हूण, शक, मंगोल आदि-आदि हैं!

ये सारी बातें वैदिक विचारधारा - एक मानवता - एक जाति से पूरी तरह से मेल खाती है लेकिन जन्म आधारित जातिप्रथा को पूरी तरह से उखाड़ देती हैं क्योंकि उन लोगों के लिए म्लेच्छ इन तथाकथित चार जातियों से भी निम्न हैं।

जाति निर्धारण के तरीके की खोज में

आप ये बात तो भूल ही जाओ कि क्या वेदों ने जातिप्रथा को सहारा दिया है या फिर नकारा है? ये सारी बातें दूसरे दर्जे की हैं। जैसा कि हम सब देख चुके हैं कि असल में “वेद” तो जन्म आधारित जातिप्रथा और लिंग भेद के ख्याल के ही खिलाफ हैं। इन सारी बातों से भी ज्यादा जरूरी बात ये है कि हमारे में से किसी के पास भी ऐसा कोई तरीका नहीं है कि हम सिर्फ वंशावली के आधार पर ये निश्चित कर सकें कि वेदों कि उत्पत्ति के समय से हम में से

कौन ऊँची जाति का है और कौन नीची जाति का। अगर हम लोगों के स्वयं घोषित और खोखले दावों की बातों को छोड़ दें तो किसी भी व्यक्ति के जाति के दावों को विचारणीय रूप से देखने का कोई भी कारण हमारे पास नहीं है।

इसलिए अगर वेद जन्म आधारित जातिप्रथा को उचित मानते तो वेदों में हमें किसी व्यक्ति की जाति निर्धारण करने का भरोसेमंद तरीका भी मिलना चाहिए था। ऐसे किसी भरोसेमंद तरीके की गैरहाजिरी में जन्म आधारित जातिप्रथा के दावे औंधे मुंह गिर पड़ते हैं।

इसी वज़ह से ज्यादा से ज्यादा कोई भी आदमी सिर्फ ये बहस कर सकता है कि हो सकता है की वेदों की उत्पत्ति के समय पर जातिप्रथा प्रासांगिक रही हो, पर आज की तारीख में जातिप्रथा का कोई भी मतलब नहीं रह जाता।

हालाँकि हमारा विचार ये है - जो कि सिर्फ वैदिक विचारधारा और तर्क पर आधारित है - जातिप्रथा कभी भी प्रासंगिक रही ही नहीं और जातिप्रथा वैदिक विचारधारा को बिगाड़ कर दिखाया जाना वाला रूप है। और ये विकृति हमारे समाज की सबसे महंगी विकृति साबित हुई जिसने कि हमसे हमारा सारा का सारा गर्व, शक्ति और भविष्य छीन लिया है।

नाम में क्या रखा है?

कृपया ये बात भी ध्यान में रखें की गोत्र प्रयोग करने की प्रथा सिर्फ कुछ ही शताब्दियों पुरानी है। आपको किसी भी प्राचीन साहित्य में 'राम सूर्यवंशी' और 'कृष्ण यादव' जैसे शब्द नहीं मिलेंगे। आज के समय में भी एक बहुत बड़ी गिनती के लोगों ने अपने गाँव, पेशा और शहर के ऊपर अपना गोत्र रख लिया है। दक्षिण भारत के लोग मूलत: अपने पिता के नाम के साथ अपने गाँव आदि का नाम प्रयोग करते हैं। आज की तारीख में शायद ही ऐसे कोई गोत्र हैं जो वेदों की उत्पत्ति के समय से चले आ रहे हों।

प्राचीन समाज गोत्र के प्रयोग को हमेशा ही हतोत्साहित किया करता था। उस समय लोगों की इज्ज़त सिर्फ उनके गुण, कर्म और स्वाभाव को देखकर की जाती थी न कि उनकी जन्म लेने की मोहर पर। ना तो लोगों को किसी जाति प्रमाण पत्र की जरूरत थी और ना ही लोगों का दूर दराज़ की जगहों पर जाने में मनाही थी जैसा कि हिन्दुओं के दुर्भाग्य के दिनों में हुआ करता था। इसीलिए किसी की जाति की पुष्टि करने के लिए किसी के पास कोई भी तरीका ही नहीं था। किसी आदमी की प्रतिभा या उसके गुण ही उसकी एकमात्र जाति हुआ करती थी। हाँ ये भी सच है कि कुछ स्वार्थी लोगों की वज़ह से समय के साथ साथ विकृतियाँ आती चली गयीं। और आज हम देखते हैं कि राजनीति और बॉलीवुड भी जातिगत हो चुके हैं।

और इसमें कोई भी शक की गुंजाईश नहीं है कि स्वार्थी लोगों की वज़ह से ही दुष्टता से भरी इस जातिप्रथा को मजबूती मिली। इन सबके बावजूद जातिप्रथा की नींव और पुष्टि हमेशा से ही पूर्णरूप से गलत रही है।

अगर कोई भी ये दावा करता है कि शर्मा ब्राहमणों के द्वारा प्रयोग किया जाने वाला गोत्र है, तो यह विवादास्पद है क्योंकि महाभारत और रामायण के काल में लोग इसका अनिवार्य रूप से प्रयोग करते थे, इस बात का कोई प्रमाण नहीं। तो हम ज्यादा से ज्यादा ये मान सकते हैं कि हम किसी को भी शर्मा ब्राह्मण सिर्फ इसीलिए मानते हैं क्योंकि वो लोग शर्मा ब्राह्मण गोत्र का प्रयोग करते हैं। ये भी हो सकता है कि उसके दादा और पड़दादा ने भी शर्मा ब्राह्मण गोत्र का प्रयोग किया हो। लेकिन अगर एक चांडाल भी शर्मा ब्राह्मण गोत्र का प्रयोग करने लगता है और उसकी औलादें भी ऐसा ही करती हैं तो फिर आप ये कैसे बता सकते हो कि वो आदमी चांडाल है या फिर ब्राह्मण? आपको सिर्फ और सिर्फ हमारे दावों पर ही भरोसा करना पड़ेगा। कोई भी तथाकथित जातिगत ब्राह्मण यह बात नहीं करता कि वो असल में एक चांडाल के वंश से भी हो सकता है, क्योंकि सिर्फ ब्राहमण होने से उसे इतने विशेष अधिकार और खास फायदे मिले हुए हैं।

मध्य युग के बाहरी हमले

पश्चिम और मध्य एशिया के उन्मादी कबीलों के द्वारा हजार साल के हमलों से शहरों के शहरों ने बलात्कार का मंज़र देखा। भारत के इस सबसे काले और अन्धकार भरे काल में स्त्रियाँ ही हमेशा से हमलों का मुख्य निशाना रही हैं। जब भी कासिम, तैमूर, ग़ज़नी और गौरी जैसे लुटेरों ने हमला किया तो इन्होंने ये सुनिश्चित किया कि एक भी घर ऐसा ना हो की जिसकी स्त्रियों का उसके सिपाहियों ने बलात्कार ना किया हो। खुद दिल्ली को ही कई बार लूटा और बर्बाद किया गया। उत्तर और पश्चमी भारत का मध्य एशिया से आने वाला रास्ता इस अत्याचार को सदियों से झेलता रहा है। भगवान् करे कि ऐसे बुरे दिन किसी भी समाज को ना देखने पड़ें। लेकिन हमारे पूर्वजों ने तो इसके साक्षात् दर्शन किये हैं। अब आप ही बताइए कि ऐसे पीड़ित व्यक्तियों के बच्चों को तथाकथित जातिप्रथा के हिसाब से "जाति से बहिष्कृत" लोगों के सिवाय और क्या नाम दे सकते हैं? लेकिन तसल्ली कि बात ये है कि ऐसी कोई बात नहीं है।

हमारे ऋषियों को ये पता था कि विषम हालातों में स्त्रियाँ ही ज्यादा असुरक्षित होती हैं। इसीलिए उन्होंने "मनु स्मृति" में कहा कि "एक स्त्री चाहे कितनी भी पतित हो, अगर

उसका पति उत्कृष्ट है तो वो भी उत्कृष्ट बन सकती है। लेकिन पति को हमेशा ही ये सुनिश्चित करना चाहिए कि वो पतित ना हो।

ये ही वो आदेश था जिसने पुरुषों को स्त्रियों की गरिमा की रक्षा करने के लिए प्रेरित किया और भगवान ना करे, अगर फिर से कुछ ऐसा होता है तो पुरुष फिर से ऐसी स्त्री को अपना लेंगे और अपने एक नए जीवन की शुरुआत करेंगे। विधवाएं दुबारा से शादी करेंगी और बलात्कार की शिकार पीड़ित स्त्रियों का घर बस पायेगा। अगर ऐसा ना हुआ होता तो हम-लावरों के कुछ हमलों के बाद से हम "जाति से बहिष्कृत" लोगों का समाज बन चुके होते।

निश्चित तौर से, उसके बाद वाले काल में स्त्री गरिमा और धर्म के नाम पर विधवा और बलात्कार की शिकार स्त्रियों के पास सिर्फ मौत, यातना और वेश्यावृति का ही रास्ता बचा। इस बेवकूफी ने हमें पहले से भी ज्यादा नपुंसक बना दिया।

कुछ जन्म आधारित तथाकथित ऊँची-जातियों के ठेकेदार इस बात को उचित ठहरा सकते हैं कि बलात्कार की शिकार स्त्रियाँ ही "जाति से बहिष्कृत" हो जाती हैं। अगर ऐसा है तो हम सिर्फ इतना ही कहेंगे कि ये विकृति की हद है।

जाति व्यवस्था में हिंदू कुछ भी नहीं है। यह तो वह सामाजिक प्रणाली है जो हमारे पूर्वजों के सम्मुख उपस्थित चुनौतियों की उपज है।

हां, अपने पूर्वजों का गौरव एक उत्कृष्ट विचार है। हमें अपने पूर्वजों पर तथा उनके योगदान पर गौरवान्वित होना ही चाहिए, आज हम जो भी हैं वह उनके सत्कर्मों के कारण हैं। पूर्वजों के प्रति यह गौरव ही 'पितृ ऋण' है। परंतु इस गौरव के लिए आगे का मार्ग यह हो कि हम अपने श्रेष्ठ कर्मों के नए कीर्तिमान स्थापित करें, न कि किसी की वंश परंपरा को लेकर उसका उपहास उड़ाएं।

अध्याय २

जाति-प्रथा और सात शिक्षाएँ

व्यक्ति जन्म से नहीं अपने कर्म से जाना जाता है।

- अग्निवीर

इस अध्याय में हम देखेंगे कि जाति-प्रथा क्या है?

जाति-प्रथा एक बकवास विचार है

जाति-प्रथा का कोई भी और किसी भी तरह का वैदिक आधार नहीं है।

हर एक आदमी की चारों जातियां होती हैं

हर एक आदमी में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चारों खूबियाँ होती हैं। और समझने की आसानी के लिए हम एक आदमी को उसके ख़ास पेशे से जोड़कर देख सकते हैं। हालाँकि जाति-प्रथा आज के दौर और सामाजिक ढांचे में अपनी प्रासंगिकता पहले से ज्यादा खो चुकी है। यजुर्वेद (३२।१६) में भगवान् से आदमी ने प्रार्थना की है की "हे ईश्वर, आप मेरी ब्राहमण और क्षत्रिय योग्यताएं बहुत ही अच्छी कर दो"। इससे यह साबित होता है

कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि शब्द असल में गुणों को प्रकट करते हैं न कि किसी आदमी को। तो इससे यह सिद्ध हुआ कि किसी व्यक्ति को शूद्र बता कर उससे घटिया व्यवहार करना वेद विरुद्ध है।

निर्णय करने का कोई तरीका नहीं

आज की तारीख में किसी के पास ऐसा कोई तरीका नहीं है कि जिससे ये फैसला हो सके कि क्या पिछले कई हज़ारों सालों से तथाकथित ऊँची जाति के लोग ऊँचे ही रहे हैं और तथाकथित नीची जाति के लोग तथाकथित नीची जाति के ही रहे हैं!

ये सारी की सारी ऊँची और नीची जाति की कोरी धोखेबाजी वाली कहानियां-गपोडे कुछ लोगों की खुद की राय और पिछली कुछ पीढ़ियों के खोखले सबूतों पर आधारित हैं। हम और आप ये बात भी जानते हैं कि आज की जाति-प्रथा में कमी की वजह से ही कुछ मक्कार और धोखेबाज लोग ऊँची जाति का झूठा प्रमाणपत्र लेकर बाकी जनता को बेवकूफ बना सकते हैं। इसके बिलकुल उलट आज की जाति-प्रथा में नकली तथाकथित ऊँची जाति के लोगों को ये प्रेरणा देने के लिए कोई भी व्यवस्था नहीं है जिससे कि ये लोग मान लें कि ये लोग असल में किसी चांडाल परिवार से रिश्ता रखते हैं क्योंकि ऐसा करने से इनका समाज में विशेष अधिकार और ओहदा मिट्टी में मिल जायेगा। इसीलिए जाति-प्रथा के जिन्दा रहने से कुछ मक्कार और धोखेबाज लोग हमेशा ही शरीफ लोगों को दुःख और कष्ट ही देंगे। और इसकी तो और भी बहुत ज्यादा सम्भावना है कि आज की तथाकथित नीची जाति से पहचाने जाने वाले लोग ही हकीकत में ऊँची जाति के लोग हैं जिन्हें कि असली नीची जाति के लोगों ने ठगा है। आखिरकार जाति- प्रथा कुछ और नहीं बल्कि लोगों को धोखा देने का सिर्फ एक लालच मात्र है।

लक्षण तो खानदानी माहौल से भी मिल सकते हैं लेकिन?

हद से हद कोई सिर्फ ये कह सकता है कि जन्म के समय के माहौल की वज़ह से कुछ एक परिवारों में कुछ लक्षण प्रभावी रूप से दिखाई देते हैं। इसी तरह से लोग अपना-अपना पेशा भी पीढ़ियों से करते आये हैं। और इसमें कोई बुराई भी नहीं है। लेकिन इसका मतलब ये बिल्कुल भी नहीं है कि एक डॉक्टर का बेटा सिर्फ इसलिए डॉक्टर कहलायेगा क्योंकि वो एक डॉक्टर के घर में पैदा हुआ है। अगर उसे डॉक्टर की उपाधि अपने नाम से जोड़नी है तो उसे सबसे पहले तो बड़ा होना पड़ेगा, फिर इम्तिहान देकर एम बी बी एस बनना ही पड़ेगा।यही बात सभी पेशों, व्यवसायों और वर्णों पर भी लागू होती है।

लेकिन इसका मतलब कोई ये भी न समझे कि एक आदमी डॉक्टर सिर्फ इसीलिए नहीं बन सकता क्योंकि उसके पिता मजदूर थे। ईश्वर का शुक्र है कि ऐसा कुछ भी समाज में देखने के लिए नहीं मिलता। नहीं तो आज ये पूरी दुनिया नरक से भी बदतर बन जाती। अगर इतिहास की किताबों को उठाकर देखें तो पता चलेगा कि आखिरकार जिन भी महान लोगों ने इस दुनिया को अपने ज्ञान, खोज, तदबीर और आविष्कार और अगुवाई से गढ़ा है वो लोग पूरी तरह से अपने खानदान की परम्पराओं के खिलाफ गए हैं।

जाति-प्रथा ने हमें सिर्फ बर्बाद ही किया है

जब से हमारे भारत देश ने इस जात-पात को गंभीरता से लेना शुरू किया है तब से हमारा देश दुनिया को राह दिखाने वाले दर्जे से निकलकर सिर्फ दुनिया का सबसे बड़ा कर्जदार और भिखारी देश बनकर रह गया है। और पश्चिमी दुनिया के देश इसीलिए इतनी तरक्की कर पाए क्योंकि उन्होंने अपनी बहुत सी कमियों के बावजूद सभी आदमियों को सिर्फ उनकी पैदाइश को पैमाना न बनाकर और पैदाइश की परवाह किये बगैर इंसान की इज्ज़त के मामले में बराबरी का हक़ और दर्जा दिया। इसी शैतानी जात-पात के चलते न सिर्फ हमने सदियों तक क़त्ल-ए-आम और बलात्कार को सहा है पर मातृभूमि के खूनी और दर्दनाक बंटवारे को भी सहा है। अब कोई हमसे ये पूछने की गुस्ताखी हर्गिज न करे कि इस शैतानी जात-पात के फायदे और नुकसान क्या हैं?

हाँ ये जरूर है कि पिछले कुछ समय में जब से इस शैतानी जात-पात की पकड़ काफी कम हुई है तो हमने राहत की एक सांस ली है। आप एक बात और समझ लें कि जहाँ भी इस शैतानी जात-पात का सरदर्द बना हुआ है उसकी एक बहुत बड़ी वज़ह है इस जात-पात का राजनीतिकरण। और इस राजनीतिकरण के गोरखधंधे और मक्कारी वाली दुकानदारी के बंद न होने लिए हम सब जिम्मेवार इसीलिए हैं कि हम सब खुद से आगे बढ़कर उन सब रस्मों, किताबों और रीति-रिवाजों, जो जन्म आधारित जाति-पाति को मानते हैं, को कूड़ा करकट जैसी गंदगी समझकर कूड़ेदान में नहीं डालते बल्कि इस गन्दगी को अपने समाज रुपी जिस्म पर लपेटे हुए हैं। लानत है उन सब लोगों पर जो इस शैतानी जात-पात को ख़त्म करने के लिए आगे नहीं आते।

जातिवादी दिमाग का उल्टा - नकारात्मक योगदान

अगर किसी भी जातिवादी दिमाग वाले आदमी से पूछा जाए कि वो पिछले १००० सालों में किसी भी जातिवादी दिमाग का कोई महत्वपूर्ण योगदान गिनवा दे, तो या तो वो आदमी

बगलें झाँकने लगेगा या फिर उसकी आँखों के सामने अन्धकार छा जाएगा और फिर आखिर में उसे कोई जवाब ही नहीं सूझेगा। ये भी हो सकता है कि कोई जातिवादी दिमाग वाला आदमी कुछ एक पागलपन और खुद की गढ़ी हुई साजिशों से भरपूर बिना सिर पैर वाली कहानियां सुना कर आपका हल्का सा मनोरंजन भी कर दे। लेकिन मन को दुखी करने वाली और कड़वी सच्चाई ये है कि बकवास, बेवकूफाना और जिल्लत से भरे अंधविश्वास, सिद्धांतों और रस्मों के अलावा इन सब धर्म नगरियों के पेटू पंडो और पाक मजारों के मालिकों ने, जिन्हें ईश्वर ने खूब माल और धन दौलत दिया है कुछ भी आज तक ऐसा नहीं किया जो कि गिनती करने के भी लायक हो। (पद्मनाभन मंदिर से मिले धन-दौलत कि बात देख लें। अग्निवीर के मन में बार-बार ये विचार आता है कि कितना अच्छा होता अगर ये धन-दौलत इस देश पर हजारों सालों से हमला करने वालों का मुंहतोड़ जवाब देने के लिए या फिर इस देश को ऐसा बनाने में लगाया जाता कि यहाँ पर सिर्फ और सिर्फ लायक लोगों की ही इज्ज़त होती।)

वो सारे तथाकथित म्लेछ – आइन्स्टीन, न्यूटन और फैराडे जैसे लोग और दूसरे अनगिनत पश्चिमी लोग जिन्होंने दुनिया को नयी राह दिखाई है, इन सब जन्मजात तथाकथित पंडितों से जो कि बड़ी ही बेशर्मी से अपने पैदा होने में भी भगवान की प्रेरणा के साथ-साथ बड़ी ही मक्कारी और धूर्तता के साथ श्री हरी की विशेष कृपा और दया होने का खोखला दावा करते हैं, ज्यादा शुद्ध और पवित्र मन, विचार और कर्म करने वाले हैं। केवल इतना ही फर्क है कि पिछले ३०० सालों में पश्चिमी सभ्यता के लोगों ने बाइबिल की अनैतिक और विज्ञान विरुद्ध बातों को एक सिरे से खारिज कर दिया है और लगातार समाज के सभी वर्गों को बराबरी का हक़ दिया है। हम इसी निष्कर्ष के साथ ये वाली बात ख़त्म करना चाहेंगे कि एक जातिवादी रहित म्लेच्छ का दिमाग (जिसे कि इन भोंदू, मूर्ख और स्वयम् घोषित ब्राह्मणों ने शूद्र से भी खराब माना है) इन सारे के सारे तथाकथित ब्राह्मणों के ईश्वरीय प्रेरित दिमाग से हज़ारों गुणा ज्यादा बढ़िया बुद्धिमान है। इस बात से ये भी साबित हो जाता है कि ये सारे के सारे ईश्वर के मुंह से पैदा होने का दावा करने वाले जन्म से 'ब्राह्मण' सिर्फ मुंगेरीलाल और तीसमारखां से बढ़कर दूसरे कारनामे नहीं कर सकते। हाँ, इस देश और समाज को बर्बाद और जात-पात से कलंकित करने में तन, मन और धन से अपने योगदान दे सकते हैं।

अग्निवीर उन सब तथाकथित और स्वयम्-घोषित (अपने मुंह मियां मिट्ठू) लोगों को खुले तौर पर ललकारता है कि जो भी लोग ये दावा करते हैं कि ऊँची जाति के लोग ज्यादा लायक होते हैं वो सभी हम पर ये बताने का एहसान करें और सबूत दें कि पिछले ३०० सालों के

इतिहास में उनकी अद्भुत लायिकी ने कौन सी महान खोज की है। उनके सबूत देने पर ही उनकी बात को गंभीरता से लिया जाएगा नहीं तो अक्लमंद आदमी की तरह उन्हें भी ये मानना होगा कि जाति-पाति एक बुराई है और वेदों के खिलाफ है। उन्हें अग्निवीर कि तरह से ये भी कसम खानी होगी और हुंकार भरनी होगी कि अब जाति-पाति के जहरीले पेड़ को जड़ से उखाड़कर ही दम लेंगे और फिर एक जात-पात रहित भारत का निर्माण करेंगे।

ये बात भी याद रहे कि कुछ एक वैज्ञानिक जैसे कि रमण और चंद्रशेखर का नाम इन बारे में यहाँ लेना बहुत बड़ी बेवकूफी की बात होगी क्योंकि सभी अक्लमंद लोगों को ये पता है कि इन महान आत्माओं ने जो भी किया वो सब म्लेच्छों की किताबों को अपनाकर और पढ़कर ही पाया है न कि तथाकथित और स्वयम्-घोषित (अपने मुंह मियां मिट्ठू) निरे निपट, कोरे और बंजर दिमाग वाले तथाकथित ऊँची जाति के लोगों के पोथे पढ़ कर। न केवल रमण और चंद्रशेखर ने जो भी किया वो सब म्लेच्छों की किताबों को अपनाकर और पढ़कर ही पाया है बल्कि इनकी सिद्ध की हुई बातों को सिर्फ और सिर्फ पश्चिमी 'म्लेच्छों' ने ही माना और सराहा है।

बुद्धिमान लोगों को तो इन जातिवादी शिक्षा के गढ़ों; काशी, कांची, तिरुपति आदि के सारे पाखंडी, मक्कार, धूर्त जातिवादियों से ये सवाल करना चाहिए कि ये सब बताएं कि उस गुप्त ज्ञान से जो इन्हें इनका महान और दैवीय जन्म होने से भगवान से तोहफे में मिला था इन्होंने कौन सी महत्वपूर्ण खोज भारत देश और समाज को दी है? इन जात-पात के लम्पट ठेकेदारों ने इन सब विश्वप्रसिद्ध संस्थानों की महान वैज्ञानिक परंपरा का स्तर मिट्टी में मिलाकर अपने घटिया किस्म के हथकंडे, तिकड़मबाज़ी और चालबाजी से इन्हें अपनी दक्षिणा का अड्डा बनाकर छोड़ दिया है। इस "महान" योगदान के अलावा इन "महान" वेज्ञानिकों का योगदान देश निर्माण में जीरो – शून्य ही रहा है। हालाँकि इन्हीं तीर्थ स्थानों से ऐसे महापुरुष भी निकले हैं जो जातिवाद के विरुद्ध बिगुल बजाकर हमारे आदर्श बन चुके हैं। उनके विषय में यहाँ बात नहीं हो रही।

और ये भी याद रखें कि एक गैर-जातिवादी म्लेच्छ योद्धा और लड़ाकू वीर एक जातिवादी क्षत्रिय से कहीं ज्यादा वीर और शक्तिशाली हैं। यही कारण था कि हम शूरवीर और पता नहीं क्या-क्या दावे करने वाले राजपूतों के बावजूद हमें हजारों सालों तक उन लोगों ने गुलाम बनाकर रखा जिन्हें गुलामों के गुलाम माना जाता था (देखें गुलाम राजवंश)। हमें लड़ाई के मैदान में गजब बहादुरी दिखाने के बाद भी मजबूरी में अपनी बेटियों कि शादी अकबर जैसे मानसिक रोगी से करनी पड़ी थी। इन तथाकथित वैदिक विद्वानों और

भगवान के द्वारा बनाये गए वीर राजपूतों के होते हुए काशी विश्वनाथ को एक कुँए में छुपकर शरण लेनी पड़ी थी। और गजिनी का सोमनाथ के मंदिर में हमारी माता-बहिनों का जबरन सामूहिक बलात्कार हम कैसे भूल सकते हैं। इन सारी उपलब्धियों के लिए हमें जन्म आधारित जाति-प्रथा को ही धन्यवाद देना चाहिए जिसने सिर्फ कुछ गिने-चुने परिवारों को ही लड़ाई के गुर सीखने का हक़ दिया। इतना ही नहीं इन लोगों ने उसके बाद ये भी घोषणा कर दी कि जातिवादी क्षत्रिय सिर्फ उस समय तक हिन्दू रहने का अधिकारी है कि जब तक कोई म्लेच्छ उसे छू नहीं लेता और अगर किसी कोई म्लेच्छ भूल से भी उसे छू लेता है तो जातिवादी क्षत्रिय उसी समय हिन्दू धर्म से बाहर हो जाएगा।

निष्पक्ष सोचने से पता चलेगा कि हमसे कहीं कम गुणी अंग्रेज सिर्फ हम पर ही नहीं लगभग आधी दुनिया पर केवल इसी वज़ह से राज कर पाए कि उन्होंने अपने समाज के अन्दर नकली और घटिया भेदभाव को बिलकुल नकार दिया और और वो हमारे ढोंगी पंडो जैसे लोगों के चक्कर में नहीं पड़े।

लेकिन ये बात निर्विविद रूप से सच है कि भारत देश ने सदियों से एक से बढ़कर एक उत्तम 'गुलाम' और 'शूद्र' (अज्ञानी) पैदा किये हैं। अगर कुछ एक विद्रोही अपवादों की बात छोड़ दें तो, एक समाज के तौर पर, हमारे ब्राहमण, क्षत्रिय और वैश्य होने के बड़े-बड़े दावों के बावजूद हम हमारे विदेशी और विधर्मी शासकों, चाहे जिसने भी हम पर राज किया हो, के जूते चाटते और चापलूसी करते रहे हैं। हमने अपने आकाओं की नौकरी-चाकरी करने में हमेशा अपनी शान समझी है। मुग़ल सेनाएं मुख्य: रूप से राजपूत वीर और सेनापतियों से बनी हुई थीं। हल्दी-घाटी की लड़ाई में वो राजपूती सेनाएं ही थीं जो वीर प्रताप को हराने की कोशिशें कर रही थीं। इसी तरह से ज्यादातर लड़ाईयां जो वीर शिवाजी महाराज ने लड़ीं वो उन तथाकथित राजपूतों और मराठों के खिलाफ थीं जो मुग़ल सल्तनत के जूते चाटने में महारथी थे।

इसीलिए वो सभी लोग जो ऊँची जाति का होने का दावा करते हैं और जन्म आधारित जाति-प्रथा को जायज ठहराते हैं वो हकीकत में अपने कामों की वज़ह से गुलाम, दास और शूद्रों से भी बुरे हैं। अब ये बात साफ़ हो जाती है कि ऊपर लिखे गए कारणों की वज़ह से ही ये नकली ऊँची जाति वाले लोग जन्म आधारित जाति-प्रथा को जायज ठहराते हैं। लेकिन अग्निवीर ने आप सब समझदार लोगों के सामने इन सब जन्म आधारित जाति-प्रथा के ठेकेदारों कि पोल खोल दी है।

जातिवाद से हिन्दू धर्म में गिरावट आई है

ये हमारी भयंकर भूल ही थी कि हमने जबरन दूसरे धर्म को अपनाने वाले अपने हिन्दू भाइयों को हिन्दू धर्म में लेने से मना कर दिया । आप लोगों को ये जानकार अजीब लगेगा कि आज भी पूरी दुनिया में हिन्दू धर्म ही एक ऐसा धर्म है जिसमे ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है कि जिससे इसमें किसी और धर्म में पैदा होने वाला व्यक्ति शामिल हो सके। बेशक, अगर आपके पास पैसा है तो आजकल आप वाराणसी में जाकर हिन्दू रिवाजों के हिसाब से शादी करवा सकते हैं ताकि आप अपने फोटो वगैरह निकाल सकें। लेकिन ये न भूलें कि ये सब भी आर्य समाज के शुद्धि आन्दोलन के बाद शुरू हुआ है। आर्य समाज का शुद्धि आन्दोलन लगभग १२५ साल पहले शुरू हुआ था जिसका पुरजोर विरोध भी कुछ नकली, नीच और ढोंगी पंडो ने अपना धर्म समझकर किया था। अग्निवीर के विचार से ऐसे लोग तो 'शूद्र' से भी बुरे हैं।

बहुत सारे तथाकथित नकली ब्राहमण (नकली इसीलिए कि अग्निवीर की खुली ललकार के बावजूद इन में से कोई भी अपने ब्राह्मण होने का डीएनए प्रमाण नहीं दे पा रहा है) आपको ये खोखली बात कहते मिलेंगे कि गैर-हिन्दुओं को हिन्दू धर्म में लिया तो जा सकता है लेकिन सिर्फ शूद्र के रूप में और न कि ब्राह्मण या क्षत्रिय के रूप में। इससे बड़ी बदमाशी की बात और क्या हो सकती है कि समाज का एक वर्ग अपनी पकड़ बनाए रखने के लिए साजिश रचने में लगा हुआ है और वो भी इस बात की परवाह किये बिना कि उसकी इस नापाक हरकत से देश, समाज और धर्म का कितना बड़ा नुकसान हो चुका है और लगातार हो भी रहा है। ये वो ही बेवकूफ पण्डे (धर्म के ठेकेदार) हैं जिन्होंने उस स्टीफन नॅप, जिसने कि वाराणसी के सभी पंडो से ज्यादा अकेले ही हिन्दू धर्म के लिए काम किया है, को काशी विश्वनाथ में अन्दर जाने से सिर्फ इसीलिए मना कर दिया क्योंकि वो जन्म से ही ब्राह्मण नहीं है। अब इन धूर्त पंडों की बात को अगर स्टीफन नॅप माने तो उसे काशी विश्वनाथ में अन्दर जाने के लिए इस जन्म में तो प्रायश्चित करना पड़ेगा और अगले जन्म में इन्हीं जैसे किसी पण्डे के घर पैदा होना पड़ेगा! हिन्दू धर्म के लिए इससे बड़े दुर्भाग्य की बात और क्या होगी? हमारा देश बर्बाद करने के लिए क्या हमें बाहर या विदेश के दुश्मनों की जरूरत है ?

हम हिन्दू धर्म को मानने वाले भोले-भाले लोग सदियों से इस जात-पात की बेवकूफी को मानते आये हैं और दुर्भाग्य से अब भी समझने को तैयार नहीं हैं। ऐ मेरे भोले-भाले और सदियों से लुटने-पिटने वाले हिन्दू! क्या तुम्हें मालूम भी है कि पूरी दुनिया में कोई भी आदमी दुनिया की किसी भी मस्जिद में जाकर अपने मुस्लिम बनने की ख्वाहिश को जाहिर

कर सकता है? ऐसा होने पर उस मस्जिद का मौलवी सब कुछ छोड़-छाड़कर, हमारे मोटे- -ताज़े और गोल-मटोल पंडों के बिलकुल उल्टा, फटाफट एकदम से सारे इंतजामात करके उस आदमी को जल्दी से मुसलमान बना लेता है? इसी तरह अगर कोई आदमी किसी चर्च में जाता है तो वहां का फादर ईसाई बन जाने पर पैसा भी देता है और इसके साथ-साथ ईसाई बनने वाले की नौकरी भी लगवाई जाती है?

लेकिन अगर कोई हमारा बिछुड़ा हुआ भाई जिसे सदियों पहले जबरन मुसलमान या ईसाई बनाया गया था किसी भी हिन्दू धर्म के मंदिर में अपने पुरखों के धर्म में लौटने के लिए जाता है सबसे पहले तो ये मक्कार, लोभी, लम्पट, धूर्त, धर्मद्रोही, समाजद्रोही, राष्ट्रद्रोही जातिवादी उस भोले-भाले आदमी को ऐसी ख़राब और पैनी नज़र से देखते हैं कि जैसे उसने कोई समलैंगिक मजाक सुन लिया हो। उसके बाद वो पंडा अपने किसी बड़े पुरोहित को बुलाता है। हाँ, कुछ एक मंदिरों में तो वो भोला-भला आदमी अन्दर भी नहीं जा सकता। उदाहरण के लिए जैसे कि काशी विश्वनाथ के मंदिर के आंतरिक भाग में सिर्फ तथाकथित ब्राहमण ही जा सकते हैं। इन सब के बाद उसे प्रायश्चित की एक लम्बी सी लिस्ट दी जायेगी ताकि वो हिन्दू धर्म में आकर एक "शूद्र" बन सके। एक साधु महाराज और उनके जैसे स्वनामधन्य कुछ लोगों के अनुसार प्रायश्चित के लिए हिन्दू बनने वाले को हिन्दू धर्म में आकर एक "शूद्र" बनने के लिए कई दिनों तक गाय का गोबर खाना जरूरी है। कुछ दूसरे संप्रदाय जैसे कि इस्कोन (ISKCON) ने हिन्दू धर्म में आकर एक "शूद्र" बनने के लिए काफी हद तक तरीका आसान किया है क्योंकि वो उन कुछ लोगों में से हैं जिन्होंने हमारे बहुत दिनों से खोये हुए भाइयों को अपने धर्म में वापस लाने के काम की जरूरत को समझा है।

लेकिन इस्कोन को उनके इस काम के लिए बाकी स्वयम्-घोषित दूसरे संप्रदाय वाले धर्म के ठेकेदार धोखेबाज़ मानते हैं। इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या होगा कि हिन्दू धर्म में आने के बावजूद वो लोग कांचीपुरम, जगन्नाथ और द्वारका के मंदिरों में प्रवेश तक नहीं पा सकते वहां पर पूजा करके पुजारी बनने की बात तो आप भूल ही जाओ। वो लोग किसी भी तथाकथित ऊँची-जाति के हिन्दू से शादी नहीं कर सकते। वो लोग न तो वेद पढ़ सकते हैं और न ही पढ़ा सकते हैं। यहाँ तक कि सभी संभलकर कदम रखना चाहते हैं और इसी बात पर जोर और ध्यान देते हैं कि वो लोग सिर्फ गीता और भागवत पुराण आदि ही पढ़ें और वेद न पढ़ें।

आर्य समाज के अलावा किसी भी दूसरे हिन्दू धर्म के लोगों में ये हिम्मत और हौसला नहीं है कि एक मस्जिद के मौलाना को वेद पढ़ने और पढ़ाने वाला पंडित बना सकें। और इसी कारण उन्हें पिछले १२५ साल से रास्ते से भटका हुआ माना जाता रहा है। दुःख की बात

ये है कि आज आर्य समाज भी सिर्फ एक किटी पार्टी (Kitty party) बनकर रह गया है और अपने मुख्य उद्देश्य (जाति-प्रथा का जड़ से विनाश) को भूल चुका है। आज आर्य समाज भी सिर्फ भगोड़े लड़के-लड़कियों की शादी करवाकर एक दान-दक्षिणा बटोरने वाली संस्था बनकर रह गयी है। क्या कोई ईसाई या मुसलमान पागल है जो अपनी इज्ज़त और आत्म-सम्मान की कीमत पर हिन्दू धर्म को अपनाएगा?

अग्निवीर किसी एक संप्रदाय या आदमी विशेष को अपराधी नहीं ठहरा रहा है बल्कि अग्निवीर की नज़र में इसकी अपराधी एक "जातिवादी दिमागी सोच" है। हर समाज में वन्दनीय रत्न भी हैं। किंतु आज के समय की सबसे बड़ी समस्या ये बेवकूफाना जाति-प्रथा और "जातिवादी दिमागी सोच" की वज़ह से इसका समर्थन करने वाले लोग ही हैं।

अगर हम कभी दास या गुलाम बने तो वो भी इसी की वज़ह से था। अगर हमारा कभी बलात्कार और क़त्ल-ए-आम हुआ तो वो भी इसी की वज़ह से हुआ। अगर हम आतं-कवाद का सामना कर रहे हैं तो वो भी इसी की वज़ह से ही है। और फिर भी हम आगे बढ़कर इसे छोड़ना नहीं चाहते। ये बात हम सभी अच्छी तरह से जानते हैं कि इसका न तो कोई आधार है, न कोई बुनियाद है और न ही ऐसा कोई तरीका है जिससे की इन बातों की जांच-परख हो सके, इसके बावजूद भोला-भाला और सदियों से लुटता-पिटता रहा हिन्दू, आज भी उसी सांप को खिला-पिला रहा है जिस सांप ने हमारे सगे-सम्बन्धियों को सदियों से न सिर्फ डसा है बल्कि बेरहमी से उनकी जान भी ली है।

जातिवाद ने भारत का खूनी बंटवारा तक करवा दिया

आज की तारिख में हिन्दू समाज का एक हिस्सा १९४७ के भारत के बंटवारे का रंज मनाता है और उसी तरह से तथाकथित इस्लामी कट्टरवाद का भी रोना बड़े-बड़े आंसू टपकाकर रोता है। लेकिन शायद सिर्फ कुछ ही लोगों को मालूम हो कि "मोहम्मद अली जिन्ना" के परदादा या पुरखे हिन्दू ही थे, जो किन्ही बेवकूफाना कारणों की वज़ह से ही मुसलमान बनने के लिए मजबूर हुए थे। इकबाल के दादा एक ब्राहमण परिवार में पैदा हुए थे। हमारे जातिवाद के हिसाब से तो हिन्दू धर्मी किसी म्लेच्छ के साथ सिर्फ खाना खाने से ही म्लेच्छ हो जाता था और उसके पास अपने सत्य सनातन हिन्दू धर्म में वापस लौटने का कोई भी रास्ता इन नीच, पापी पंडों ने नहीं छोड़ा था।

बाद के समय में जब स्वामी दयानंद सरस्वती और स्वामी श्रद्धानंद ने शुद्धि आन्दोलन शुरू किया और स्वातंत्र्य वीर सावरकर ने शुद्धि आन्दोलन को खुले तौर पर समर्थन दिया तब इन

मौकापरस्त धर्म के दलालों को दुःख तो बहुत हुआ लेकिन इन्हें हिन्दू धर्म के दरवाजे अपने भाइयों के लिए खोलने पड़े। लेकिन फिर भी ये मौकापरस्त धर्म के दलाल अपनी नापाक हरकतों से बाज़ नहीं आये और अपने बिछुड़े भाइयों को तथाकथित छोटी जाति में जगह दी। अब भी क्या आपको कोई शक या मुगालता है कि हिन्दू धर्म के सबसे बड़े दुश्मन ये मौकापरस्त धर्म के दलाल ही हैं?

सारे भारतीय उपमहाद्वीप की मुसलमान और ईसाई जनसँख्या आज हमारे ही उन पापों और अपराधों का परिणाम है जिसके हिसाब से किसी भी आदमी को कैसे भी काम की वज़ह से हिन्दू धर्म से बाहर निकाला जा सकता था। आज हमें जरूरत इस बात की है कि हम दूसरों के धर्मों की बुराइयाँ और उसमे कमियां निकालने कि बजाय, खुद से ये सवाल करें कि "क्या हमारे पास ऐसी कोई भी चीज़ ऐसी है जिससे कि सदियों पहले अपने छोटे-छोटे दूध पीते बच्चों की जान बचाने के लिए, बहू-बेटियों की इज्ज़त बचाने के लिए, डर और मजबूरी से अलग हुए हमारे अपने ही भाइयों को इज्ज़त के साथ हिन्दू धर्म में आने के लिए मना सकें और उन्हें अपने दिल से लगा सकें।" "क्या हमारे पास उन्हें भला-बुरा कहने का कोई हक़ है जब हम अपनी झूठी और बकवास तथकथित नकली किताबों को मानते हैं और जाति-प्रथा और पुरुष-स्त्री में भेदभाव को सही मानते हैं?"

जातिवादियों को पहले अपने पापों और अपराधों को देखना चाहिए

अगर हम हिन्दू और कुछ भी नहीं कर सकते तो कम से कम खुद के साथ तो इमानदार बनें। अग्निवीर एक निष्पक्ष आलोचक के तौर पर एक वैज्ञानिक की तरह से इस्लाम के इतिहास, कुरान और बाइबिल को सबके सामने रखता है। अग्निवीर किसी भी धर्म या संप्रदाय से नफरत नहीं करता। अग्निवीर विचारों पर लिखता है न कि किसी खास आदमी पर। इसके साथ अग्निवीर अपने साहस, हिम्मत और हुंकार के साथ ये भी कहता है कि उन सभी किताबों को एकदम बिना कोई देर किये जो किसी भी तरीके से जातिवाद और स्त्री-पुरुष में भेदभाव जैसे शर्मनाक रस्मों को सही मानती हैं, या तो कूड़ेदान में डाल देना चाहिए या फिर आग के हवाले कर देना चाहिए। अग्निवीर इस बात की रत्ती भर भी परवाह नहीं करता कोई आदमी ऐसी किसी किताब, रस्म और पूजा के तरीके से कितने भावनात्मक रूप से और किस हद तक जुड़ा हुआ है। अग्निवीर फिर भी इन खून चूसने वाली जोंक और परजीवियों से छुटकारा पाने के लिए संघर्ष करता रहेगा।

जब तक हम सभी धर्म और संप्रदाय के लोग इतनी ईमानदारी नहीं दिखा सकते तब तक

तुलनात्मक धर्म पर कोई भी बहस करना अपने घृणित पापों और अपराधों पर पर्दा डालने की एक बेशर्म कोशिश से ज्यादा कुछ नहीं होगा।

जातिवाद जाएं भाड़ में और तथाकथित नीची-जाति के लोगों के पास तथाकथित ऊँची--जाति बनने के लिए कोई व्यवस्था नहीं थी। हिन्दू ने कहा "योग्यता जाएं भाड़ में" तो नियति ने कहा "हिन्दू जाएं भाड़ में"।

इसीलिए, अग्निवीर आज आप सब लोगों से अपने-अपने जीवन में ये बात अपनाने के लिए निवेदन करता है कि 'वो लोग जाएं भाड़ में जो कहते हैं "योग्यता जाएं भाड़ में"।

अध्याय ३

जाति-प्रथा की सच्चाई: भविष्य के कदम

शिकायत तो सभी करते हैं, समाधान कुछ ही दे पाते हैं। आते-जाते तो सभी हैं, कुछ अमर हो जाते हैं।

- अग्निवीर

इस पुस्तक को लिखने का उद्देश्य यह नहीं है कि हम समाज का अंधकारपूर्ण चित्र खींच कर निराशा फैलाएं, बल्कि हमारा उदेश्य है कि हम हमारे इतिहास और वर्तमान को निष्पक्ष होकर देखें और अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए मार्ग प्रशस्त करें। भारतवर्ष और हिन्दुओं को बचाने के लिए अति आवश्यक है कि जैसे भी हो हम सब मिलकर प्रयत्न करें और कुछ ही वर्षों में हमारे सम्मिलित प्रयत्नों से समाज का काया-पलट होगा। आइये, इस जाति-व्यवस्था को हम अपने मन, वचन और कर्म से पूर्णत: नकार दें।

इतिहास को न दोहराएं

अपने पूर्वजों की गलतियों की वकालत करना, उनसे सहमत होना, यह भी एक तरह से जाति-प्रथा को बढ़ावा देना ही हुआ, इसे बंद करें। जो कुछ भी हुआ उसके लिए हम सब

सम्मिलित जिम्मेदारी उठायें। तथाकथित जन्मना ब्राह्मण और क्षत्रिय ही इस के लिए जिम्मे-दार नहीं हैं बल्कि इस के लिए तथाकथित 'दलित' और 'शूद्र' उनसे भी अधिक जिम्मेदार हैं। क्यों उन्होंने इन छद्म ब्राह्मणों और क्षत्रियों को सदियों तक सत्ता पर बिठाए रखा और उनके अत्याचार सहते रहे?

जो बीत गया, सो बीत गया। अब से अपने आप को मनुष्य जाति के आलावा अन्य किसी भी जाति का कहलाना बंद करें। भूतकाल में जो हुआ या आज जो कुछ भी हो रहा है, उसके लिए किसी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र को दोष देना बंद करें। हमारा संघर्ष एक सोच या मानसिकता के विरुद्ध है न कि किन्ही व्यक्तियों के विरुद्ध। हमारी सफलता इस पर निर्भर करती है कि हम दृढ़ता से यह निश्चित करें कि हम किसी भी व्यक्ति को उसकी जाति से नहीं पहचानेंगे।

संस्कृति और परंपरा के नाम पर जातियों का समर्थन बंद करें

संस्कृति और परंपरा के नाम पर हर किसी चीज़ या बात का पक्ष लेना बंद करें। जन्म आधारित जाति-व्यवस्था को बढ़ावा देने वाले हर ग्रन्थ, पुस्तक, रस्मों-रिवाज, धार्मिक संस्कार, अनुष्ठान, सभा, समाज और संस्था का पूर्णत: बहिष्कार करें। फ़िर भले ही वो कोई प्रसिद्ध मंदिर, उत्सव, त्यौहार या ग्रन्थ ही क्यों न हों, जिन में हम पीढ़ियों से श्रद्धा रखते हों, यदि वे इस मूर्खतापूर्ण जाति-प्रथा का समर्थन करते हैं तो हमें उन्हें नकारना ही होगा।

हमारे मूलग्रन्थ 'वेद' में अग्निवीर को ऐसी कोई भी मूर्खतापूर्ण, अप्रमाणित, निराधार कल्पना नहीं मिली है। इसके विपरीत स्पष्ट रूप से वेद गुणवत्ता का ही बखान करते हैं और वेद पूर्णतः प्रक्षेपण मुक्त हैं, इसलिए हम वेदों को ही अपना आधार या मूल मानते हैं। अन्य सभी ग्रन्थ वहीँ तक प्रमाण माने जा सकते हैं जहाँ तक वे वेदानुकूल हों और यदि उन में जातिवाद, नस्लवाद या लिंग भेद का समर्थन पाया जाए तो वे शास्त्र नहीं कहे जा सकते। आइये, हम सब जातिवाद का समर्थन करनेवाले ऐसे सभी ग्रन्थों, व्यक्तियों, संस्थाओं और परम्पराओं को सिरे से नकार दें।

इस का मतलब यह नहीं है कि हम अपने पूर्वजों को पूर्णतः नकार रहे हैं बल्कि उनकी अच्छी बातें स्वीकार की जानी चाहिएं। आप अपने पूर्वजों के अच्छे कर्मों से प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु, अपने पूर्वजों के कर्मों के आधार पर स्वयं उच्च होने का भ्रम पालना बंद करें। आपको विश्वविद्यालय में प्रथम क्रमांक इसलिए नहीं मिल जाएगा क्योंकि आपके दादाजी वहां अव्वल आये थे!

ऐसे किसी भी मंदिर में जाना बंद करें – जहाँ 'दलित' प्रवेश पर पाबन्दी हो

ऐसे किसी भी मंदिर की मान्यता नकारें जहाँ कोई तथाकथित 'दलित' प्रतिभासंपन्न होते हुए भी पुजारी नहीं बन सकता या तो वहां की व्यवस्था अपने हाथ में लें और वहां पर योग्यता के आधार पर चयन की प्रक्रिया शुरू करें, या फ़िर ऐसे घृणा और द्वेष से पूर्ण मंदिर का बहिष्कार किया जाए। फ़िर भले ही वह मंदिर कोई महानतम तीर्थस्थल ही क्यों न हो, केवल प्रसिद्धि से कोई खलनायक, नायक नहीं बन जाता।

अहिंदुओं को हिन्दू रूप में अपनाएं

विवेकपूर्ण व्यक्तियों द्वारा संचालित स्थानीय मंदिरों से संपर्क करें, ताकि अहिंदुओं को सम्मान के साथ हिन्दू धर्म में प्रवेश मिल सके। वह उनसे 'गायत्री मन्त्र' का उच्चारण करवाने जैसे छोटी सी रस्म निभाकर ही, उन्हें हिन्दू बना सकते हैं। मनुष्य जाति के आलावा और किसी जाति का उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है। हिन्दू धर्म अपनाने के लिए अपनी जीवन शैली में कुछ मूल बातों का पालन करना जैसे – शुद्ध आहार, दयालुता, शिक्षा, अहिंसा, परमात्मा की उपासना और सभी के लिए समभाव इत्यादि ही पर्याप्त है।

शुद्धि का आयोजन करें

बड़े पैमाने पर शुद्धि कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए और शुद्ध होने वाले लोगों को ब्राह्मण का दर्जा दिया जाए, जो धार्मिक संस्कार करवा सकें और मंदिर के पुजारी बन सकें।

असल में, ऐसे विशेष मंदिर खोलें जाएँ जहाँ 'दलित' और अहिंदू से हिन्दू बन चुके व्यक्तियों को पण्डित या पुजारी बनाया जाए। कई स्थानों पर इस की शुरुआत हो चुकी है, परन्तु इसे और भी तेजी से किये जाने की आवश्यकता है।

तथाकथित 'दलित' इलाकों में उन्हें ब्राह्मण बनाने की विधि संपन्न की जाए और वे ही फिर अन्य दलितों को ब्राह्मण बनाने का कार्य करें। इसके साथ ही इन लोगों को शर्मा, तिवारी, त्रिपाठी, चतुर्वेदी, द्विवेदी, त्रिवेदी इत्यादि कुलनाम (Surname) भी प्रदान किये जाएँ – जिसका वे कानूनन प्रयोग कर सकें। इस सब को इतने बड़े पैमाने पर किया जाए कि कुछ ही वर्षों में यह पहचानना असंभव हो जाए, कि कौन कुछ वर्षों पहले ब्राह्मण बना था और कौन कई पीढ़ियों से ब्राह्मण बना हुआ है? (डीएनए प्रमाण-पत्र के अभाव में ब्राह्मणों की कुछ पीढ़ियों से अधिक का पता लगाना संभव नहीं है।) लोगों को वैदिक धर्मी बनाने के लिए स्वामी दयानन्द व्यापक तौर पर यज्ञोपवीत बांटा करते थे। हमें भी अपनी मुहीम का

प्रचार करने के लिए इस प्रतिक का प्रयोग करना चाहिए।

इसमें चुनौति क्या है?

इस में एक बड़ी चुनौती आरक्षण आधारित राजनीति की है। जिसके चलते तथाकथित दलित स्वयं को 'दलित' ही कहलाते रहना चाहते हैं, विशेषाधिकार पाने के लिए अपने मान-सम्मान को भी ताक पर रखे हुए हैं। परन्तु यदि सामाजिक सहयोग के बृहद कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए और उद्यम वृत्ति के नए मार्ग खोजे जाएं तो यह कारण स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। वैसे भी, आगामी दस-बीस वर्षों में समाज के पढ़े-लिखे वर्गों से सरकारी नौकरी पाने की लालसा समाप्त हो जाएगी, क्योंकि तकनीकि क्रांति के कारण बहुत से विश्वस्तरीय आकर्षक उद्यमी अवसर प्राप्त होंगे।

आजकल राजनीतिकरण के कारण लोग 'दलित' अथवा 'अनार्य' कहलाने में गर्व महसूस करते हैं। ये अत्यंत मूर्खता है जो मूल उद्देश्य पर ही घात करती है। 'दलित' अर्थात् जो पांव से कुचला गया हो, यह एक गाली है और इस अपशब्द का उपयोग समाज में किसी भी जाति के लिए नहीं किया जाना चाहिए। 'दलित' वह है जो आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछडा हुआ है चाहे किसी भी जाति का क्यों न हो। दुर्जन व्यक्ति 'अनार्य' है। किसी मल्लाह की विदुषी बेटी भी श्रेष्ठ ब्राह्मण है, यदि वह चारों वेदों का अध्ययन कर ले तो वह चतुर्वेदी है। जब सम्पूर्ण मानवता एक ही नस्ल, एक ही जाति है तो हमें दलित, आर्य, पिछड़ी जाति, अनुसूचित जाति, बैकवर्ड कास्ट इत्यादि के विभाजन को पहचानने से भी इंकार कर देना चाहिए। अतीत के जाली ब्राह्मणों और क्षत्रियों की तरह ही आज बहुजन, दलित, द्रविड इत्यादि की तुष्टिकरण नीति पर पलने वाले राजनैतीक दल भी - मानवता के बहुत बड़े शत्रु हैं क्योंकि अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए और केवल विवेकहीनता के कारण इन दोनों ने ही इस जाति-व्यवस्था की आग़ को हवा दी है।

लेकिन अब वो शुभ समय आ गया है कि हम इस खोखली जाति-व्यवस्था की जाल-साजी को समझें और इसे मूल से ही विनष्ट कर दें। यह सही है कि चुनौतियाँ हैं परन्तु यह अवसर भी ऐतिहासिक है।

अग्निवीर का संकल्प

अग्निवीर इसे अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। हम सभी से यह अपील करते हैं कि वे हमारा इस अभियान में साथ दें, हम इस मुहीम की शुरुआत जमीनी स्तर से करना चाहते हैं।

हम जानते हैं कि इस अध्याय को पढ़ने के बाद कई लोग नाराज भी होंगे और हमें कटु आलोचनाओं का सामना भी करना पड़ेगा। यह विरोध उनका होगा - जो जन्म के आधार पर वेद पढ़ने का अधिकार नकारते हैं, मर्दों को स्त्रियों से ऊँचा समझते हैं या इसी तरह के किसी बकवास विचार में विश्वास रखते हैं, परन्तु हमें इसकी परवाह नहीं, क्योंकि हम जानते हैं कि हम सत्य के साथ हैं, जाति-व्यवस्था - वेद, मानवता, तर्क और राष्ट्र विरुद्ध है।

यदि हम से कोई इस पर बहस करना चाहे तो हम सहर्ष तैयार हैं परन्तु उससे पहले आपको आपकी अनुवांशिकीय रिपोर्ट (DNA Report) प्रस्तुत करनी होगी, जिससे हम यह विश्वास कर सकें कि आप वेदों के प्रादुर्भाव काल में जो ब्राह्मण थे, उनकी वंशावली के ही ब्राह्मण हैं न कि कुछ पीढ़ियों पहले ब्राह्मण होने का ढोंग करनेवाले किसी धूर्त चांडाल की संतान हैं। आखिरकार, आप ही के कहे अनुसार सिर्फ किसी प्रामाणिक ब्राह्मण को ही वेदों पर चर्चा करने का अधिकार है!

योग्यता-आधारित व्यवस्था ही प्रचलित हो!

अध्याय ४

ब्राह्मण, शूद्र...मैं नहीं जानता

जो बीत गया उस पर पछताने की बजाए भविष्य के लिए कर्म करें।

- अग्निवीर

यदि विकसित मानव मस्तिष्क की सबसे मूर्खतापूर्ण ख़ोज के बारे में पूछा जाए तो मैं कहूंगा कि – जाति-प्रथा।

मुझे गलत मत समझिए, मेरा तात्पर्य जाति-प्रथा को ही सबसे बड़ी बुराई मानने से नहीं है बल्कि दास-प्रथा, नस्लवाद और काफ़िर इससे भी घिनौनी धारणाएं हैं। किसी को अपनी संपत्ति मानकर दास बना लेना क्योंकि उसका रंग सांवला या काला है – यह क्रूरता की हद है, ऐसे लोग 'मनुष्य' कहलाने के योग्य बिलकुल नहीं है।

इसी तरह, यह मानना कि जो मेरे विचारों से सहमत नहीं है, जो मेरी किताब और मेरे पैगम्बर पर ईमान नहीं लाता, वह सबसे निकृष्ट प्राणी – 'काफ़िर' है और वह हमेशा के लिए दोज़ख की आग़ में जलेगा, यह भी किसी सभ्य मस्तिष्क की उपज नहीं लगती बल्कि यह एक बर्बर जंगली मानसिकता है। १८६५ से पहले अमेरिका में क्या हालात थे या आज

अलक़ायदा, तालिबान और आईएसआईएस ने विश्व में जो आतंक मचा रखा है – वह सिर्फ पाशविक दिमाग का ही काम है, यह किसी विकसित मानवी मस्तिष्क की सोच हो ही नहीं सकती।

इन सब से तो जाति-प्रथा कहीं अधिक सभ्य और सुधरी हुई है - जाति-प्रथा गणितीय दोषों से परिपूर्ण, असत्यापित और पूर्वाग्रह से ग्रस्त मानसिकता है। जिसका कोई तर्कसंगत आधार नहीं है साथ ही यह हिन्दू धर्म के मूल – वेद के भी सर्वथा विपरीत है। फ़िर भी इस मूर्खतापूर्ण अविष्कार का हमारे राष्ट्र की गौरवशाली संस्कृति को नष्ट करने में बहुत बड़ा योगदान रहा है। यह भेड़िये की तरह सीधे हमला नहीं करती बल्कि सोते हुए लोगों का खून चूस लेने वाले चमगादड़ (Vampire) की तरह है।

मैं इस पर पहले ही काफ़ी लिख चुका हूँ कि कैसे यह मूर्खता से भरी हुई जाति-प्रथा हिन्दू धर्म के मूलाधार ग्रन्थ वेदों की मान्यताओं के विपरीत है। हम इस पर भी चर्चा कर चुके हैं कि कैसे यह हमारे राष्ट्र की दुर्गति, हमारी दासता का मुख्य कारण रही है और हमारी उज्जवल सभ्यता के मुख पर कलंक के समान है।

इस अध्याय में हम जाति-व्यवस्था के मूलभूत दोषों पर चर्चा करेंगे –

दोष १: जाति-व्यवस्था प्रत्येक मनुष्य को बांटती है

जाति-व्यवस्था अनिवार्य रूप से प्रत्येक मनुष्य को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र – इन में से किसी एक वर्ग में बांट देती है। यह ऐसा ही है जैसे किसी नादान व्यक्ति ने कोई बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice question) तैयार किया हो, जिसमें इन चार असम्बद्ध विकल्पों के आलावा और कोई विकल्प नहीं है। यदि आप इन तय मानदंडों से बाहर निकलने की कोशिश करते हैं तो आपको जाति से बहिष्कृत होने का दण्ड भुगतना पड़ता है। अतः आपको निर्णय करनेवाले की सनक के अनुसार ही कोई बेतुका विकल्प चुनना होगा।

वास्तव में इन चार जातियों को वेदों में 'वर्ण' (अर्थात् पसंद) कहा गया है, मानवीय स्वभाव को समझाने के प्रारूप का यह एक हिस्सा है, सुव्यवस्थित समाज को निर्माण करने के लिए यह आवश्यक है। सभी वैज्ञानिक अविष्कारों की शुरुआत कुछ प्रारूपों से ही होती है जिन्हें और अधिक विश्लेषित, परिष्कृत और प्रयुक्त किया जाता है ताकि उससे उचित लाभप्रद उत्पाद बनाया जा सके। उदाहरण के तौर पर – द्रव्यमान (Mass), वजन (Weight), गति (Speed) और त्वरण (Acceleration) के सिद्धांतों के आधार पर जटिल यांत्रिकी प्रारूप बनते हैं जिनसे लाभ लिया जा सके। वेद भी ऐसे ही कई प्रारूपों के सिद्धांतों का संकेत

करते हैं और वर्ण व्यवस्था उन में से एक है। वास्तविकता –

वेदों के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र यह चारों वर्ण चार मूलभूत गुणधर्मों का प्रतिनिधित्व करते हैं। मनुष्यों का व्यवहार इन्हीं गुणधर्मों के विभिन्न सम्मिश्रणों से बनता है। एक ही मनुष्य में अलग-अलग सन्दर्भों (परिस्थितियों) और अलग-अलग समय के अनुसार ये बदलते रहते हैं।

यह सिद्धांत रंगीन मुद्रण में प्रयोग होने वाले सीएमवाईके प्रारूप (CMYK Model) जैसा ही है। इसमें प्रयोग होने वाले - हरिनील अर्थात् सियान (Cyan), रानी (Magenta), पीला (Yellow) और काला (Black) - इन चार रंगों के संयोगों से ही हर प्रकार के चित्र बन सकते हैं, जो हम पत्रिकाओं में और रंगीन तस्वीरों में देखते हैं। यदि मैं आपको किसी व्यक्ति का छायाचित्र दिखाऊँ और पूछूं कि यह चित्र हरा है, रानी है, पीला है या काला है - तो यह अत्यंत मूर्खतापूर्ण होगा। लेकिन, ऐसा मूर्खतापूर्ण वर्गीकरण हमने अपने समाज में जातियों के बारे में कर रखा है।

दोष २: जाति-व्यवस्था सिर्फ चार वर्णों में सिमटी हुई है

पिछले मुद्दे से आगे बढ़ते हुए यदि हम देखें तो हम इस कटु सत्य से अवगत होंगे कि जाति-व्यवस्था कभी भी सिर्फ इन चार वर्णों तक ही सिमित नहीं रही है। जैसे कि मैंने पहले बताया, इन चार विकल्पों के आलावा किन्हीं और विवेकपूर्ण विकल्पों के न होने के कारण लोगों के पास इन चार वर्णों से बाहर चले जाने का कोई पर्याय नहीं बचा इसलिए इन्हीं जातियों के सम्मलेन से लोगों ने नई-नई उप-जातियां बनाईं और उन उप-जातियों को फिर से उप-जातियों में विभाजित कर दिया। इससे समाज में जातियों, उनकी उप-जातियों और फिर उन में उप-जातियों का मकड़ जाल फ़ैल गया। ब्राह्मणों में भी उच्च और नीच ब्राह्मण पाए जाते हैं। यदि आप बनारस में वेदाध्य्यन के लिए जाएं तो आप अगर उच्च ब्राह्मण हों तभी आप को उच्च ब्राह्मणों की पाठशाला में प्रवेश मिल सकेगा।

तथाकथित नीची जाति के कहे जाने वाले ‘दलित’ और ‘शूद्र’ भी अपने में उच्च और नीच का बखेड़ा रखते हैं। यादव स्वयं को बिश्नोई के ऊपर समझते हैं तो बिश्नोई, यादवों से ऊपर होने का दावा करते हैं। फ़िर भी दोनों अन्य पिछड़ी जातियों (OBC) और अनुसूचित जाति-जनजाति (SC\ST) की सूची में आने के लिए झगड़ते रहते हैं। इसी तरह दस्सा अग्रवाल और बिस्सा अग्रवाल हैं जो अपने-अपने बड़प्पन का दंभ भरते रहते हैं। एक प्रजापति हैं जो कभी स्वयं को वैश्य कहते हैं, कभी शूद्र। मुसलमान और ईसाईयों में

भी सैंकड़ों जातियां, उप-जातियां, ऊँची और नीची जातियां हैं। आज ऐसे हजारों फालतू वर्गीकरण मौजूद हैं। हम अपने जन्मानुसार वर्गीकरण पर इतराते रहते हैं, साथ ही अपनी उप-उप-उप-उप जाति के लिए विशिष्ट अधिकारों की मांग करते रहते हैं।

इस एक मूर्खतापूर्ण सिद्धांत के कारण कई मूर्खतापूर्ण जाति-प्रथाओं का ऐसा जटिल तंत्र बन गया है जो दिन-ब-दिन उलझता जा रहा है, इसलिए मैंने इसे मूर्खतापूर्ण ख़ोज कहा।

यदि हम उन शास्त्रों की ओर देखें, जिन पर इस सब की शुरुआत का आरोप है तो उन में ऐसे क्लिष्ट वर्गीकरण का तनिक सन्दर्भ भी नहीं मिलता। इसलिए सामाजिक अधिकारों के विषय में और इन हजारों मूर्ख उप-उप जातियों की स्थिति के विषय में समाज में भयंकर उथल-पुथल मची हुई है।

यदि हम विनम्रता से हमारे मूलस्रोत वेदों की ओर लौटें तो हम पाएंगे कि वेद बड़ी स्पष्टता से निश्चयपूर्वक कहते हैं - जाति केवल एक है – मानवता। भले ही जन्म कहीं भी हुआ हो, सभी मानवों के अधिकार समान हैं। किसी भी व्यक्ति का दर्जा या ओहदा केवल उसके गुणों और योग्यता पर आधारित होना चाहिए, किसी और चीज़ पर नहीं।

दोष ३: हिन्दू ग्रन्थ जाति-व्यवस्था का समर्थन करते हैं, यह दावा

कुछ प्रकाण्ड मूर्ख हिन्दू ग्रंथों के हवाले से यह दावा करते हैं कि जाति-व्यवस्था जन्म आधारित है। हिन्दू ग्रंथों का सन्दर्भ देते हुए वे कहते हैं कि ब्राह्मण मुख से पैदा हुआ, क्षत्रिय हाथों से, वैश्य उदर से और शूद्र ने पैरों से जन्म लिया। इन सन्दर्भों का गहराई से विश्लेषण हम पहले ही कर चुके हैं। आइये, अब इन भ्रांत अवधारणाओं को परखें -

क्या ईश्वर ने ब्राह्मण को मुख से निकलने का और शूद्र को पैरों से निकलने का कोई प्रमाण--पत्र भी दिया है या उन पर पहचान की कोई चिट चिपका कर भेजा है? नक़ल से बचने के लिए सभी मौलिक चीजों में ऐसे चिन्ह होते हैं तो ईश्वर से यहाँ ऐसे प्रावधान न करने की भूल कैसे हो गई?

यदि ईश्वर से ऐसी गलती नहीं हुई है तो किसी व्यक्ति के ब्राह्मण होने के दावों का परिक्षण हम कैसे करें? क्या उनके पास कोई अनुवांशिकीय प्रमाण-पत्र (DNA Certificate) है कि वे लाखों साल पहले मानवीय सभ्यता की शुरुआत में ईश्वर के मुख से निकले सर्वप्रथम ब्राह्मण के ही वंशज हैं?

यदि नहीं है तो हम कैसे यकीन करें? ब्राह्मण बन कर आप विशेषाधिकार प्राप्त करते हैं,

स्पष्ट रूप से यह बहुत बड़ा प्रलोभन है जिससे झूठे व्यक्ति भी ब्राह्मण होने का दावा करें। क्या हम देश में नकली प्रमाण-पत्र और नकली रुपयों का भ्रष्ट कारोबार नहीं देखते? यह एक कटु सत्य है कि आज का कोई ब्राह्मण २०० वर्ष पूर्व के किसी ब्राह्मण का ही वंशज है - यह परखने का कोई उपाय नहीं है, फ़िर लाखों साल पहले की बात तो रहने ही दीजिए। आजकल जो पहचान-पत्र (ID Proof) का चलन है, उस में भी बनावटी पहचान-पत्र बनते हैं, फिर आज का ब्राह्मण मानवीय सभ्यता के शुरुआत के ब्राह्मण की ही संतान है – इसकी संभाव्यता तो बहुत ही न्यून है। इसी तरह आज का 'दलित' मानवीय सभ्यता के शुरूआती दौर के 'दलित' की संतान ही हो इसकी सम्भावना तो नगण्य ही है।

यही बात बाकि जातियों पर भी लागू होती है।

अतः जाति-प्रथा ईश्वरीय नहीं है, यदि ऐसा होता तो इसे प्रमाणित करने के तरीके भी होते, जैसे हमें मनुष्यों और अन्य प्राणियों में स्पष्ट फ़र्क दिखता है (मैं इस में पाशविक कर्म करने वाले मनुष्यों को शामिल नहीं कर रहा हूँ।) जैसे हम कुत्ते और गधे, घोड़े और कबूतर के बीच का अंतर देख सकते हैं, ऐसी कोई प्रणाली ईश्वर ने मनुष्यों में अलग-अलग जातियों को पहचानने की नहीं रखी।

स्पष्टत: जाति-प्रथा मानवीय अविष्कार है। अत्यंत साधारण दिमाग हर चीज़ को दो हिस्सों में बांटता है, जैसे – काला, सफ़ेद, अच्छा, बुरा इत्यादि परन्तु अधिक विकसित मस्तिष्क के पास अधिक विकल्प खुले होते हैं। तथापि, एक बुद्धिसंपन्न मस्तिष्क इस यथार्थ को स्वीकार करेगा कि हमेशा एक सातत्य जरुर रहा है और किसी भी प्रकार का वर्गीकरण केवल अटकलों पर ही आधारित होता है। दिमागी शक्तियों का विकास होने के साथ-साथ हम जटिल प्रारूपों को समझाने लगते हैं।

जब हम बच्चे थे तब लकीरें खींच कर उनकी गिनती से जोड़-बाकी (Addition--Substraction) सीखा करते थे। फ़िर हमने अंकगणित (Arithmetic) सीखा और फ़िर बीजगणित (Algebra), गणित की एक शाखा - गणना या कॅलक्युलस (Calculus) तो कुछ अति बुद्धिमान लोग ही समझ पाते हैं। किसी चौकोन (Square) या आयत (Rectangle) का क्षेत्रफल हम बीजगणित से निकाल पाएंगे, लेकिन किसी वृत्त (Sphere) का आयतन (Volume) निकालना हो तो आपको कॅलक्युलस ही सीखना पड़ेगा। अगर किसी वृत्त का आयतन निकालने के लिए मैं घन (Cube) के सूत्र (Formula) का प्रयोग करूँ क्योंकि हमारी पुस्तक के अनुसार घन का वह सूत्र ईश्वरीय है

तो यह केवल मूर्खतापूर्ण मतानुकरण होगा।

आइये हम सब सच्चाई से सोचें – जाति-व्यवस्था एक आधारहीन, अप्रामाणिक और सनकी ख़ोज है। किसी मनुष्य के बारे में हम केवल इतना कह सकते हैं कि वह एक मनुष्य है, उसकी जाति को लेकर किया गया दावा केवल एक अंध कथन होता है।

दोष ४: मलेच्छ किसी जाति में नहीं आते

कोई नहीं जानता कि विश्व की ६ अरब आबादी - जो हिन्दू नहीं है, उसे किस जाति में रखा जाए। जब कोई व्यक्ति हिन्दू धर्म को अपनाता है, तब मूर्ख लोग इस बहस में पड़ जाते हैं कि उसे शूद्र समझें या ब्राह्मण। स्टीफन नॅप जैसे व्यक्ति जिनका हिन्दू धर्म के प्रति काफ़ी योगदान रहा है, उन्हें जगन्नाथ पुरी के पण्डों ने इसलिए मंदिर में प्रवेश देने से मना कर दिया क्योंकि वह जन्मत: हिन्दू नहीं थे।

कुछ लोग ऐसे व्यक्तियों को मलेच्छ कहते हैं।

परन्तु वास्तविकता यह है कि इन मलेच्छों ने जाति-व्यवस्था के प्रेमी पोंगा पंडितों से भी अधिक बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता का परिचय दिया है। उन्होंने ख़ूब अनुसन्धान, खोजें और अविष्कार किये तथा नई बातों को पेश किया बल्कि ये जाति के घमण्ड में अकड़े लोग भी उन्हीं के अविष्कारों का उपयोग कर रहे हैं, उदाहरण के तौर पर - उन्हीं की अविष्कृत प्रिंटिंग प्रेस और इन्टरनेट का उपयोग कर अपनी पुस्तकें छाप रहे हैं।

या तो मलेच्छ को असली ब्राह्मण माना जाए या फ़िर भगवान करे कि पूरी दुनिया ही मलेच्छ या जाति-बाह्य हो जाए।

भारतवर्ष की दासता का एक महत्वपूर्ण कारण यह मूर्खतापूर्ण जन्मना जाति-प्रथा रही है, किसी व्यक्ति को तुच्छ से कारण के लिए ही जाति से बाहर कर दिया जाता रहा लेकिन ऐसे व्यक्ति के लिए पुनः अपना सम्माननीय स्थान पाने की कोई व्यवस्था नहीं की गई - परिणाम काश्मीर, बांग्लादेश और पाकिस्तान के रूप में हमारे सामने है।

दोष ५: सिर्फ कुछ विशिष्ट परिस्थितियों में जाति बदली जा सकती है

कुछ आधुनिक विचारकों के अनुसार मनुष्य के कर्म और उसकी प्रकृति से जाति तय होती है - उसके जन्म से नहीं, जबकि कुछ का कहना है कि किन्हीं विशेष परिस्थितियों में व्यक्ति अपनी जाति बदल सकता है। ये दोनों ही दलीलें दोषपूर्ण हैं, इन दोनों ही दलीलों के अनुसार

किसी तीसरे पक्ष की आवश्यकता होगी जो आपको जाति का प्रमाण-पत्र दे सके। परन्तु, अध्यात्म तो मेरा और मेरे ईश्वर के बीच का विषय है, फ़िर ये तीसरा पक्ष कहाँ से आया, जो मुझे मेरे ईश्वर की आवाज़ को सुनने के तरीके बताए? और ऐसे पक्ष की जाति कौन निर्धारित करेगा?

साथ ही, पुराने समय में प्रत्येक मनुष्य के लिए इन चारों में से कोई एक जाति निर्धारित करना आसान रहा होगा, क्योंकि तब मनुष्यों के व्यवसाय सरल और स्पष्ट हुआ करते थे। परन्तु आज के जटिल काल में ऐसा करना असंभव है, साथ ही यह चार भागों वाला वर्गीकरण बहुत ही स्थूल और प्राथमिक है। उदाहरण के लिए: किसी साफ्टवेअर इंजीनिअर की जाति क्या होगी? कम्प्यूटर टेक्नीशियन की जाति क्या होगी? साईबर हमले से बचानेवाले एंटी वायरस रचयिता की जाति कैसे निर्धारित होगी? ई-कॉमर्स प्लेटफार्म बनानेवाले की जाति क्या होगी? या फ़िर वेतनभोगी प्रोज़ेक्ट मैनेजर की जाति क्या होगी?

इन सब का अनुमानित वर्गीकरण करने का प्रयास केवल वही व्यक्ति कर सकता है जो ठीक से गणित नहीं जानता, वह भी केवल इसलिए क्योंकि किसी जाति-व्यवस्था के समर्थक ने किसी असम्बद्ध ऊलज़लूल पुस्तक में यह लिख रखा है। लेकिन एक खरा मनुष्य यही कहेगा कि वे सब मनुष्य हैं और हर क्षण वे एक नई भूमिका निभाते हैं – कभी ब्राह्मण की (ज्ञान विषयक कार्यों में), कभी क्षत्रिय की (रक्षात्मक कार्यों में), कभी वैश्य की (अर्थ-व्यवस्था के कार्यों में) और कभी शूद्र की (सहयोगात्मक कार्यों में)।

दोष ६: जाति-व्यवस्था हिन्दू धर्म की बुनियाद है, यह दावा

कुछ लोग अपने पक्ष में कहते हैं कि जाति-प्रथा हिन्दू या सनातन धर्म की नींव है, इस सन्दर्भ में वे इतिहास और पुरुष सूक्त की गवाही देते हैं। यदि हम इतिहास की बात करें, तो उनका यह दावा यहीं ख़ारिज हो जाता है – क्योंकि बहुत से काम ऐसे हैं जो हम अब कर रहे हैं जिन्हें हमने इतिहास में कभी किया नहीं और ऐसी कई बातें हैं जिन्हें हमने इतिहास में किया था और अब हमने उन्हीं को नकार दिया है, जैसे बहुविवाह प्रथा और राजवंशों का शासन।

पुरुष-सूक्त का वास्तविक अर्थ हम पहले के अध्याय में देख चुके हैं। साथ ही, हमें यह भी याद रखना चाहिए कि वेद हमें सैंकड़ों प्रारूप देते हैं, यदि हम एक को न समझ पाए तो हमें दूसरा प्रारूप अपनाना चाहिए।

मान लीजिए, यदि मुझे सुपरसोनिक विमान उड़ाना नहीं आता तो मैं कहीं जल्दी पहुँचने के

लिए घुड़सवारी का विकल्प चुनूंगा। लेकिन, अगर मुझे सुपरसोनिक विमान उड़ाना आता है तो मैं किसी ऐतिहासिक या शास्त्रप्रणित (शास्त्रीय) कारण से घोड़ा चलाने की ज़िद नहीं करूँगा, सुपरसोनिक विमान उड़ाने के लिए मुझे घुड़सवारी सीखने की आवश्यकता भी नहीं है।

आइए, हम जातीय वर्गीकरण के इस मूल प्रारूप का बचाव करना बंद करें, इस अन्ध--परम्परा को छोड़ें और जाति-व्यवस्था को जड़ से उखाड़ फेकें। आइए, वेदों के अनुसार चलें – जो हिन्दू धर्म का मूलाधार हैं। हम इस बात को समझें कि जाति-व्यवस्था में कुछ भी हिन्दू या वैदिक नहीं है बल्कि जाति-प्रथा सर्वाधिक अहिंदू और अवैदिक विचार है।

पश्चिमी देशों में १८६५ में दास-प्रथा पर प्रतिबन्ध लगने से पूर्व, वहां हालात पशुओं से भी बदतर थे। फ़िर उन्होंने एक नई शुरुआत की, अपने इस कलंकित इतिहास को उन्होंने महिमामंडित नहीं किया बल्कि उसका प्रायश्चित किया, अतः आज वे विश्व में अग्रणी हैं।

यदि हम भी पुनः विश्व-गुरु बनना चाहते हैं तो हमें हमारी इस भारी भूल को स्वीकार करना ही होगा, जाति-प्रथा को नष्ट करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए।

आइए, हम एक भारत, एक समाज, एक मनुष्य जाति बनें और सिर्फ गुणों के आधार पर ही लोगों की योग्यता का मूल्यांकन करें।

यदि हम ऐसा नहीं करते हैं, तो हम एक ऐसे विचित्र समाज बने रहेंगे जो बुद्धिशाली होकर भी उत्पीडित है और अगर हम इस मूर्खतापूर्ण प्रथा को उखाड़ फ़ेंकते हैं तो हमारी प्रगति को कोई रोक नहीं सकता।

जाति-प्रथा को नकारें और अपनी आन्तरिक दिव्यता को जगाएं।

अध्याय ५

वेदों में जाति-व्यवस्था नहीं

कोई छद्म भगवान ही जीवों को ईमान लानेवाले और ईमान नहीं लानेवाले या ऊँची और नीची जाति में बांट सकता है।

- अग्निवीर

हम यह देख चुके हैं कि वेदों में सभी चार वर्णों को जिनमें 'शूद्र' भी शामिल हैं, 'आर्य' मानकर अत्यंत सम्मान दिया गया है। पर यह हमारा दुर्भाग्य है कि वेदों की इन मौलिक शिक्षाओं को, जो हमारी संस्कृति की आधारशिला हैं, हमने भुला दिया और हम जन्म-आधारित जाति-व्यवस्था को मानने तथा कतिपय शूद्र समझी जाने वाली जातियों में जन्मे व्यक्तियों के साथ भेदभाव पूर्ण व्यवहार करने की गलत अवधारणाओं में फंस गए हैं।

कम्युनिस्ट और पूर्वाग्रह ग्रस्त भारतीय चिंतकों की भ्रामक कपोल कल्पनाओं ने पहले ही समाज में अलगाव के बीज बो कर अत्यंत क्षति पहुंचाई है। अभाग्यवश दलित कहे जाने वाले लोग खुद को समाज की मुख्य धारा से कटा हुआ महसूस करते हैं, फलतः हम समृद्ध और सुरक्षित सामाजिक संगठन में नाकाम रहे हैं। इस का केवल मात्र समाधान यही है कि

हमें अपने मूल - वेदों की ओर लौटना होगा और हमारी पारस्परिक (एक-दूसरे के प्रति) समझ को पुनः स्थापित करना होगा।

जाति-व्यवस्था की वास्तविकता

इस अध्याय में हम वेदों में जाति-व्यवस्था की वास्तविकता और शूद्र के यथार्थ अर्थ का आकलन करेंगे।

जैसे कि हम दूसरे अध्याय "वेद और शूद्र" में चर्चा कर चुके हैं कि वेदों में मूलतः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र पुरुष या स्त्री के लिए कहीं कोई बैरभाव या भेदभाव का स्थान नहीं है।

"जाति (Caste)" क्या है?

जाति (कास्ट) की अवधारणा यदि देखा जाए तो काफ़ी नई है। जाति (कास्ट) के पर्याय के रूप में स्वीकार किया जा सके या अपनाया जा सके, ऐसा एक भी शब्द वेदों में नहीं है। जाति (कास्ट) के नाम पर साधारणतया स्वीकृत दो शब्द हैं - जाति और वर्ण, किन्तु सच यह है कि यह तीनों ही पूर्णतया भिन्न अर्थ रखते हैं।

जाति (कास्ट) की अवधारणा यूरोपियन दिमाग की उपज है, जिसका तनिक अंश भी वैदिक संस्कृति में नहीं मिलता।

"जाति" शब्द का वास्तविक अर्थ क्या है?

जाति का सत्य अर्थ है उद्भव या उद्गम या उत्पत्ति के स्रोत के आधार पर किया गया वर्गी-करण। न्याय सूत्र यही कहता है "समानप्रसवात्मिका जाति:" - जिनके जन्म का मूल स्रोत सामान हो (उत्पत्ति का प्रकार एक जैसा हो) वह एक जाति बनाते हैं।

ऋषियों द्वारा प्राथमिक तौर पर जन्म-जातियों को चार स्थूल विभागों में बांटा गया है –

- उद्भिज - धरती से उगने वाले जैसे - पेड़, पौधे, लता आदि,
- अंडज - अंडे से निकलने वाले जैसे - पक्षी, सरीसृप आदि,
- पिंडज – स्तनधारी - मनुष्य और पशु आदि,
- उष्मज - तापमान तथा परिवेशीय स्थितियों की अनुकूलता के योग से उत्त्पन्न होने वाले जैसे - सूक्ष्म जिवाणू वायरस, बैक्टेरिया आदि।

हर जाति विशेष के प्राणियों में शारीरिक अंगों की समानता पाई जाती है। एक जन्म-जाति दूसरी जाति में कभी भी परिवर्तित नहीं हो सकती है और न ही भिन्न जातियां आपस में संतान उत्त्पन्न कर सकती हैं। अतः जाति ईश्वर निर्मित है।

जैसे विविध प्राणी- हाथी, सिंह, खरगोश इत्यादि भिन्न-भिन्न जातियां हैं, इसी प्रकार संपूर्ण मानव समाज एक जाति है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र किसी भी तरह भिन्न जातियां नहीं हो सकती हैं क्योंकि न तो उनमें परस्पर शारीरिक बनावट अर्थात् इन्द्रियादी का भेद है और न ही उनके जन्म स्रोत में भिन्नता पाई जाती है।

बहुत समय बाद जाति शब्द का प्रयोग किसी भी प्रकार के वर्गीकरण के लिए प्रयुक्त होने लगा और इसीलिए हम सामान्यतया विभिन्न समुदायों को ही अलग जाति कहने लगे। जबकि यह मात्र व्यवहार में सहूलियत के लिए हो सकता है, सनातन सत्य यह है कि सभी मनुष्य एक ही जाति हैं।

“वर्ण” क्या है?

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के लिए प्रयुक्त किया गया सही शब्द ‘वर्ण’ है ‘जाति’ नहीं। सिर्फ यह चारों ही नहीं बल्कि आर्य और दस्यु भी वर्ण कहे गए हैं।

“वर्ण” का मतलब है जिसे वरण किया जाए (चुना जाए)। अतः जाति ईश्वर प्रदत्त है जबकि वर्ण अपनी रूचि से अपनाया जाता है। जिन्होंने आर्यत्व को अपनाया वे आर्य वर्ण कहलाए और जिन लोगों ने दस्यु कर्म को स्वीकारा वे दस्यु वर्ण कहलाए, इसी प्रकार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वर्ण कहे जाते हैं। इसी कारण वैदिक धर्म ‘वर्णाश्रम धर्म’ कहलाता है। वर्ण शब्द का तात्पर्य ही यह है कि वह चयन की पूर्ण स्वतंत्रता व गुणवत्ता पर आधारित है।

बौद्धिक कार्यों में संलग्न व्यक्तियों ने ब्राह्मण वर्ण को अपनाया है। समाज में रक्षा कार्य व युद्धशास्त्र में रूचि और योग्यता रखने वाले क्षत्रिय वर्ण के हैं। व्यापार-वाणिज्य और पशु--पालन आदि का कार्य करने वाले वैश्य तथा जिन्होंने इतर सहयोगात्मक कार्यों का चयन किया है वे शूद्र वर्ण कहलाते हैं। ये मात्र आजीविका के लिए अपनाये जाने वाले व्यवसायों को दर्शाते हैं, इनका जाति या जन्म से कोई सम्बन्ध नहीं है।

"पुरुष सूक्त” प्रमुख आपत्ति?

यह सिद्ध करने के लिए कि वर्ण जन्म आधारित हैं, पुरुष सूक्त के मंत्र प्रस्तुत किये जाते

हैं - ब्राह्मण का जन्म ईश्वर के मुख से हुआ, क्षत्रिय ईश्वर की भुजाओं से जन्मे, वैश्य जंघा से तथा शूद्र ईश्वर के पैरों से उत्पन्न हुए। इस से बड़ा छल नहीं हो सकता, क्योंकि –

वेद ईश्वर को निराकार और अपरिवर्तनीय वर्णित करते हैं। जब परमात्मा निराकार है तो इतने महाकाय व्यक्ति का आकार कैसे ले सकता है? (देखें यजुर्वेद ४०।८)

यदि इसे सच मान भी लें तो इससे वेदों के कर्मफल सिद्धांत की अवमानना होती है। जिसके अनुसार शूद्र परिवार का व्यक्ति भी अपने कर्मों से अगला जन्म किसी राजपरिवार में प्राप्त कर सकता है। परन्तु यदि शूद्रों को पैरों से जन्मा माना जाए तो वही शूद्र पुनः ईश्वर के हाथों से कैसे उत्पन्न होगा?

आत्मा अजन्मा है और समय से बद्ध नहीं - नित्य है, इसलिए आत्मा का कोई वर्ण नहीं होता। यह तो आत्मा द्वारा मनुष्य शरीर धारण किये जाने पर ही वर्ण चुनने का अवसर मिलता है। तो क्या वर्ण ईश्वर के शरीर के किसी हिस्से से आता है? आत्मा कभी ईश्वर के शरीर से जन्म तो लेता नहीं तो क्या ऐसा कहा जा सकता है कि आत्मा का शरीर ईश्वर के शरीर के हिस्सों से बनाया गया? किन्तु वेदों की साक्षी से प्रकृति भी शाश्वत है और कुछ अणु पुनः विभिन्न मानव शरीरों में प्रवाहित होते हैं। अतः यदि परमात्मा को सशरीर मान भी लें तो भी यह असंभव है किसी भी व्यक्ति के लिए कि वह परमात्मा के शरीर से जन्म ले।

"पुरुष सूक्त" का वास्तविक अर्थ

जिस पुरुष सूक्त का हवाला दिया जाता है वह यजुर्वेद के ३१ वें अध्याय में है साथ ही कुछ भेद से ऋग्वेद और अथर्ववेद में भी उपस्थित है। यजुर्वेद में यह ३१ वें अध्याय का ११ वां मंत्र है। इसका वास्तविक अर्थ जानने के लिए इससे पहले के मंत्र ३१।१० पर गौर करना जरूरी है। वहां सवाल पूछा गया है – मुख कौन है? हाथ कौन है? जंघा कौन है? और पांव कौन है?

तुरंत बाद का मंत्र जवाब देता है – ब्राहमण मुख है, क्षत्रिय हाथ हैं, वैश्य जंघा हैं तथा शूद्र पैर हैं।

यह ध्यान रखें कि मंत्र यह नहीं कहता कि ब्राह्मण मुख से "जन्म लेता" है। मंत्र यह कह रहा है कि ब्राह्मण ही मुख है। क्योंकि अगर मंत्र में "जन्म लेता" यह भाव अभिप्रेत होता तो "मुख कौन है?" इत्यादि प्रश्नों का उत्तर देने की आवश्यकता ही नहीं थी। उदाहरणतः यह पूछा जाए, "दशरथ कौन हैं?" और जवाब मिले "राम ने दशरथ से जन्म लिया", तो

यह निरर्थक जवाब है।

इसका सत्य अर्थ है –

समाज में ब्राह्मण या बुद्धिजीवी लोग समाज के मस्तिष्क, सिर या मुख की तरह होते हैं जो सोचने का और बोलने का काम करे। बाहुओं के तुल्य रक्षा करने वाले क्षत्रिय हैं, वैश्य, उत्पादक या व्यापारीगण - जंघा के सामान हैं जो समाज में सहयोग और पोषण प्रदान करते हैं (ध्यान दें उरु अस्थि या फिमर हड्डी शरीर में रक्तकोशिकाओं का निर्माण करती हैं और सबसे सुदृढ़ हड्डी होती है)। अथर्ववेद में उरु या जंघा के स्थान पर 'मध्य' शब्द का प्रयोग हुआ है। जो शरीर के मध्य भाग और उदर का द्योतक है। जिस तरह पैर शरीर के आधार हैं जिन पर शरीर टिक सके और दौड़ सके उसी तरह शूद्र या श्रमिक वर्ग समाज को आधार देकर गति प्रदान करते हैं।

इससे अगले मंत्र इस शरीर के अन्य भाग जैसे मन, आंख इत्यादि का वर्णन करते हैं। पुरुष सूक्त में मानव समाज की उत्पत्ति और संतुलित समाज के लिए आवश्यक मूल तत्वों का वर्णन है।

यह अत्यंत खेदजनक है कि सामाजिक रचना के इतने अप्रतिम आलंकारिक वर्णन का गलत अर्थ लगाकर वैदिक परिपाटी से सर्वथा विरुद्ध विकृत स्वरुप में प्रस्तुत किया गया है।

ब्राह्मण ग्रंथ, मनुस्मृति, महाभारत, रामायण और भागवत में भी कहीं परमात्मा ने ब्राह्मणों को अपने मुख से मांस नोंचकर पैदा किया और क्षत्रियों को हाथ के मांस से इत्यादि ऊल-जूलूल कल्पना नहीं पाई जाती है।

जैसा कि आधुनिक युग में विद्वान और विशेषज्ञ सम्पूर्ण मानवता के लिए मार्गदर्शक होने के कारण हम से सम्मान पाते हैं इसीलिए यह सीधी सी बात है कि क्यों ब्राह्मणों को वेदों में उच्च सम्मान दिया गया है। अपने पूर्व अध्यायों में हम देख चुके हैं कि वेदों में श्रम का भी समान रूप से महत्वपूर्ण स्थान है। अतः वर्ण व्यवस्था में किसी प्रकार के भेदभाव के तत्वों की गुंजाइश नहीं है।

वैदिक संस्कृति में प्रत्येक व्यक्ति जन्मतः शूद्र ही माना जाता है। उसके द्वारा प्राप्त शिक्षा के आधार पर ही ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य वर्ण निर्धारित किया जाता है। शिक्षा पूर्ण करके योग्य बनने को दूसरा जन्म माना जाता है। ये तीनों वर्ण 'द्विज' कहलाते हैं क्योंकि इनका दूसरा जन्म अर्थात् विद्या जन्म होता है। किसी भी कारणवश अशिक्षित रहे मनुष्य शूद्र ही

रहते हुए अन्य वर्णों के सहयोगात्मक कार्यों को अपनाकर समाज का हिस्सा बने रहते हैं।

यदि ब्राह्मण का पुत्र विद्या प्राप्ति में असफल रह जाए तो शूद्र बन जाता है। इसी तरह शूद्र या दस्यु का पुत्र भी विद्या प्राप्ति के उपरांत ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य वर्ण को प्राप्त कर सकता है। यह सम्पूर्ण व्यवस्था विशुद्ध रूप से गुणवत्ता पर आधारित है। जिस प्रकार शिक्षा पूरी करने के बाद आज उपाधियाँ दी जाती हैं उसी प्रकार वैदिक व्यवस्था में यज्ञोपवीत दिया जाता था। प्रत्येक वर्ण के लिए निर्धारित कर्तव्यकर्म का पालन व निर्वहन न करने पर यज्ञोपवीत वापस लेने का भी प्रावधान था।

वैदिक इतिहास में वर्ण परिवर्तन के अनेक प्रमाण

- ऐतरेय ऋषि दास अथवा अपराधी के पुत्र थे। परन्तु उच्च कोटि के ब्राह्मण बने और उन्होंने ऐतरेय ब्राह्मण और ऐतरेय उपनिषद की रचना की। ऋग्वेद को समझने के लिए ऐतरेय ब्राह्मण अतिशय आवश्यक माना जाता है।
- ऐलूष ऋषि दासी पुत्र थे, जुआरी और हीन चरित्र भी थे परन्तु बाद में उन्होंने अध्य-यन किया और ऋग्वेद पर अनुसन्धान करके अनेक अविष्कार किये। ऋषियों ने उन्हें आमंत्रित कर के आचार्य पद पर आसीन किया (ऐतरेय ब्राह्मण २।१९)।
- सत्यकाम जाबाल गणिका (वेश्या) के पुत्र थे परन्तु वे ब्राह्मणत्व को प्राप्त हुए।
- राजा दक्ष के पुत्र पृषध शूद्र हो गए थे, प्रायश्चित स्वरुप तपस्या करके उन्होंने मोक्ष प्राप्त किया (विष्णु पुराण ४।१।१४)। अगर उत्तर रामायण की मिथ्या कथा के अनुसार शूद्रों के लिए तपस्या करना मना होता तो पृषध ये कैसे कर पाए?
- राजा नेदिष्ट के पुत्र नाभाग वैश्य हुए, पुनः इनके कई पुत्रों ने क्षत्रिय वर्ण अपनाया (विष्णु पुराण ४।१।१३)।
- धृष्ट नाभाग के पुत्र थे परन्तु ब्राह्मण हुए और उनके पुत्र ने क्षत्रिय वर्ण अपनाया (विष्णु पुराण ४।२।२)।
- आगे उन्हीं के वंश में पुनः कुछ ब्राह्मण हुए (विष्णु पुराण ४।२।२)।
- भागवत के अनुसार राजपुत्र अग्निवेश्य ब्राह्मण हुए।
- विष्णुपुराण और भागवत के अनुसार रथोतर क्षत्रिय से ब्राह्मण बने।
- हारित क्षत्रियपुत्र से ब्राह्मण हुए (विष्णु पुराण ४।३।५)।
- क्षत्रियकुल में जन्में शौनक ने ब्राह्मणत्व प्राप्त किया (विष्णु पुराण ४।८।१)। वायु,

विष्णु और हरिवंश पुराण कहते हैं कि शौनक ऋषि के पुत्र कर्म भेद से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वर्ण के हुए। इसी प्रकार गृत्समद, गृत्समति और वीतहव्य के उदाहरण हैं।

- मातंग चांडालपुत्र से ब्राह्मण बने।
- ऋषि पुलस्त्य का पौत्र रावण अपने कर्मों से राक्षस बना।
- राजा रघु का पुत्र प्रवृद्ध राक्षस हुआ।
- त्रिशंकु राजा होते हुए भी कर्मों से चांडाल बन गए थे।
- विश्वामित्र के पुत्रों ने शूद्र वर्ण अपनाया। विश्वामित्र स्वयं क्षत्रिय थे परन्तु बाद उन्होंने ब्राह्मणत्व को प्राप्त किया।
- विदुर दासी पुत्र थे तथापि वे ब्राह्मण हुए और उन्होंने हस्तिनापुर साम्राज्य का मंत्री पद सुशोभित किया।

वेदों में 'शूद्र' शब्द लगभग बीस बार आया है। कहीं भी उसका अपमानजनक अर्थों में प्रयोग नहीं हुआ है। वेदों में किसी भी स्थान पर शूद्र के जन्म से अछूत होने, उन्हें वेदाध्ययन से वंचित रखने, अन्य वर्णों से उनका दर्जा कम होने या उन्हें यज्ञादि से अलग रखने का उल्लेख नहीं है।

वेदों में अति परिश्रमी कठिन कार्य करने वाले को शूद्र कहा है ("तपसे शूद्रम"- यजु।३०।५) और इसीलिए पुरुष सूक्त शूद्र को सम्पूर्ण मानव समाज का आधार स्तंभ कहता है।

चार वर्णों से अभिप्राय यही है कि मनुष्य द्वारा चार प्रकार के कर्मों को रूचि पूर्वक अपनाया जाना। वेदों के अनुसार एक ही व्यक्ति विभिन्न परिस्थितियों में चारों वर्णों के गुणों को प्रदर्शित करता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति चारों वर्णों से युक्त है। तथापि हमने अपनी सुविधा के लिए मनुष्य के प्रधान व्यवसाय को वर्ण शब्द से सूचित किया है।

अतः वैदिक ज्ञान के अनुसार सभी मनुष्यों को चारों वर्णों के गुणों को धारण करने का पूर्ण प्रयत्न करना चाहिए। यही पुरुष सूक्त का मूल तत्व है। वेद के वशिष्ठ, विश्वामित्र, अंगीरा, गौतम, वामदेव और कण्व आदि ऋषि चारों वर्णों के गुणों को प्रदर्शित करते हैं। यह सभी ऋषि वेद मंत्रों के द्रष्टा थे (उन्होंने वेद मंत्रों के अर्थ का प्रकाश किया), दस्युओं के संहारक थे, इन्होंने शारीरिक श्रम भी किया तथा हम इन्हें समाज के हितार्थ अर्थ-व्यवस्था का प्रबंधन करते हुए भी पाते हैं।

हमें भी इनका अनुकरण करना चाहिए।

सारांश

वैदिक समाज मानव मात्र को एक ही जाति, एक ही नस्ल मानता है। वैदिक समाज में श्रम का गौरवपूर्ण स्थान है और प्रत्येक व्यक्ति अपनी रूचि से वर्ण चुनने का समान अवसर पाता है। किसी भी किस्म के जन्म-आधारित भेद मूलक तत्व वेदों में नहीं मिलते।

अतः हम भी समाज में व्याप्त जन्म-आधारित भेदभाव को ठुकरा कर, एक दूसरे को भाई-बहन के रूप में स्वीकारें और अखंड समाज की रचना करें।

हमें गुमराह करने के लिए वेदों में जातिवाद के आधारहीन दावे करनेवालों की मंशा को हम सफल न होने दें और समाज के अपराधी बनाम दस्यु या दास या राक्षसों का भी सफ़ाया कर दें।

हम सभी वेदों की छत्र-छाया में एक परिवार की तरह आएं और मानवता को बल प्रदान करें।

भाग २ : मनुस्मृति और शूद्र

अध्याय ६

मनुस्मृति और शूद्र

अपनी कमजोरी स्वीकारना सच्चाई है। लेकिन कमजोर ही बने रहना कायरता है।

-अग्निवीर

आज भारत में अनेक संकट छाए हुए हैं – भ्रष्टाचार, आतंकवाद, कट्टरवाद, धर्मांतरण, नैतिक अध:पतन, अशिक्षा, चरमराई हुई स्वास्थ्य व्यवस्था, सफ़ाई की समस्या वगैरह- वगैरह। परन्तु इन सभी से ज्यादा भयावह है – जन्मना जातिवाद और लिंग भेद।

क्योंकि यह दो मूलभूत समस्याएँ ही बाकी समस्याओं को पनपने में मदद करती हैं। यह दो प्रश्न ही हमारे भूत और वर्तमान की समस्त आपदाओं का मुख्य कारण हैं। इन को मूल से नष्ट नहीं किया तो हमारा उज्ज्वल भविष्य सिर्फ़ एक सपना बनकर रह जाएगा क्योंकि एक समृद्ध और समर्थ समाज का अस्तित्व जाति-प्रथा और लिंग भेद के साथ नहीं हो सकता।

यह भी गौर किया जाना चाहिए कि जाति भेद और लिंग भेद केवल हिन्दू समाज की ही समस्याएँ नहीं हैं किन्तु यह दोनों सांस्कृतिक समस्याएँ हैं। लिंग भेद सदियों से वैश्विक

समस्या रही है और जाति भेद दक्षिण एशिया में पनपी हुई, सभी धर्मों और समाजों को छूती हुई समस्या है। चूँकि हिन्दुत्व सबसे प्राचीन संस्कृति और सभी धर्मों का आदिस्रोत है, इसी पर व्यवस्था को भ्रष्ट करने का आक्षेप मढ़ा जाता है। यदि इन दो कुप्रथाओं को हम ढोते रहते हैं तो समाज इतना दुर्बल हो जाएगा कि विभिन्न सम्प्रदायों और फिरकों में बिखरता रहेगा जिससे देश कमजोर होगा और टूटेगा।

अपनी कमजोरी और विकृतियों के बारे में हमने इतिहास से कोई शिक्षा नहीं ली है। यह आश्चर्य की बात है कि आज की तारीख़ में भी कुछ शिक्षित और बुद्धिवादी कहे जाने वाले लोग इन दो कुप्रथाओं का समर्थन करते हैं। जन्म से ही ऊँचेपन का भाव इतना हावी है कि वह किसी समझदार को भी पागल बना दे।

इस वैचारिक संक्रमण से ग्रस्त कुछ लोग आज हिन्दुत्व के विद्वानों और नेतागणों में भी गिने जा रहे हैं! अनजान बनकर यह लोग इन कुप्रथाओं का समर्थन करने के लिए प्राचीन शास्त्रों का हवाला देते हैं जिस में समाज व्यवस्था देने वाली प्राचीनतम मनुस्मृति को सबसे अधिक केंद्र बनाया जाता है।

मनुस्मृति और दलित आन्दोलन

मनुस्मृति जो सृष्टि में नीति और धर्म (कानून) का निर्धारण करने वाला सबसे पहला ग्रंथ माना गया है उस को घोर जाति-प्रथा को बढ़ावा देने वाला भी बताया जा रहा है। आज स्थिति यह है कि मनुस्मृति वैदिक संस्कृति की सबसे अधिक विवादित पुस्तकों में है। पूरा का पूरा दलित आन्दोलन 'मनुवाद' के विरोध पर ही खड़ा हुआ है।

मनु जाति-प्रथा के समर्थकों के नायक हैं तो दलित नेताओं ने उन्हें खलनायक के सांचे में ढाल रखा है। पिछड़े तबकों के प्रति प्यार का दिखावा कर स्वार्थ की रोटियां सेकने के लिए ही अग्निवेश और मायावती जैसे बहुत से लोगों द्वारा मनुस्मृति जलाई जाती रही है। अपनी विकृत भावनाओं को पूरा करने के लिए नीची जातियों पर अत्याचार करने वाले, एक सींग वाले विद्वान राक्षस के रूप में भी मनु को चित्रित किया गया है। हिन्दुत्व और वेदों को गालियां देने वाले कथित सुधारवादियों के लिए तो मनुस्मृति एक पसंदीदा साधन बन गया है। विधर्मी वायरस पीढ़ियों से हिन्दुओं के धर्मांतरण में इससे फ़ायदा उठाते आए हैं जो आज भी जारी है। ध्यान देने वाली बात यह है कि मनु की निंदा करने वाले इन लोगों ने मनुस्मृति को कभी गंभीरता से पढ़ा भी है कि नहीं।

दूसरी ओर जातीय घमंड में चूर और उच्चता में अकड़े हुए लोगों के लिए मनुस्मृति एक ऐसा

धार्मिक ग्रंथ है जो उन्हें एक विशिष्ट वर्ग में नहीं जन्में लोगों के प्रति सही व्यवहार नहीं करने का अधिकार और अनुमति देता है। ऐसे लोग मनुस्मृति से कुछ एक गलत और भ्रष्ट श्लोकों का हवाला देकर जाति-प्रथा को उचित बताते हैं पर स्वयं की अनुकूलता और स्वार्थ के लिए यह भूलते हैं कि वह जो कह रहे हैं उसे के बिलकुल विपरीत अनेक श्लोक हैं।

इन दोनों शक्तियों के बीच संघर्ष ने आज भारत में निचले स्तर की राजनीति को जन्म दिया है। भारतवर्ष पर लगातार पिछले हजार वर्षों से होते आ रहे आक्रमणों के लिए भी यही जिम्मेदार है। सदियों तक नरपिशाच, गोहत्यारे और पापियों से यह पावन धरती शासित रही। यह अतार्किक जाति-प्रथा ही १९४७ में हमारे देश के बंटवारे का प्रमुख कारण रही है। कभी विश्वगुरु और चक्रवर्ती सम्राटों का यह देश था। आज भी हम में असीम क्षमता और बुद्धि धन है, फ़िर भी हम समृद्धि और सामर्थ्य की ओर अपने देश को नहीं ले जा पाए और निर्बल और निराधार खड़े हैं – इस का प्रमुख कारण यह मलिन जाति-प्रथा है। इसलिए मनुस्मृति की सही परिपेक्ष्य में जाँच- परख़ अत्यंत आवश्यक हो जाती है।

मनुस्मृति पर लगाये जाने वाले तीन मुख्य आक्षेप

- मनु ने जन्म के आधार पर जातिप्रथा का निर्माण किया।
- मनु ने शूद्रों के लिए कठोर दंड का विधान किया और ऊँची जाति खासकर ब्राह्मणों के लिए विशेष प्रावधान रखे।
- मनु नारी का विरोधी था और उनका तिरस्कार करता था। उसने स्त्रियों के लिए पुरुषों से कम अधिकार का विधान किया।

आइये, अब मनुस्मृति के साक्ष्यों पर ही हम इन आक्षेपों की समीक्षा करें। इस अध्याय में हम पहले आरोप – मनु द्वारा जन्म आधारित जाति-प्रथा के निर्माण पर विचार करेंगे।

मनुस्मृति और जाति व्यवस्था

मनुस्मृति उस काल की है जब जन्मना जाति-व्यवस्था के विचार का भी कोई अस्तित्व नहीं था। अत: मनुस्मृति जन्मना समाज व्यवस्था का कहीं भी समर्थन नहीं करती। महर्षि मनु ने मनुष्य के गुण-कर्म–स्वभाव पर आधारित समाज व्यवस्था की रचना कर के वेदों में परमात्मा द्वारा दिए गए आदेश का ही पालन किया है (देखें – ऋग्वेद-१०।१०।११-१२, यजुर्वेद-३१।१०-११, अथर्ववेद-१९।६।५-६)

यह वर्ण व्यवस्था है। वर्ण शब्द “वृञ” धातु से बनता है जिसका मतलब है चयन या चुनना

और सामान्यत: प्रयुक्त शब्द वरण भी यही अर्थ रखता है। जैसे वर अर्थात् कन्या द्वारा चुना गया पति, जिससे पता चलता है कि वैदिक व्यवस्था कन्या को अपना पति चुनने का पूर्ण अधिकार देती है।

मनुस्मृति में वर्ण व्यवस्था को ही बताया गया है और जाति-व्यवस्था को नहीं इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि मनुस्मृति के प्रथम अध्याय में कहीं भी जाति या गोत्र शब्द ही नहीं है बल्कि वहां चार वर्णों की उत्पत्ति का वर्णन है। यदि जाति या गोत्र का इतना ही महत्व होता तो मनु इसका उल्लेख अवश्य करते कि कौन सी जाति ब्राह्मणों से संबंधित है, कौन सी क्षत्रियों से, कौन सी वैश्यों और कौन सी शूद्रों से।

इस का मतलब हुआ कि स्वयं को जन्म से ब्राह्मण या उच्च जाति का मानने वालों के पास इसका कोई प्रमाण नहीं है। ज्यादा से ज्यादा वे इतना बता सकते हैं कि कुछ पीढ़ियों पहले से उनके पूर्वज स्वयं को ऊँची जाति का कहलाते आए हैं। ऐसा कोई प्रमाण नहीं है कि सभ्यता के आरंभ से ही यह लोग ऊँची जाति के थे। जब वह यह साबित नहीं कर सकते तो उनको यह कहने का क्या अधिकार है कि आज जिन्हें जन्मना शूद्र माना जाता है, वह कुछ पीढ़ियों पहले ब्राह्मण नहीं थे? और स्वयं जो अपने को ऊँची जाति का कहते हैं वे कुछ पीढ़ियों पहले शूद्र नहीं थे!

मनुस्मृति ३।१०९

इस में साफ़ कहा है कि अपने गोत्र या कुल की दुहाई देकर भोजन करने वाले को स्वयं का उगलकर खाने वाला माना जाए।

अतः मनुस्मृति के अनुसार जो जन्मना ब्राह्मण या ऊँची जाति वाले अपने गोत्र या वंश का हवाला देकर स्वयं को बड़ा कहते हैं और मान-सम्मान की अपेक्षा रखते हैं उन्हें तिरस्कृत किया जाना चाहिए।

मनुस्मृति २।१३६

धनी होना, बांधव होना, आयु में बड़े होना, श्रेष्ठ कर्म का होना और विद्वत्ता यह पाँच - सम्मान के उत्तरोत्तर मानदंड हैं।

इन में कहीं भी कुल, जाति, गोत्र या वंश को सम्मान का मानदंड नहीं माना गया है।

वर्णों में परिवर्तन

मनुस्मृति १०।६५

ब्राह्मण शूद्र बन सकता और शूद्र ब्राह्मण हो सकता है। इसी प्रकार क्षत्रिय और वैश्य भी अपने वर्ण बदल सकते हैं।

मनुस्मृति ९।३३५

शरीर और मन से शुद्ध-पवित्र रहने वाला, उत्कृष्ट लोगों के सानिध्य में रहने वाला, मधुरभाषी, अहंकार से रहित, अपने से उत्कृष्ट वर्ण वालों की सेवा करने वाला शूद्र भी उत्तम ब्रह्म जन्म और द्विज वर्ण को प्राप्त कर लेता है।

मनुस्मृति के अनेक श्लोक कहते हैं कि उच्च वर्ण का व्यक्ति भी यदि श्रेष्ठ कर्म नहीं करता, तो वह - शूद्र (अशिक्षित) बन जाता है। उदाहरण-

मनुस्मृति २।१०३

जो मनुष्य नित्य प्रात: और सांय ईश्वर आराधना नहीं करता उसको शूद्र समझना चाहिए।

मनुस्मृति २।१७२

जब तक व्यक्ति वेदों की शिक्षाओं में दीक्षित नहीं होता वह शूद्र के ही समान है।

मनुस्मृति ४।२४५

ब्राह्मण वर्णस्थ व्यक्ति श्रेष्ठ व्यक्तियों का संग करते हुए और नीच व्यक्तिओं का संग छोड़कर अधिक श्रेष्ठ बनता जाता है। इसके विपरीत आचरण से पतित होकर वह शूद्र बन जाता है।

अतः स्पष्ट है कि ब्राह्मण उत्तम कर्म करने वाले विद्वान व्यक्ति को कहते हैं और शूद्र का अर्थ अशिक्षित व्यक्ति है। इसका, किसी भी तरह जन्म से कोई सम्बन्ध नहीं है।

मनुस्मृति २।१६८

जो ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य वेदों का अध्ययन और पालन छोड़कर अन्य विषयों में ही परिश्रम करता है, वह शूद्र बन जाता है। उसकी आने वाली पीढ़ियों को भी वेदों के ज्ञान से वंचित होना पड़ता है।

अतः मनुस्मृति के अनुसार तो आज भारत में कुछ अपवादों को छोड़कर बाकी सारे लोग जो भ्रष्टाचार, जातिवाद, स्वार्थ साधना, अन्धविश्वास, विवेकहीनता, लिंग-भेद, चापलूसी, अनैतिकता इत्यादि में लिप्त हैं – वे सभी शूद्र हैं।

मनुस्मृति २।१२६

भले ही कोई ब्राह्मण हो, लेकिन अगर वह अभिवादन का शिष्टता से उत्तर देना नहीं जानता तो वह शूद्र (अशिक्षित व्यक्ति) ही है।

शूद्र भी पढ़ा सकते हैं

शूद्र भले ही अशिक्षित हों तब भी उनसे कौशल और उनका विशेष ज्ञान प्राप्त किया जाना चाहिए।

मनुस्मृति २।२३८

अपने से न्यून व्यक्ति से भी विद्या को ग्रहण करना चाहिए और नीच कुल में जन्मी उत्तम स्त्री को भी पत्नी के रूप में स्वीकार कर लेना चाहिए।

मनुस्मृति २।२४१

आवश्यकता पड़ने पर अ-ब्राह्मण से भी विद्या प्राप्त की जा सकती है और शिष्यों को पढ़ाने के दायित्व का पालन वह गुरु जब तक निर्देश दिया गया हो तब तक करे।

ब्राह्मणत्व का आधार कर्म

मनु की वर्ण व्यवस्था जन्म से ही कोई वर्ण नहीं मानती। मनुस्मृति के अनुसार माता-पिता को बच्चों के बाल्यकाल में ही उनकी रूचि और प्रवृत्ति को पहचान कर ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य वर्ण का ज्ञान और प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए भेज देना चाहिए।

कई ब्राह्मण माता- पिता अपने बच्चों को ब्राह्मण ही बनाना चाहते हैं परंतु इस के लिए व्यक्ति में ब्राह्मणोचित गुण, कर्म, स्वभाव का होना अति आवश्यक है। ब्राह्मण वर्ण में जन्म लेने मात्र से या ब्राह्मणत्व का प्रशिक्षण किसी गुरुकुल में प्राप्त कर लेने से ही कोई ब्राह्मण नहीं बन जाता, जब तक कि उसकी योग्यता, ज्ञान और कर्म ब्राह्मणोचित न हों।

मनुस्मृति २।१५७

जैसे लकड़ी से बना हाथी और चमड़े का बनाया हुआ हरिण सिर्फ़ नाम के लिए ही हाथी और

हरिण कहे जाते हैं वैसे ही बिना पढ़ा ब्राह्मण मात्र नाम का ही ब्राह्मण होता है।

मनुस्मृति २।२८

पढने-पढ़ाने से, चिंतन-मनन करने से, ब्रह्मचर्य, अनुशासन, सत्यभाषण आदि व्रतों का पालन करने से, परोपकार आदि सत्कर्म करने से, वेद, विज्ञान आदि पढने से, कर्तव्य का पालन करने से, दान करने से और आदर्शों के प्रति समर्पित रहने से मनुष्य का यह शरीर ब्राह्मण किया जाता है।

शिक्षा ही वास्तविक जन्म

मनु के अनुसार मनुष्य का वास्तविक जन्म विद्या प्राप्ति के उपरांत ही होता है। जन्मतः प्रत्येक मनुष्य शूद्र या अशिक्षित है। ज्ञान और संस्कारों से स्वयं को परिष्कृत कर योग्यता हासिल कर लेने पर ही उसका दूसरा जन्म होता है और वह द्विज कहलाता है। शिक्षा प्राप्ति में असमर्थ रहने वाले शूद्र ही रह जाते हैं।

यह पूर्णत: गुणवत्ता पर आधारित व्यवस्था है, इसका शारीरिक जन्म या अनुवांशिकता से कोई लेना-देना नहीं है।

मनुस्मृति २।१४८

वेदों में पारंगत आचार्य द्वारा शिष्य को गायत्री मंत्र की दीक्षा देने के उपरांत ही उसका वास्तविक मनुष्य जन्म होता है। यह जन्म मृत्यु और विनाश से रहित होता है। ज्ञानरुपी जन्म में दीक्षित होकर मनुष्य मुक्ति को प्राप्त कर लेता है। यही मनुष्य का वास्तविक उद्देश्य है। सुशिक्षा के बिना मनुष्य ‘मनुष्य’ नहीं बनता।

इसलिए ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य होने की बात तो छोडो जब तक मनुष्य अच्छी तरह शिक्षित नहीं होगा तब तक उसे मनुष्य भी नहीं माना जाएगा।

मनुस्मृति २।१४६

जन्म देने वाले पिता से ज्ञान देने वाला आचार्य रूप पिता ही अधिक बड़ा और माननीय है, आचार्य द्वारा प्रदान किया गया ज्ञान मुक्ति तक साथ देता है। पिता द्वारा प्राप्त शरीर तो इस जन्म के साथ ही नष्ट हो जाता है।

मनुस्मृति २।१४७

माता-पिता से उत्पन्न संतति का माता के गर्भ से प्राप्त जन्म साधारण जन्म है, वास्तविक जन्म तो शिक्षा पूर्ण कर लेने के उपरांत ही होता है।

अत: अपनी श्रेष्ठता साबित करने के लिए कुल का नाम आगे धरना मनु के अनुसार अत्यंत मूर्खतापूर्ण कृत्य है। अपने कुल का नाम आगे रखने की बजाए व्यक्ति यह दिखा दे कि वह कितना शिक्षित है तो बेहतर होगा।

मनुस्मृति १०।४

ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य, ये तीन वर्ण विद्याध्ययन से दूसरा जन्म प्राप्त करते हैं। विद्याध्ययन न कर पाने वाला शूद्र, चौथा वर्ण है। इन चार वर्णों के अतिरिक्त आर्यों में या श्रेष्ठ मनुष्यों में पांचवा कोई वर्ण नहीं है।

इस का मतलब है कि अगर कोई अपनी शिक्षा पूर्ण नहीं कर पाया तो वह दुष्ट नहीं हो जाता। उस के कृत्य यदि भले हैं तो वह अच्छा इन्सान कहा जाएगा और अगर वह शिक्षा भी पूरी कर ले तो वह भी द्विज गिना जाएगा। अत: शूद्र मात्र एक विशेषण है, किसी जाति विशेष का नाम नहीं।

'नीच' कुल में जन्में व्यक्ति का तिरस्कार नहीं

किसी व्यक्ति का जन्म यदि ऐसे कुल में हुआ हो, जो समाज में आर्थिक या अन्य दृष्टी से पनप न पाया हो तो उस व्यक्ति को केवल कुल के कारण पिछड़ना न पड़े और वह अपनी प्रगति से वंचित न रह जाए, इसके लिए भी महर्षि मनु ने नियम निर्धारित किए हैं।

मनुस्मृति ४।१४१

अपंग, अशिक्षित, बड़ी आयु वाले, रूप और धन से रहित या निचले कुल वाले, इन को आदर और/या अधिकार से वंचित न करें। क्योंकि यह किसी व्यक्ति की परख के मापदण्ड नहीं हैं।

प्राचीन इतिहास में वर्ण परिवर्तन के उदाहरण

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वर्ण की सैद्धांतिक अवधारणा गुणों के आधार पर है, जन्म के आधार पर नहीं। यह बात सिर्फ़ कहने के लिए ही नहीं है, प्राचीन समय में इस का व्यवहार में चलन था। जब से इस गुणों पर आधारित वैज्ञानिक व्यवस्था को हमारे दिग्भ्रमित

पुरखों ने मूर्खतापूर्ण जन्मना व्यवस्था में बदला है, तब से ही हम पर आफत आ पड़ी है जिस का सामना हम आज भी कर रहें हैं।

वर्ण परिवर्तन के कुछ उदाहरण –

- ऐतरेय ऋषि दास अथवा अपराधी के पुत्र थे। परन्तु उच्च कोटि के ब्राह्मण बने और उन्होंने ऐतरेय ब्राह्मण और ऐतरेय उपनिषद की रचना की। ऋग्वेद को समझने के लिए ऐतरेय ब्राह्मण अतिशय आवश्यक माना जाता है।
- ऐलूष ऋषि दासी पुत्र थे, जुआरी और हीन चरित्र भी थे। परन्तु बाद में उन्होंने अध्य-यन किया और ऋग्वेद पर अनुसन्धान करके अनेक अविष्कार किये। ऋषियों ने उन्हें आमंत्रित कर के आचार्य पद पर आसीन किया (ऐतरेय ब्राह्मण २।१९)।
- सत्यकाम जाबाल गणिका (वेश्या) के पुत्र थे परन्तु वे ब्राह्मण त्व को प्राप्त हुए।
- राजा दक्ष के पुत्र पृषध शूद्र हो गए थे, प्रायश्चित स्वरुप तपस्या करके उन्होंने मोक्ष प्राप्त किया(विष्णु पुराण ४।१।१४)। अगर उत्तर रामायण की मिथ्या कथा के अनुसार शूद्रों के लिए तपस्या करना मना होता तो पृषध ये कैसे कर पाए?
- राजा नेदिष्ट के पुत्र नाभाग वैश्य हुए। पुनः इनके कई पुत्रों ने क्षत्रिय वर्ण अपनाया (विष्णु पुराण ४।१।१३)।
- धृष्ट नाभाग के पुत्र थे परन्तु ब्राह्मण हुए और उनके पुत्र ने क्षत्रिय वर्ण अपनाया (विष्णु पुराण ४।२।२)।
- आगे उन्हींके वंश में पुनः कुछ ब्राह्मण हुए (विष्णु पुराण ४।२।२)।
- भागवत के अनुसार राजपुत्र अग्निवेश्य ब्राह्मण हुए।
- विष्णुपुराण और भागवत के अनुसार रथोतर क्षत्रिय से ब्राह्मण बने।
- हारित क्षत्रियपुत्र से ब्राह्मण हुए (विष्णु पुराण ४।३।५)।
- क्षत्रियकुल में जन्में शौनक ने ब्राह्मणत्व प्राप्त किया (विष्णु पुराण ४।८।१)। वायु, विष्णु और हरिवंश पुराण कहते हैं कि शौनक ऋषि के पुत्र कर्म भेद से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वर्ण के हुए। इसी प्रकार गृत्समद, गृत्समति और वीतहव्य के उदाहरण हैं।
- मातंग चांडाल पुत्र से ब्राह्मण बने।
- ऋषि पुलस्त्य का पौत्र रावण अपने कर्मों से राक्षस बना।

- राजा रघु का पुत्र प्रवृद्ध राक्षस हुआ।
- त्रिशंकु राजा होते हुए भी कर्मों से चांडाल बन गए थे।
- विश्वामित्र के पुत्रों ने शूद्र वर्ण अपनाया। विश्वामित्र स्वयं क्षत्रिय थे परन्तु बाद में उन्होंने ब्राह्मणत्व को प्राप्त किया।
- विदुर दासी पुत्र थे तथापि वे ब्राह्मण हुए और उन्होंने हस्तिनापुर साम्राज्य का मंत्री पद सुशोभित किया।
- वत्स शूद्र कुल में उत्पन्न होकर भी ऋषि बने (ऐतरेय ब्राह्मण २।१९)।
- मनुस्मृति के प्रक्षिप्त श्लोकों से भी पता चलता है कि कुछ क्षत्रिय जातियां - शूद्र बन गईं। वर्ण परिवर्तन की साक्षी देने वाले यह श्लोक मनुस्मृति में बहुत बाद के काल में मिलाए गए हैं। इन परिवर्तित जातियों के नाम हैं – पौण्ड्रक, औड्र, द्रविड, कम्बोज, यवन, शक, पारद, पल्हव, चीन, किरात, दरद, खश।
- महाभारत अनुसन्धान पर्व (३५।१७-१८) इसी सूची में कई अन्य नामों को भी शामिल करता है – मेकल, लाट, कान्वशिरा, शौण्डिक, दार्व, चौर, शबर, बर्बर।

आज भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और दलितों में समान गोत्र मिलते हैं। इस से पता चलता है कि यह सब एक ही पूर्वज, एक ही कुल की संतान हैं। लेकिन कालांतर में वर्ण व्यवस्था गड़बड़ा गई और यह लोग अनेक जातियों में बंट गए।

शूद्रों के प्रति आदर

मनु परम मानवीय थे। वे जानते थे कि सभी शूद्र जानबूझ कर शिक्षा की उपेक्षा नहीं कर सकते। जो किसी भी कारण से जीवन के प्रथम पर्व में ज्ञान और शिक्षा से वंचित रह गया हो, उसे जीवन भर इसकी सज़ा न भुगतनी पड़े इसलिए वे समाज में शूद्रों के लिए उचित सम्मान का विधान करते हैं। उन्होंने शूद्रों के प्रति कभी अपमान सूचक शब्दों का प्रयोग नहीं किया, बल्कि मनुस्मृति में कई स्थानों पर शूद्रों के लिए अत्यंत सम्मानजनक शब्द आए हैं।

मनु की दृष्टी में ज्ञान और शिक्षा के अभाव में शूद्र समाज का सबसे अबोध घटक है, जो परिस्थितिवश भटक सकता है। अत: वे समाज को उसके प्रति अधिक सहृदयता और सहानुभूति रखने को कहते हैं।

कुछ और उदात्त उदाहरण देखें –

मनुस्मृति ३।११२

शूद्र या वैश्य के अतिथि रूप में आ जाने पर परिवार उन्हें सम्मान सहित भोजन कराए।

मनुस्मृति ३।११६

अपने सेवकों (शूद्रों) को पहले भोजन कराने के बाद ही दंपत्ति भोजन करें।

मनुस्मृति २।१३७

धन, बंधू, कुल, आयु, कर्म, श्रेष्ठ विद्या से संपन्न व्यक्तियों के होते हुए भी वृद्ध शूद्र को पहले सम्मान दिया जाना चाहिए।

मनुस्मृति वेदों पर आधारित

वेदों को छोड़कर अन्य कोई ग्रंथ मिलावटों से बचा नहीं है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है और सभी विद्याएँ उसी से निकली हैं। उन्हीं को आधार मानकर ऋषियों ने अन्य ग्रंथ बनाए। वेदों का स्थान और प्रमाणिकता सबसे ऊपर है और उनके रक्षण से ही आगे भी जगत में नए सृजन संभव हैं। अत: अन्य सभी ग्रंथ स्मृति, ब्राह्मण, महाभारत, रामायण, गीता, उपनिषद, आयुर्वेद, नीतिशास्त्र, दर्शन इत्यादि को परखने की कसौटी वेद ही हैं और जहां तक ये ग्रन्थ वेदानुकूल हैं वहीं तक मान्य हैं।

मनु भी वेदों को ही धर्म का मूल मानते हैं (मनुस्मृति २।८-२।११)।

मनुस्मृति २।८

विद्वान मनुष्य को अपने ज्ञान चक्षुओं से सब कुछ वेदों के अनुसार परखते हुए, कर्तव्य का पालन करना चाहिए।

इस से साफ़ है कि मनु के विचार, उनकी मूल रचना वेदानुकूल ही है और मनुस्मृति में वेद विरुद्ध मिलने वाली मान्यताएं प्रक्षिप्त मानी जानी चाहिएं।

शूद्रों को भी वेद पढने और वैदिक संस्कार करने का अधिकार

वेद में ईश्वर कहता है कि मेरा ज्ञान सबके लिए समान है चाहे पुरुष हो या नारी, ब्राह्मण हो या शूद्र सबको वेद पढने और यज्ञ करने का अधिकार है। देखें – यजुर्वेद २६।१, ऋग्वेद १०।५३।४, निरुक्त ३।८ इत्यादि।

मनुस्मृति भी यही कहती है। मनु ने शूद्रों को उपनयन (विद्या आरंभ) से वंचित नहीं रखा है। इसके विपरीत उपनयन से इंकार करने वाला ही शूद्र कहलाता है।

वेदों के ही अनुसार मनु शासकों के लिए विधान करते हैं कि वे शूद्रों का वेतन और भत्ता किसी भी परिस्थिति में न काटें (७।१२-१२६, ८।२१६)।

संक्षेप में

मनु को जन्मना जाति– व्यवस्था का जनक मानना निराधार है। इसके विपरीत मनु मनुष्य की पहचान में जन्म या कुल की सख्त उपेक्षा करते हैं। मनु की वर्ण व्यवस्था पूरी तरह गुणवत्ता पर टिकी हुई है।

प्रत्येक मनुष्य में चारों वर्ण हैं – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। मनु ने ऐसा प्रयत्न किया है कि प्रत्येक मनुष्य में विद्यमान जो सबसे सशक्त वर्ण है – जैसे किसी में ब्राह्मणत्व ज्यादा है, किसी में क्षत्रियत्व इत्यादि का विकास हो और यह विकास पूरे समाज के विकास में सहायक हो।

अगले अध्याय में हम मनु पर थोपे गए अन्य आरोप जैसे शूद्रों के लिए कठोर दंड विधान की सच्चाई को जानेंगे। लेकिन मनु पाखंडी और आचरणहीनों के लिए क्या कहते हैं, यह भी देख लेते हैं –

मनुस्मृति ४।३०: पाखंडी, गलत आचरण वाले, छली–कपटी, धूर्त, दुराग्रही, झूठ बोलने वाले लोगों का सत्कार वाणी मात्र से भी न करना चाहिए।

जन्मना जाति व्यवस्था को मान्य करने की प्रथा एक सभ्य समाज के लिए कलंक है और अत्यंत छल-कपट वाली, विकृत और झूठी व्यवस्था है। वेद और मनु को मानने वालों को इस घिनौनी प्रथा का सशक्त प्रतिकार करना चाहिए। शब्दों में भी उसके प्रति अच्छा भाव रखना मनु के अनुसार घृणित कृत्य है।

मनुस्मृति के जातिवाद और लिंग-भेद को समर्थन करने वाले श्लोक

प्रश्न: मनुस्मृति से ऐसे सैंकड़ों श्लोक दिए जा सकते हैं, जिन्हें जन्मना जातिवाद और लिंग--भेद के समर्थन में पेश किया जाता है। क्या आप बतायेंगे कि इन सब को कैसे प्रक्षिप्त माना जाए ?

अग्निवीर: यही तो सोचने वाली बात है कि मनुस्मृति में जन्मना जातिवाद के विरोधी और समर्थक दोनों तरह के श्लोक कैसे हैं? इस का मतलब मनुस्मृति का गहराई से अध्ययन और परीक्षण किए जाने की आवश्यकता है।

आइये संक्षेप में देखें –

१. आज मिलने वाली मनुस्मृति में बड़ी मात्रा में मनमाने प्रक्षेप पाए जाते हैं, जो बहुत बाद के काल में मिलाए गए। वर्तमान मनुस्मृति लगभग साठ प्रतिशत नकली है।

२. सिर्फ़ मनुस्मृति ही प्रक्षिप्त नहीं है। वेदों को छोड़ कर जो अपनी अद्भुत स्वर और पाठ रक्षण पद्धतियों के कारण आज भी अपने मूल स्वरुप में है, लगभग अन्य सभी सम्प्रदायों के ग्रंथों में स्वाभाविकता से परिवर्तन, मिलावट या हटावट की जा सकती है। जिनमें रामायण, महाभारत, बाइबिल, कुरान इत्यादि भी शामिल हैं। भविष्य पुराण में तो मिलावट का सिलसिला छपाई के आने तक चलता रहा।

३. आज रामायण के तीन संस्करण मिलते हैं – १. दाक्षिणात्य २.पश्चिमोत्तरीय ३.गौडीय और यह तीनों ही भिन्न हैं। गीता प्रेस, गोरखपुर ने भी रामायण के कई सर्ग प्रक्षिप्त नाम से चिन्हित किए हैं। कई विद्वान बालकाण्ड और उत्तरकाण्ड के अधिकांश भाग को प्रक्षिप्त मानते हैं।

महाभारत भी अत्यधिक प्रक्षिप्त हो चुका ग्रंथ है। गरुड़ पुराण (ब्रह्मकांड १।५४) में कहा गया है कि कलियुग के इस समय में धूर्त स्वयं को ब्राह्मण बताकर महाभारत में से कुछ श्लोकों को निकाल रहे हैं और नए श्लोक बना कर डाल रहे हैं।

महाभारत का शांतिपर्व (२६५।९।४) स्वयं कह रहा है कि वैदिक ग्रंथ स्पष्ट रूप से शराब, मछली, मांस का निषेध करते हैं। इन सब को धूर्तों ने प्रचलित कर दिया है, जिन्होंने छल--कपट से ऐसे श्लोक बनाकर शास्त्रों में मिला दिए हैं।

मूल बाइबिल जिसे कभी किसी ने देखा हो वह आज अस्तित्व में ही नहीं है। हमने उसके अनुवाद के अनुवाद के अनुवाद ही देखे हैं।

कुरान भी मुहम्मद के उपदेशों की परिवर्तित आवृत्ति ही है, ऐसा कहा जाता है।

इसलिए इस में कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि मनुस्मृति जो सामाजिक व्यवस्थाओं पर सबसे प्राचीन ग्रंथ है उसमें भी अनेक परिवर्तन किए गए हों। यह सम्भावना अधिक इसलिए है कि मनुस्मृति सर्व साधारण के दैनिक जीवन को, पूरे समाज को और राष्ट्र की राजनीति को प्रभावित करने वाला ग्रंथ रहा है। यदि देखा जाए तो सदियों तक वह एक प्रकार से मनुष्य जाति का संविधान ही रहा है। इसलिए धूर्तों और मक्कारों के लिए मनु स्मृति में प्रक्षेप करने के बहुत सारे प्रलोभन थे।

४. मनुस्मृति का पुनरावलोकन करने पर चार प्रकार के प्रक्षेप दिखायी देते हैं – विस्तार करने के लिए, स्वप्रयोजन की सिद्धी के लिए, अतिश्योक्ति या बढ़ा- चढ़ा कर बताने के लिए, दूषित करने के लिए, अधिकतर प्रक्षेप सीधे- सीधे दिख ही रहे हैं।

डॉक्टर। सुरेन्द्र कुमार ने मनुस्मृति का विस्तृत और गहन अध्ययन किया है। जिसमें प्रत्येक श्लोक का भिन्न- भिन्न रीतियों से परीक्षण और पृथक्करण किया है ताकि प्रक्षिप्त श्लोकों को अलग से जांचा जा सके। उन्होंने मनुस्मृति के २६८५ में से १४७१ श्लोक प्रक्षिप्त पाए हैं।

प्रक्षेपों का वर्गीकरण वे इस प्रकार करते हैं –

- विषय से बाहर की कोई बात हो।
- संदर्भ से विपरीत हो या भिन्न हो।
- पहले जो कहा गया, उसके विरुद्ध हो या पूर्वापार सम्बन्ध न हो।
- पुनरावर्तन हो।
- भाषा की विभिन्न शैली और प्रयोग हो।
- वेद विरुद्ध हो।

५. डॉक्टर सुरेन्द्र कुमार ही नहीं बल्कि बहुत से पाश्चात्य विद्वान जैसे मैकडोनल, कीथ, बुलहर इत्यादि भी मनुस्मृति में मिलावट मानते हैं।

६. डॉक्टर अम्बेडकर भी प्राचीन ग्रंथों में मिलावट स्वीकार करते हैं। वे रामायण, महाभारत, गीता, पुराण और वेदों तक में भी प्रक्षेप मानते हैं। मनुस्मृति के परस्पर विरोधी, असंगत श्लोकों को उन्होंने कई स्थानों पर दिखाया भी है। वे जानते थे कि मनुस्मृति में कहां-कहां प्रक्षेप हैं। किंतु उनके मर्म को न समझ कर आज का छद्म दलितवाद शुरू हो गया।

तथाकथित आर्यसमाजी स्वामी अग्निवेश जो अपनी अनुकूलता के लिए ही यह भूलते हैं कि महर्षि दयानंद ने जो समाज की रचना का सपना देखा था वह महर्षि मनु की वर्ण व्यवस्था के अनुसार ही था और उन्होंने प्रक्षिप्त हिस्सों को छोड़ कर अपने ग्रंथों में सर्वाधिक प्रमाण (५१४ श्लोक) मनुस्मृति से दिए हैं। स्वामी अग्निवेश ने सिर्फ़ राजनीतिक प्रसिद्धि पाने के लिये ही मनुस्मृति का दहन किया।

निष्कर्ष

मनुस्मृति में बहुत अधिक मात्रा में मिलावट हुई है। परंतु इस मिलावट को आसानी से पह-

चानकर अलग किया जा सकता है। प्रक्षेपण रहित मूल मनुस्मृति अत्युत्तम कृति है, जिसकी गुण- कर्म- स्वभाव आधारित व्यवस्था मनुष्य और समाज को बहुत ऊँचा उठाने वाली है।

मूल मनुस्मृति वेदों की मान्यताओं पर आधारित है।

आज मनुस्मृति का विरोध उनके द्वारा किया जा रहा है जिन्होंने मनुस्मृति को कभी गंभीरता से पढ़ा नहीं और केवल वोट बैंक की राजनीति के चलते विरोध कर रहे हैं।

सही मनुवाद जन्मना जाति-प्रथा को पूरी तरह नकारता है और इसका पक्ष लेने वाले के लिए कठोर दण्ड का विधान करता है। जो लोग बाकी लोगों से सभी मायनों में समान हैं, उनके लिए ”दलित” शब्द का प्रयोग सच्चे मनुवाद के ख़िलाफ़ है।

आइए, हम सब जन्मना जातिवाद को समूल नष्ट कर, वास्तविक मनुवाद की गुणों पर आधारित कर्मणा वर्ण व्यवस्था को लाकर मानवता और राष्ट्र का रक्षण करें।

महर्षि मनु जाति, जन्म, लिंग, क्षेत्र, मत- सम्प्रदाय, इत्यादि सबसे मुक्त सत्य धर्म का पालन करने के लिए कहते हैं –

मनुस्मृति ८।१७

इस संसार में एक धर्म ही साथ चलता है और सब पदार्थ और साथी शरीर के नाश के साथ ही नाश को प्राप्त होते हैं, सब का साथ छूट जाता है – परंतु धर्म का साथ कभी नहीं छूटता।

अध्याय ७

मनुस्मृति और दंडविधान

मासूम तुम्हें 'स्नेह' से पहचानें, दुष्ट तुम्हारे 'बल' से कांपें।

- अग्निवीर

इस संक्षिप्त अध्याय में हम महर्षि मनु पर लगाये गए एक और आरोप – शूद्रों के लिए कठोर दण्ड का विधान करना तथा ऊँची जाति, खासतौर से ब्राह्मणों के लिए कानून में विशेष प्रावधान रखना के बारे में विचार करेंगे।

पहले अध्याय मनुस्मृति और शूद्र में हम ने देखा कि मनुस्मृति के २६८५ में से १४७१ श्लोक प्रक्षिप्त पाए गए हैं – मतलब आधी से ज्यादा मनुस्मृति मिलावटी है।

अत: सभी वह श्लोक जो ऊँची जाति को विशेष सहूलियत देने तथा शूद्रों के लिए कठोर दण्ड का विधान करने वाले हैं – इन मनमानी मिलावटों का ही हिस्सा हैं और उन्हें आसानी से पहचाना जा सकता है।

यदि, हम वेदों पर आधारित मूल मनुस्मृति का अवलोकन करें तो हम पाएंगे कि स्थिति बिलकुल विपरीत है। मनु की दण्ड व्यवस्था अपराध का स्वरूप और प्रभाव, अपराधी की

शिक्षा, पद और समाज में उसके रुतबे पर निर्भर है। ज्ञानसम्पन्न लोगों को मनु ब्राह्मण का दर्जा देकर अधिक सम्मान देते हैं। जो विद्या, ज्ञान और संस्कार से दूसरा जन्म प्राप्त कर द्विज बन चुके हैं, वे अपने सदाचार से ही समाज में प्रतिष्ठा पाते हैं। अधिक सामर्थ्यवान व्यक्ति की जवाबदेही भी अधिक होती है, अत: यदि वे अपने उत्तरदायित्व को नहीं निभाते हैं तो वे अधिक कठोर दण्ड के भागी हैं।

(हम एक बार फ़िर बताना चाहेंगे कि जन्म से ही कोई ब्राह्मण या द्विज नहीं होता – इस का सम्बन्ध शिक्षा प्राप्ति से है।)

यदि, इस दण्ड–व्यवस्था को हम फ़िर से अपना लें तो भ्रष्टाचार और बहुत से अपराधों पर लगाम लगेगी। आजकल की तरह अपराधी प्रवृत्ति के लोग राजनीति में प्रवेश नहीं कर सकेंगे और राजनीति दूषित होने से बच जाएगी।

दण्ड और अपराधी का सामाजिक स्तर

यहां पर हम इस से संबंधित कुछ श्लोक प्रस्तुत कर रहे हैं –

मनुस्मृति ८।३३५

जो भी अपराध करे वह अवश्य दण्डनीय है चाहे वह पिता, माता, गुरु, मित्र, पत्नी, पुत्र या पुरोहित ही क्यों न हो।

मनुस्मृति ८।३३६

जिस अपराध में सामान्य जन को एक पैसा दण्ड दिया जाए वहां शासक वर्ग को एक हजार गुणा दण्ड देना चाहिए। दूसरे शब्दों में जो कानूनविद् हैं, प्रशासनिक अधिकारी हैं या न्यायपालिका में हैं वे अपराध करने पर सामान्य नागरिक से १००० गुणा अधिक दण्ड के भागी हैं।

न्यायाधीश और सांसदों को विधि-विधान से परे रखने और अपदस्त होने से बचाने की बात मनु के मत से घोर विरोध रखती है।

स्वामी दयानन्द यहां अपनी ओर से कहते हैं कि शासन में काम करने वाले एक चपरासी को सजा में आम लोगों के लिए जो प्रावधान हो उससे ८ गुणा सजा मिलनी चाहिए और बाकी पदाधिकारियों के लिए भी उनके पदों के अनुपात से जो प्रावधान आम लोगों के लिए हो उस से कई गुणा अधिक और सबसे बड़े पदाधिकारी के लिए यह १००० गुणा तक

होना चाहिए। क्योंकि जब तक सरकारी पदाधिकारियों को साधारण नागरिकों की तुलना में कठोर दण्ड का विधान नहीं होगा, तब तक शासन प्रजा का हनन ही करता रहेगा। जैसे एक सिंह को वश में रखने के लिए बकरी की अपेक्षा अधिक कठोर नियंत्रण चाहिए उसी प्रकार प्रजा की सुरक्षा को निश्चित करने के लिए सरकारी कर्मचारीयों पर अत्यंत कठोर दण्ड आवश्यक है।

इस परिपाटी या सिद्धांत से भटकना, भ्रष्टाचार की सारी समस्याओं का मूल कारण है। जब तक इस में सुधार नहीं होगा, तब तक राष्ट्र में परिवर्तन लाने के लिए किए गए सारे प्रयास व्यर्थ ही जायेंगे।

मनुस्मृति ८।३३७–८।३३८

अगर कोई अपनी स्वेच्छा से और अपने पूरे होशोहवास में चोरी करता है तो उसे एक सामान्य चोर से ८ गुणा सजा का प्रावधान होना चाहिए – यदि वह शूद्र है, अगर वैश्य है तो १६ गुणा, क्षत्रिय है तो ३२ गुणा और अगर ब्राह्मण है तो ६४ गुणा। यहां तक कि ब्राह्मण के लिए दण्ड १०० गुणा या १२८ गुणा तक भी हो सकता है। दूसरे शब्दों में दण्ड अपराध करने वाले की शिक्षा और सामाजिक स्तर के अनुपात में होना चाहिए।

अतः जैसी कि प्रचलित धारणा है – मनु उसके पूर्णत: विपरीत शूद्रों के लिए शिक्षा के अभाव में सबसे कम दण्ड का विधान करते हैं। मनु ब्राह्मणों को कठोरतर और शासकीय अधिकारीयों को कठोरतम दण्ड का विधान करते हैं। आज के संदर्भ में देखा जाए तो प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, मुख्य न्यायाधीश, राष्ट्रिय दलों के नेता यदि दुराचरण करते हैं तो कठोरतम दण्ड के भागी हैं। इसके बाद मंत्रियों, सांसदों, विधायकों, राज्याधिकारियों और न्यायाधीशों की बारी है। जितने भी प्रशासनिक अधिकारी, नौकरशाह हैं, यहां तक कि एक सरकारी विभाग के चपरासी तक को भी सामान्य नागरिक की तुलना में अधिक कठोर दण्ड मिलना चाहिए।

सामान्य नागरिकों में से भी शिक्षित तथा प्रभावशाली वर्ग, यदि अपने कर्तव्यों से मुंह मोड़ता है तो कठोर दण्ड के लायक है। जिस तरह समाज में सबसे श्रेष्ठ को सबसे अधिक महत्त्व प्राप्त है इसलिए उनके आदर्शच्युत होने से सारा समाज प्रभावित होता है।

अत: मनु के अनुसार अपराधी की पद की गरिमा के साथ ही उसका दण्ड भी बढ़ता जाना चाहिए।

यदि कथित जन्मना ब्राह्मण, कथित जन्मना शूद्रों पर अपना श्रेष्ठत्व जताना ही चाहते हैं तो उन्हें कठोर दण्ड के विधान को भी स्वीकार करना चाहिए। बहुसंख्यक जन्मना ब्राह्मण वेदों के बारे में कुछ नहीं जानते। मनुस्मृति २।१६८ के अनुसार जो ब्राह्मण वेदों के अलावा अन्यत्र परिश्रम करते हैं - वह शूद्र हैं। मनुस्मृति में मिलाए गए नकली श्लोकों के अनुसार तो यदि किसी व्यक्ति के शब्दों से ही ब्राह्मण को यह लगता है कि उसका अपमान किया गया है तो उस व्यक्ति के लिए कम से कम एक दिन बिना खाए रहने की सजा है। इसलिए, जो मनुस्मृति के नकली श्लोकों के आधार पर अपना ब्राह्मणत्व हांकने में लगे हैं, उन्हें कम से कम लगातार ६४ दिनों का उपवास करना चाहिए - जब तक कि वह सम्पूर्ण वेदों का अध्ययन न कर लें और पूरी तरह से अपने दुर्गुणों से मुक्त न हो जाएं जिस में कटु वचन बोलना भी शामिल है। (क्योंकि साधारण लोगों की तुलना में ब्राह्मणों को ६४ से १२८ गुणा ज्यादा दण्ड दिया जाना चाहिए।)

ऐसा तो हो नहीं सकता कि चित भी मेरी और पट भी मेरी, आप ब्राह्मण भी बने रहें और जैसा चाहे वैसा कानून भी अपने लिए बनाएं। या तो आप सत्यनिष्ठा से असली मनुस्मृति को अपनाएं और जन्माधारित जाति-व्यवस्था को पूर्णत: नकार दें। या फ़िर कम से कम ६४ दिनों की भूख हड़ताल के लिए तैयार रहिये जब तक आप वेदों पर पूर्ण अधिकार प्राप्त न कर लें और अगर फ़िर भी वेदों को न पढ़ पाएं तो अगले ६४ दिनों के लिए अनशन फ़िर से जारी रखें।

जन्म आधारित जाति-व्यवस्था महर्षि मनु द्वारा प्रतिपादित समाज व्यवस्था का कहीं से भी हिस्सा नहीं है। जो जन्मना ब्राह्मण अपने लिए दण्डव्यवस्था में छूट या विशेष सहूलियत चाहते हैं – वे मनु, वेद और सम्पूर्ण मानवता के घोर विरोधी हैं और महर्षि मनु के अनुसार ऐसे समाज कंटक अत्यंत कड़े दण्ड के लायक हैं।

मनुस्मृति में शूद्रों के लिए कठोर दण्ड विधान की धारणा बिलकुल निराधार, झूठी और बनाई हुई है।

आइए, मनुस्मृति के इस संविधान को फ़िर से अपनाकर देश को भ्रष्ट राजनेताओं, भ्रष्ट न्याय व्यवस्था, धूर्त और कथित बुद्धिवादियों के चंगुल से बचाएं।

सारांश: मनुस्मृति ७।१७-२०

- वस्तुतः एक शक्तिशाली और उचित दण्ड ही शासक है।

- दण्ड न्याय का प्रचारक है।
- दण्ड अनुशासनकर्ता है।
- दण्ड प्रशासक है।
- दण्ड ही चार वर्णों और जीवन के चार आश्रमों का रक्षक है।
- दण्ड ही सबका रक्षक है, वह राष्ट्र को जागृत रखता है – इसलिए विद्वान उसी को 'धर्म' कहते हैं।
- यदि भली-भांति विचारपूर्वक दण्ड का प्रयोग किया जाए तो वह समृद्धि और प्रसन्नता लाता है परंतु बिना सोचे समझे प्रयोग करने पर दण्ड उन्हीं का विनाश कर देता है जो इसका दुरूपयोग करते हैं।

इसलिए अब समय आ गया है कि भ्रष्ट नेता और अधिकारीयों का विनाश हो क्योंकि वे इस दण्ड का बहुत दुरूपयोग कर चुके हैं। आइए, समाज, राष्ट्र और मानवता की रक्षा के लिए – किसी भी रूप में जन्मगत भेदभाव का समर्थन करनेवालों को हम दण्ड से ही सीधा करें।

समाज, राष्ट्र और मानवता की रक्षा का यही एक उपाय है,

अन्य कोई मार्ग नहीं!

अध्याय ८

मनुस्मृति का पुरुषवाद, जातिवाद और हिन्दुओं की त्रासदी

हम समाज में है, समाज हम में नहीं। समाज की उन्नति में हीं हमारी उन्नति है। इसलिए सामाजिक उन्नति के लिए हमारा निस्वार्थपूर्ण योगदान हीं हमारी व्यक्तिगत और पारिवा-रिक उन्नति का आधार है।

- अग्निवीर

हर दलितवादी बुद्धिजीवी ये अच्छी तरह से जानता है कि वे लोग हिन्दू धर्म से नफ़रत करने के लिए जिस मनुस्मृति को आधार बनाते हैं – वह ‘नकली’ है, जिसे अंग्रेजों ने तैयार किया था। इसकी कोई भी ऐसी पाण्डुलिपि कहीं उपलब्ध नहीं है जिस पर कोई आक्षेप किया जा सके। वे जानते हैं कि आज तक किसी भी गुरुकुल में यह जाली मनुस्मृति नहीं पढ़ाई गई। कोई भी हिन्दू इस मनुस्मृति को अपने घर में नहीं रखता। वे यह भी जानते हैं कि पिछले एक लाख सालों में मनुस्मृति का हवाला देते हुए किसी भी दलित के कानों में पिघला हुआ सीसा कहीं उड़ेला नहीं गया।

यह सब कुछ जानते हुए भी उन्होंने साफ़ तौर पर जालसाज़ी करते हुए, विभिन्न हिन्दू

समुदायों के बीच विद्वेष फ़ैलाने का काम किया।

क्या आपने कभी किसी मंदिर में मनुस्मृति देखी है? या आपने कभी किसी को मनुस्मृति का पाठ करते हुए देखा? नहीं ना, फ़िर भी इस जाली मनुस्मृति को हिंदुत्व के ऊपर बलात् थोपा गया ताकि इसकी आड़ में हिन्दुओं को अपमानित किया जा सके। सच्चाई यह है कि ये जाली मनुस्मृति अंग्रेजों के दिमाग की पैदाइश है। वास्तविक मनुस्मृति जातिवाद की दृढ़ विरोधी है।

असली मनुस्मृति मानवजाति के इतिहास में अभी तक सृजित सर्वाधिक दलित हितैषी ग्रंथ है - जिसमें स्पष्ट कहा गया है कि मनुष्य का मूल्यांकन उसके कर्मों से होता है न कि उसकी जाति से। जाति और उपजाति इत्यादि पर आधारित अलगाव की धारणा इस में पूरी तरह से नकारी गई है।

आज जातिवाद के पक्षधर और विरोधी दोनों ही दल अपने-अपने पूर्वाग्रहों को पुष्ट करने के लिए इस झूठी मनुस्मृति का सहारा लेते हैं। हिन्दुओं को इस तरह से आपस में लड़ते देख जिहादी जश्न मना रहे हैं। जिहादियों के लिए तो सभी हिन्दू एक ही हैं – 'काफ़िर' – जो उनके द्वारा मारे जाने और बलात्कार किए जाने के लिए ही बने हैं। अगर हम अपनी बेअक्ली से बाज़ नहीं आते और जातिवाद के पोषण में ही लगे रहते हैं तो ये हमारी निपट मूर्खता एक दिन हमें ले ही डूबेगी।

आइए संक्षेप में कुछ तथ्य देखें :

- आधुनिक मनुस्मृति के रचयिता अंग्रेज़ हैं, हिन्दू नहीं। सन् १७९४ में अंग्रेजों ने एक दस्तावेज़ प्रकाशित किया था, जिसे हिन्दू कानून का नाम देकर हम पर मढ़ा गया। कोई नहीं जानता कि ये कलकत्ता वाला दस्तावेज़ कहां से आया।
- लेखागार में अलग-अलग श्लोकों वाली कम से कम पचास विभिन्न मनुस्मृतियां मिलती हैं। जिन में से प्रामाणिक मनुस्मृति छांटने का कोई उपाय ही नहीं है। कम से कम सामान्य मनुष्यों के लिए तो यह असंभव है।
- साम्यवादी जिस मनुस्मृति का दहन करते हैं – वो अंग्रेजों द्वारा निर्मित है। उसमें स्त्रियों और 'नीची' जातियों के लिए अपमानजनक बातों का समावेश किया गया है। लेकिन गौर करने वाली बात यह है कि उसी मनुस्मृति में जातिवाद के विरोधी और स्त्रियों को संपूर्ण स्वतंत्रता के साथ सर्वोच्च पद देने वाले भी पर्याप्त श्लोक विद्यमान हैं।

- मनुस्मृति के आधार पर किसी को दण्डित किए जाने का कोई साक्ष्य इतिहास में कहीं उपलब्ध नहीं है।
- ९९.९९% हिन्दू अपने घरों में मनुस्मृति रखते ही नहीं। इसका प्रकाशन भी कभी--कभार ही होता है क्योंकि अंग्रेजों, साम्यवादियों और जातिवादियों के अलावा और कोई भी इसमें इतनी रूचि नहीं रखता।
- साम्यवादी जब भी मनुस्मृति जलाना चाहते हैं – पहले उसे इंटरनेट पर ढूंढ़ते हैं, फ़िर अंग्रेजों की किसी वेबसाईट से लेकर उसे छापते हैं और फ़िर छापे हुए उन पन्नों को जलाते हैं। उन्हें इतनी सारी कवायद इसलिए करनी पड़ती है क्योंकि हिन्दुओं के किसी धार्मिक पुस्तक भंडार से मनुस्मृति प्राप्त करना उनके लिए संभव नहीं है।
- यदि आपकी धारणा है कि मतों-पंथों ने स्त्रियों और मानवाधिकारों का हनन किया है, तो इसके दो चरम दोषी होंगे – बाइबिल और कुरान। आज कठमुल्लाओं के कुरानी फ़तवे जितने लोगों पर जुल्म ढ़हा रहे हैं और क़त्ल कर रहे हैं, उतने तो विगत एक लाख वर्षों में मनुस्मृति के श्लोक सुनने वाले भी पैदा नहीं हुए। बाइबिल में भी मध्यकालीन स्त्रियों के साथ किए गए पक्षपात की गवाही देने वाले इसी तरह के अनेक आपत्तिजनक अवतरण मौजूद हैं। आप स्वयं गूगल पर इन्हें देख सकते हैं।
- हिन्दुओं को अनिवार्य रूप से मूल मनुस्मृति का स्वाध्याय करना चाहिए और अपनी इस अत्युत्तम धरोहर पर गर्वित होना चाहिए। मूल मनुस्मृति एक विलक्षण ग्रंथ है, संसार के पुस्तकालय में कुछ ही ग्रंथ उसके समकक्ष पहुंच पाते हैं।
- जो उदारवादी सचमुच विचारशील हैं – उन्हें चाहिए कि वे मूल मनुस्मृति को स्त्री स्वतंत्रता और सामाजिक समरसता अभियान के शुभ प्रतिक के रूप में स्थापित करें।
- साम्यवादी यदि वास्तव में विभेदकारक ग्रंथों को नष्ट करना चाहते हैं तो उन्हें निष्क-पट और निष्पक्ष होकर कुरान तथा बाइबिल का दहन करना चाहिए न कि मनुस्मृति का। उन्हें यह देखना होगा कि विश्व में आज सबसे ज्यादा विध्वंसकारी क्या है? बजाए इसके कि वे काल्पनिक हौव्वा बनाकर किसी ऐसी निर्दोष चीज़ के पीछे पड़े रहें, जिसके बारे में किसी ने सुना भी न हो।

आइए मूल मनुस्मृति के कुछ विस्मयकारी श्लोक एक बार पुनः देखें :

८.३३७-३३.८: यदि कोई अपने विवेक से, पूरे होशो-हवास में और परिणाम जानते हुए भी अपराध करे, तब यदि वह शूद्र हो तो उसे एक साधारण चोर की तुलना में आठ गुणा

दंड दें, वैश्य हो तो सोलह गुणा और यदि क्षत्रिय हो तो दंड बत्तीस गुणा होगा। ब्राह्मण के लिए दंड चौंसठ गुणा अथवा एक सौ अथवा एक सौ अट्ठाईस गुणा भी हो सकता है अर्थात् दंड अपराधी के ज्ञान और उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा के समान अनुपात में होना चाहिए।

(यहां साधारण चोर में 'साधारण' शब्द से तात्पर्य है कि वह लोग जो कोई आधिकारिक कार्य नहीं करते हैं या जिनका कोई निश्चित व्यवसाय नहीं है। जैसे कि सेवानिवृत्त या अस्थायी कार्यवाले व्यक्ति - ऐसे व्यक्ति साधारण समझे गए हैं। इससे पता चलता है कि वर्ण व्यवसाय पर आधारित हैं न कि जन्म पर।)

१०.६५: ब्राह्मण शूद्र बन सकता है और शूद्र ब्राह्मण बन सकता है। इसी तरह क्षत्रिय और वैश्य भी अपने वर्ण बदल सकते हैं।

२.२८: शास्त्रों के अध्ययन, अनुशासन, श्रेष्ठ नि:स्वार्थ कर्मों, ध्यान-साधना, विज्ञान और कर्तव्यों की शिक्षा प्राप्त करके, परोपकार और लक्ष्य को समर्पित कार्यों को करने से ही यह शरीर ब्राह्मण कहलाने योग्य बनता है।

९.३३५: यदि कोई शूद्र (अशिक्षित व्यक्ति) शिक्षित व्यक्ति की सेवा करता है, विनीत भाव रखता है, अहंकार से रहित है और ज्ञानी जनों की सभ्य संगती में रहता है तब वह शूद्र (स्त्री या पुरुष) उत्तम जन्मवाला भद्र व्यक्ति समझा जाता है।

३.५६: जिस समाज में स्त्रियों का आदर-सम्मान किया जाता है वहां श्रेष्ठता और ऐश्वर्य आदि दिव्यगुणों का विकास होता है और जो समाज स्त्रियों को ऐसा उच्च स्थान प्रदान नहीं करता है - वह दुखों और असफलताओं का सामना करता है, फ़िर भले ही वह समाज अन्य कितने ही श्रेष्ठ कार्य कर ले।

९.२६: स्त्रियां अगली पीढ़ी की जन्मदात्री हैं। वह घरों को प्रकाशित करती हैं, सौभाग्य और सुख-समृद्धि लाती हैं। अतः स्त्री और समृद्धि में कोई अंतर नहीं, वे एक ही हैं।

आज भी भारत वर्ष में स्त्रियों को जो 'गृह लक्ष्मी' या 'घर की लक्ष्मी' कहा जाता है उसका आधार यह श्लोक ही है।

और अब मनुस्मृति जलाने वाले प्रत्येक छद्म नारीवादी के मुंह पर तमाचा जड़ता यह अति उत्कृष्ट श्लोक देखिए :

९.१२: जो स्त्री घर में कुलीन जनों (पति, पिता, पुत्र) के नियंत्रण में रखी जाती है – वह भी असुरक्षित ही है। अतः स्त्रियों पर प्रतिबन्ध लगाना व्यर्थ है। स्त्रियों की सुरक्षा केवल

उनकी स्वयं की योग्यता और मानसिकता पर ही निर्भर है।

जातिवाद हर कहीं है

जातिवाद एक सामाजिक समस्या है। दक्षिण एशिया का कोई भी मत-पंथ-संप्रदाय इससे अछूता नहीं है। तथापि जातिवाद की यह समस्या बाइबिल के नस्लवाद और कुरान के का-फ़िरवाद के सामने कुछ भी नहीं है। आज भारतवर्ष में जातीय आरक्षण का लाभ हिन्दुओं की बजाए मुस्लिम अधिक उठा रहे हैं। सन् २०१७ में संघ लोक सेवा आयोग में चयनित लगभग ६०% मुस्लिम आरक्षित वर्ग से आते हैं।

यदि कोई ब्राह्मण अपने मन में एक जिहादी से ज्यादा वैमनस्य किसी अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति वाले व्यक्ति के प्रति रखता है और इसी तरह यदि कोई अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति वाला व्यक्ति अपने मन में एक जिहादी से अधिक द्वेष एक ब्राह्मण के लिए पालता है, तो ये दोनों ही जिहादियों द्वारा रौंदे जाने के पात्र हैं और उसी हश्र के लायक हैं जो ईरान में हुआ है – संपूर्ण सफ़ाया।

अनगिनत ऐसे उदाहरण मिल जाएंगे जहां कथित ब्राह्मणों को अपनी जाति के कारण उत्पी-ड़न का शिकार होना पड़ा। हाल ही में तामिलनाडु में कुछ उपद्रवियों ने ब्राह्मणों के जनेऊ तोड़ दिए। क्योंकि जनेऊ तोड़ने का काम कानून के किसी अपराध की श्रेणी में नहीं आता है, उपद्रवी खुले घूम रहे हैं। किन्तु यदि ब्राह्मण इससे व्यथित होकर शिकायत करें या बदले में एक तमाचा ही जड़ दें तो द्रविड़ राजनीति में जो उफ़ान आएगा वो उस बेचारे ब्राह्मण को सजा दिलाकर ही थमेगा।

दलित बनाम ब्राह्मण का समूचा फ़साद एक बुना गया झूठ का जाल है, जो आधुनिक काल में पनपा और फ़िर धीरे-धीरे हकीकत की शकल में बदल गया।

हां, ये सही है कि जातिवाद बीते हुए कल की समस्या थी और ये आज भी एक समस्या है किन्तु जातिवाद समूचे समाज में व्याप्त है न कि सिर्फ ब्राह्मण और दलित समुदाय ही इसके लपेटे में हैं और ये इतनी विकट समस्या भी नहीं है कि वाल्मीकि समाज के किसी दलित को राम का चित्र जलाना पड़ जाए। जिनका सामान्य ज्ञान कमजोर है, उन्हें मैं बता दूं कि वाल्मीकि वह ऋषि थे जिन्होंने रामायण की रचना की थी।

ज्योतिबा फुले से लेकर आंबेडकर तक हर समाज सुधारक को 'दलित' या 'जातिबाह्य' शब्द की परिभाषा निर्धारित करने में काफी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। क्योंकि हिन्दू

समाज में विभाजन का कोई ठोस और सुस्पष्ट हल ही नहीं है। हिन्दू समाज ने व्यवसाय, वृत्ति, व्यापार, क्षेत्र इत्यादि के आधार पर स्वयं को अलग-अलग समूहों और उप-समूहों में बांट लिया है और प्रत्येक समूह स्वयं को विशिष्ट मानता है।

आज जो अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा अन्य पिछड़ी जातियां कहे जाने वाले वर्ग हैं - उनमें ये समूह बाजी कहीं अधिक परिमाण में दिखाई देती है। इसका कारण है कि वे लोग कुशल और अकुशल दोनों ही स्वरूपों के अधिकतम व्यवसायों का कार्य करते हैं। और यह दलबंदी ब्राह्मणों में भी मौजूद है। क्या आपने कभी वेदपाठ सिखाने वाले किसी गुरुकुल की खोज की है? यदि हां, तो आप इससे वाकिफ़ होंगे।

अस्पृश्यता एक बड़ा सामाजिक प्रश्न है किन्तु यह कोई ब्राह्मण बनाम दलित का मसला नहीं है। कम से कम जिहादियों के आक्रमण और अंग्रेजों के आगमन तक तो नहीं था। घोर जिहादी यातनाओं में मैला उठवाना भी शामिल था, कुछ समुदायों को विवश किया गया कि वे जिहादियों के पाख़ाने साफ़ करें।

अंग्रेजों ने हिन्दुओं को जाति के आधार पर विभक्त करना आरंभ किया, जिसने दो समुदायों को एक–दूसरे के आमने-सामने खड़ा कर दिया। ये विभाजन तथा-कथित दलितों में भी पाया जाता है। संभवतः ये अलगाव स्वास्थ्य के नियमों को ध्यान में रखकर साफ़-सफाई के उद्देश्य से किया गया होगा। जैसे कि प्राय: हम बिना स्नान किए हुए किसी व्यक्ति को स्पर्श नहीं करते हैं। समाज में प्रचलित अनेक विवेकहीन बातों की तरह ही हमने इसे भी प्रथा बना लिया। किसी को स्पर्श नहीं करने का व्यवहार स्थान, परिस्थिति और समय के अनुसार न होकर समुदाय के अनुसार हो गया। लेकिन ये छुआ-छूत का रोग कथित दलितों में भी मौजूद है।

ये वो महत्वपूर्ण तथ्य हैं जिन्हें छिपाया जाता है। वास्तविकता यह है कि - जातिगत भेदभाव और गुटबंदी की मानसिकता पूरे समाज में समान रूप से स्थापित है।

ये ब्राह्मण विरुद्ध दलित की समस्या नहीं है वरन् सभी समुदायों में एक सिरे से दूसरे सिरे तक पसरी हुई परस्पर मुकाबले की समस्या है और अब यह बहुत से समुदायों के बीच सिमटती जा रही है। सबसे अधिक गौर करनेवाली बात यह है कि इस दलबंदी या जातिवाद या छुआ-छूत का सर्वाधिक विरोध कथित ब्राह्मणों द्वारा ही हुआ है, जिन्हें आज खलनायक बनाकर पेश किया जाता है।

- क्या आपने महात्मा फुले के समकालीन स्वामी दयानंद का नाम सुना है? महात्मा

फुले भी उनके प्रशंसक थे।

- क्या आप 'हिंदुत्व' शब्द के जनक वीर सावरकर को जानते हैं ?
- क्या आपको पता है कि डॉ. आंबेडकर को उनका 'कुलनाम' आंबेडकर कहां से मिला? जिसे उन्होंने आजन्म अपने नाम के साथ लगाए रखा।

आइए देखें कि आंबेडकर स्वयं हिन्दुओं के बारे में क्या कहते हैं: "हम जिस अति महत्वपूर्ण मुद्दे पर रोशनी ड़ालना चाहते हैं वह ईश्वर की मूर्ति के पूजन से तुम्हें मिलनेवाला समाधान नहीं है... हिंदुत्व उतना ही अस्पृश्य हिन्दुओं का भी है जितना कि स्पृश्य हिन्दुओं का। इस हिंदुत्व के विकास और प्रतिष्ठा में वाल्मीकि, व्याधगीता के ऋषि, चोखामेला और रोहिदास जैसे अस्पृश्यों का सहभाग भी उतना ही रहा है जितना कि वशिष्ठ जैसे ब्राह्मण, कृष्ण जैसे क्षत्रिय, हर्ष जैसे वैश्य और तुकाराम जैसे शूद्र का है।

हिन्दुओं की रक्षा में लड़नेवाले सिदनाक महार जैसे नायक अनगिनत हैं। हिंदुत्व के नाम पर बने हुए जिस मंदिर की संवृद्धि और समृद्धि को स्पृश्य और अस्पृश्य दोनों ही हिन्दुओं के बलिदान से उत्तरोत्तर प्राप्त किया गया उसे जाति का विचार किए बिना सभी हिन्दुओं के लिए खोला जाना चाहिए।" (सन्दर्भ - बहिष्कृत भारत, २७ नवम्बर १९२७ के अंक से धनञ्जय कीर डॉ आंबेडकर: लाइफ एंड मिशन, १९९० में उद्धृत)

हां यह सच है, कि दलितों को काफ़ी-कुछ सहना पड़ा किन्तु इसका कारण ब्राह्मण, बनिया या ठाकुर न होकर समूचा समाज है और समाज के प्रत्येक तबके में मौजूद समाजकंटक लोग हैं। जिसमें से अधिकतर दलित समुदाय के ही हैं। महात्मा फुले का दलितों के लिए संघर्ष अलग दृष्टिकोण लिए हुए था। लेकिन आज कांचा चीना जैसे दलितवादी ही दलितों की मुसीबत का प्रमुख कारण बने हुए हैं। ये स्वयंभू आन्दोलनकारी, दलितों को शिक्षित कर जातिवाद के दलदल से उबारने की बजाए उन्हें समाज की मुख्यधारा में जुड़ने से रोकते हैं। ये छद्म दलित नायक झूठे अलगाव की कहानियां गढ़कर दलितों के मन में उनके हितैषी मित्रों के प्रति जहर भरने का काम करते हैं।

अधिकांश 'सवर्ण' गाफ़िल भले ही हों, किन्तु जातिवादी निश्चित ही नहीं हैं।

हमें समझना होगा कि जातिवाद एक सामाजिक बुराई है, जिससे समूचा समाज ही ग्रसित है। ये उच्च जाति बनाम नीची जाति का मुद्दा नहीं है। यह मनुष्य की एक प्रवृत्ति है कि वो छोटे-छोटे विशिष्ट समुदायों का हिस्सा बनना चाहता है। यह जाति-प्रणाली तथा-कथित दलितों में और भी ख़राब रूप में फैली हुई है। ब्राह्मणों के अंतर्गत भी यही व्यवस्था है - कई

लोग विशिष्ट शास्त्रों को विशिष्ट गोत्र और विशिष्ट गावों को ही पढ़ाते हैं, इत्यादि। कभी आप उत्तर प्रदेश में तथा-कथित दलितों में अंतरजातीय विवाह का आयोजन करके देखिए, क्या होता है? ये समस्या समाज भर में हर कहीं मौजूद है। जो लोग इसे केवल ऊंची और नीची जाति के बीच की समस्या का रूप देना चाहते हैं, वे अपने राजनीतिक स्वार्थ के चलते ऐसा कर रहे हैं। एक अहम बात यह भी है कि जातिवाद के इस गोरखधंदे में मुस्लिम और ईसाई समाज हमसे कहीं बढ़कर हैं। वहां जन्नत और दोज़ख के ख्याली पुलावों ने हालात काफ़ी बदतर कर रखे हैं, जन्नत के प्रलोभन से वहां जातिवाद का फंदा और अधिक कसा हुआ है। अच्छी बात है कि हिन्दुओं में ऐसा कोई प्रलोभन मौजूद नहीं है।

ब्राह्मण – आज के 'नव दलित'

आज का ब्राह्मण समुदाय 'नव दलित' बनता जा रहा है। पुरोहिताई अब कोई लाभदायक कार्य नहीं रह गया है। अधिकतर ब्राह्मण निर्धन हैं। वे अल्पसंख्यक दर्जे से भी वंचित हैं। उन्हें पक्षपात का सामना करना पड़ता है। यह एक तथ्य है कि जातिवाद के खिलाफ़ सबसे प्रबल आवाजें ब्राह्माण समाज से ही उठी थीं। किन्तु इस तथ्य की अवहेलना करते हुए ये झूठा फ़साना गढ़ा गया कि जातिप्रथा के लिए ब्राह्मण ही उत्तरदायी हैं। जब कि जाति व्यवस्था के पक्ष पोषक भारतवर्ष के सभी समुदायों में मौजूद हैं।

- इस तरह बिना गुण-दोष विवेचना किए ही ब्राह्मणों को कोसने के मैं सख्त खिलाफ़ हूं। निकट भविष्य में ऐसी ब्राह्मण विरोधी ताकतों को समाप्त करना भी मेरी कार्य--सूची में शामिल है।
- मेरा मानना है कि दक्षिण एशिया के सभी मतों-पंथों-सम्प्रदायों के सभी समुदायों में जातिप्रथा का अनुसरण किया जाता है। सभी जातियां, उप-जातियां और कथित दलित भी इस जातिप्रथा का पालन करते हैं। अतः किसी एक समुदाय को दोष देना मूर्खता है। मुख्य रूप से जाति व्यवस्था का निर्माण भारतवर्ष में मुगलों और अंग्रेजों के आक्रमणों के बाद ही हुआ है और इस में समाज के सभी घटक शामिल हुए।
- ब्राह्मण समुदाय के लिए मेरे मन में बहुत ही उच्च धारणा है क्योंकि उन्होंने नि:स्वार्थ भाव से तपस्या का जीवन जीते हुए युगों तक हमारे वेदों और आध्यात्मिक ज्ञान को अपने मानस में सहेजकर रखा। सामाजिक सुधार का बल भी हमें स्वामी दयानंद और वीर सावरकर जैसे ब्राह्मणों से ही मिला है।
- मैं जन्म आधारित जातिगत भेदभाव में विश्वास नहीं रखता। मैंने इसे वेदों के अभि-

प्राय से बिलकुल विरुद्ध पाया है। इस मसले पर मेरे विचार वीर सावरकर, स्वामी श्रद्धानंद और स्वामी दयानंद के विचारों से मेल खाते हैं।

- संकीर्ण मानसिकता वाले लोग, जो यह सोचते हैं कि 'दलित' परिवार में जन्मा व्यक्ति कभी 'द्विज' नहीं बन सकता, मैं उनके विरुद्ध कड़ा रवैया रखता हूं। 'वर्ण' मेरे लिए मेरी पसंद, मेरे व्यक्तिगत चुनाव का विषय है। कोई मनुष्य क्या शिक्षा प्राप्त करे, किस चीज़ पर अमल करे, किस पद्धति का पालन करे या किस की उपासना करे इत्यादि पूरी तरह से केवल ईश्वर और जीवात्मा के बीच का विषय है। हिन्दू एकता के मेरे लक्ष्य को पूरा करने के लिए मैं ऐसी विनाशकारी सोच को नष्ट करने में पूरी सक्रियता से लगा रहूंगा।
- तथापि मैं स्वयं आगे बढ़कर लोगों को प्रवृत्त भी करता हूं कि वे अपनी पीढ़ियों की शानदार विरासत का अपने अच्छे कर्मों द्वारा निर्वहन करें। मनुष्य को अपने वंश पर अभिमान करने का पूरा अधिकार है। किन्तु यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि कोई भी यदि अपने श्रेष्ठ कर्मों और पुरुषार्थ से किसी नए कुल या वंश की नींव ड़ालता है तो इस पर भी किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

अगर मेरे इस रुख़ से मैं किसी समुदाय को आहत करने का कसूरवार हूं तो मेरा यह कसूर स्वामी श्रद्धानंद और वीर सावरकर के कार्यों का ही अनुसरण होगा जो कि डॉ. आंबेडकर के भी आदर्श नायक थे।

अब जब हम यह जान गए हैं कि जाति प्रथा एक मूर्खता है तो हमें यह भी जान लेना चाहिए कि सभी ब्राह्मणों को इसके लिए खलनायक बना देना महामूर्खता है।

- वह महादेव आंबेडकर ही थे – एक ब्राह्मण – जिन्होनें भीमराव आंबेडकर को अपना 'कुलनाम' आंबेडकर दिया था।
- वह वीर सावरकर ही थे – एक ब्राह्मण – जिन्होनें जातिप्रथा को समूल नष्ट करने का प्रस्ताव रखा था और इसी के चलते गांधी से मतभेद पर अपने लिए मुसीबत मोल ले ली थी।
- वह स्वामी दयानंद ही थे – एक ब्राह्मण – जिन्होनें वेदों के द्वारा यह स्थापित किया कि वर्णों का आधार हमारा जन्म न होकर हमारी निज़ी पसंद है।
- वह वाशी शर्मा ही हैं जो अग्निवीर के जातिवाद विरोधी अभियान की अगुआई करते हैं।

ऐसे असंख्य उदाहरण मिलेंगे...

जातिवाद और प्रायिकता नियम (Law Of Probability)

जातिवाद कितना दोषपूर्ण है - एक गणित का विद्यार्थी यह अच्छी तरह से समझ सकता है। आइए एक सीधा-सा गणित समझें –

- मान लीजिए कि सौ साल चार पीढ़ियों के बराबर हैं।
- मान लीजिए कि हमारी सभ्यता तीन हज़ार साल पुरानी है, मतलब एक सौ बीस पीढियां हुईं। (मैंने कम से कम संख्या ली है, असल में पीढियां ज्यादा ही होंगी।)
- मान लीजिए कि किसी व्यक्ति के सच बोलने की संभावना नब्बे प्रतिशत है। (पिछली कई पीढ़ियों से चले आ रहे भ्रष्टाचार के बोलबाले को देखते हुए यह संभावना काफ़ी बड़ी है।)

अब यदि मैं किसी जाति विशेष 'X' का सदस्य होने का दावा करता हूं ('X' = ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, अंत्यज इत्यादि) तो मेरा यह दावा तभी सत्य होगा जब मेरे कुल की सभी एक सौ बीस पीढियों ने सच ही बोला होगा।

- अतः मेरी जाति असल में 'X' होने की संभावना या प्रायिकता हुई = (0.9)^120 = 0.000323%. और मेरी जाति 'X' के आलावा कुछ और होने की संभावना हुई = 99.999677% !!!!
- अब यदि मैं यह मानूं कि मैं अधिक सत्यवादी कुल से हूं और अपनी सच बोलने की संभावना को बढ़ा कर 95% कर दूं, तब भी इस बात की प्रायिकता कि मैं दावा की गई 'X' जाति से हूं 0.21% ही होगी और मेरी इस जाति 'X' के नकली होने की संभावना 99.78 % होगी!!!
- यदि मैं स्वयं को किसी अत्यंत सत्यवादी कुल का सदस्य मान लूं और जाति के बारे में सत्य बोलने की अपनी संभावना को और ज्यादा बढ़ा कर 99% कर दूं, फ़िर भी जाति विषयक मेरे दावे के सच होने की संभावना होगी मात्र 30% और उस के झूठे निकलने की संभावना होगी 70%।
- अब यदि मैं मानूं कि मेरी सभ्यता तीन हज़ार वर्षों से भी अधिक प्राचीन है (जो कि वास्तविकता है), तब तो मेरे दावे के नकली होने की संभावना कई गुना तेज़ी से बढ़ जाती है। अगर हम कलयुग को प्रारंभ हुए छः हजार वर्ष मानें (अर्थात् दो सौ

चालीस पीढियां) और मेरे कुल द्वारा जाति के बारे में सच बोलने की संभावना 99% पकड़ें तब भी जाति विषयक मेरे दावे के नकली होने की संभावना होगी 91%।

- यह देखते हुए कि कुछ विशिष्ट जातियों के साथ जुड़े होने से कुछ विशेष अधिकार और लाभ मिलते हैं और कुछ अन्य के साथ जुड़ने में नुकसान या घाटा होता है, इस बात की अत्यधिक संभावना है कि एक सौ बीस या दो सौ चालीस पीढ़ियों में किसी एक व्यक्ति ने झूठ बोला ही होगा (या कोई सिरफ़िरा या पागलपन का शिकार भी हो ही सकता है)। जिसका अर्थ होगा कि उसकी आने वाली पीढियां उस के द्वारा दावा की गई जाति की होंगी ही नहीं। इसी प्रकार, इस बात के भी आसार हैं कि दो सौ चालीस पीढ़ियों में से कम से कम कोई एक तो ऐसा बेईमान, रोब-दाब वाला होगा ही जो किसी अन्य को भी जबरदस्ती नीची जाति में धकेल दे।
- अतः यदि जाति वंशावली पर आधारित है तो उस वंशावली को प्रामाणिक रूप से जानने की हमारी संभावना लगभग शून्य ही है। जितनी प्राचीन सभ्यता का दावा हम करेंगे और जितना ज्यादा भ्रष्टाचार हम आसपास देखते हैं उतना ही अधिक किसी ख़ास घराने से संबंध रखने का हमारा दावा पूर्ण शून्य होता चला जाएगा। सच कहें तो विगत छ: हजार वर्षों में जीवमितिक आधारपत्रक (Biometric Aadhaar Card) और अपने ग्राहकों को जानें (Know Your Customer) जैसी आधुनिक तांत्रिक प्रणालियों के अभाव में हम एक बड़े शून्य के आलावा और कुछ नहीं जानते हैं।

निष्कर्ष:

जातिवाद एक मूर्खतापूर्ण सामाजिक बुराई है, जिसे केवल ऐसा ही ईश्वर बना सकता है जो कि गणित से अनभिज्ञ और गैर क़ानूनी घुसपैठ को बढ़ावा देनेवाला हो।

अब समय आ गया है कि हम इसे पूरी तरह से समाप्त कर दें। जिहादी आतंकवाद का राक्षस जो कि समान रूप से दलितों और गैर-दलितों को पिछले चौदह सौ वर्षों से निगल रहा है और जिसका आक्रांत आज भी जारी है – आइए हम एकमत और एकजुट होकर उसका संहार करें।

भाग ३ : पुरुष सूक्त में जातिवाद

अध्याय ९

पुरुष सूक्त : जातिगत भेदभाव की जड़

यदि ब्राह्मण ईश्वर के मुख से पैदा हुए और शूद्र पैरों से तो इसका अर्थ यही है कि सभी मनुष्य समान रूप से ब्राह्मण और शूद्र हैं, क्योंकि सभी के पास मुख और पांव दोनों हैं।

-अग्निवीर

"वेद जन्म आधारित जातिगत भेदभाव की बुनियाद हैं। यह वेद ही हैं - हिन्दू धर्म के सबसे प्राचीन ग्रन्थ - जिसमें कि जाति-व्यवस्था का बीज बोया गया और तभी से समाज के कुछ वर्गों का शोषण करना हिन्दू धर्म का मुख्य आधार बन गया। इसके बाद आगे परिस्थितियां और बिगड़ गईं परन्तु इसका आधार - हिंदुओं के लिए परम प्रमाण - वेद ही थे और क्योंकि वेद एक हिन्दू के लिए निर्विवाद रूप से परम प्रमाण हैं - जाति-व्यवस्था की इस सड़ांध को समाज से हटाने का कोई मार्ग नहीं बचा।"

लगता है कि, तथाकथित 'प्रबुद्ध मानस' के वर्ग को प्रभावित करने वाली इसी धारणा ने जाति-प्रथा की महती संस्था को जन्म दिया है।

जाति-व्यवस्था से फायदा किसका?

अन्य मतों के विद्वानों के लिए यह हिन्दू धर्म से द्वेष करने का एक प्रमुख बहाना है। जो लोग हिन्दू धर्म से धर्मान्तरण करवाने में लगे हैं और उनके या उनके पूर्वजों द्वारा किये गए धर्मान्तरण को सही ठहराते हैं, वह 'वैदिक' जन्मना जाति-व्यवस्था में इसकी अपने अनुकूल वजह ढूंढ़ लेते हैं। उनके लिए यह जीत ही रहेगी।

स्वघोषित ब्राह्मण और ऊँची जाति

तथाकथित उच्च जातियां और जातिवादी स्वघोषित ब्राह्मण - कर्मों की परवाह किये बिना अपने लिए 'दिव्य' विशेषाधिकारों का प्रावधान करने में वेदों को हथियार की तरह इस्तेमाल करते हैं। यह तो उनके लिए बहुत ही फायदे वाली बात हुई कि वेदों में ही ऐसा आदेश है - किसी वैद्य या ड़ॉक्टर की आनेवाली सारी पीढ़ियों को एमबीबीएस की पदवी दे दी जाए भले ही उसे औषधी का क ख़ ग भी न आता हो!

दलित नेता

दलित नेताओं ने इसका उपयोग समाज में व्याप्त भेदभाव को बताने के लिए और अपने राजनीतिक एजेंडे का विस्तार करने के लिए किया। जाति-व्यवस्था के मूल आधार को पूर्णतया नष्ट कर कौन अपने वोट बैंक से हाथ धोना चाहेगा? जब कि अम्बेडकर स्वयं यह स्वीकार करते हैं कि वेदों के बारे में उनका ज्ञान पश्चिमी भारतीय विद्याविदों के कार्यों पर आधारित है क्योंकि वेदों को समझने में उनका स्वयं का ज्ञान हर तरह से अपर्याप्त था। आर्यों के आक्रमण जैसे पश्चिमी सिद्धांत पर उन्हें घोर आपत्ति थी!

राजनेता

मोहनदास गांधी जैसे व्यक्ति - जिनके नाम पर हाल ही में अण्णा हजारे की अगुवाई में चलाए गए भ्रष्टाचार विरोधी गांधीवादी आन्दोलन ने ख़ूब नाम कमाया - वे भी इस मानसिकता से ग्रसित थे। उनके दूसरे परिपक्व लगनेवाले विचारों के बावजूद मोहनदास यह मानते थे कि जन्मना जाति-प्रथा कोई दिव्य देन और हिन्दू धर्म का सत्व है। बजाए इसके कि वे जाति-प्रथा के आधार को हेय समझें और नकारें उन्होंने जाति विशेष को 'हरिजन' नाम देकर उसका समर्थन ही किया। इस से बड़ा अपमान और क्या होगा कि उन पर एक ठप्पा लगा दिया जाए - उसी तरह जैसे अरब लुटेरे उनके गुलाम उर्फ़ गैर अरब मुस्लिमों को जंजीरों से जकड़ कर उन्हें 'मवाली' कहते थे? और अब वह कहते हैं कि 'मवाली' वास्तव

में 'नेक' अर्थ रखता है! किन्तु रक्त से जाति का सम्बन्ध बताने वाला सिद्धांत इतना गहरा था कि अफ्रीका के श्याम वर्ण के लोगों को 'नंगे गंवार काफ़िर' और 'चाण्डाल' बुलाया जाता था या जाति को परिशुद्ध करना कहा जाता था मानो आपने मानवता की सेवा की! सन्दर्भ के लिए देखें – Gandhi & Racism

वास्तव में 'हरिजन' शब्द तथाकथित शूद्रों के लिए उपयुक्त समझा गया - इस का कारण यह है कि मूर्ख नविन हिन्दुओं के जातीय अभिगमों (सोच) में शूद्रों के लिए 'हरि' भक्ति ही एकमात्र आध्यात्मिक विकल्प बचा था क्योंकि उनके लिए वैदिक शास्त्रों का पठन-पाठन प्रतिबन्धित था। उनको 'हरिजन' बुलाने से सवर्ण हिन्दुओं की, उदासीन बुद्धिजीवियों के वर्ग की और निम्न जातियों की - सभी के वोट बैंक की सेवा एकसाथ हो जाती है और यह चालाकी काम लग गई। अगर हमें इस शब्द की सर्वमान्यता का उसके गर्भित आशय के साथ आकलन करना हो तो यह चालाकी काम करती दिखाई देती है।

हम मोहनदास गांधी के व्यापक प्रभाव की प्रशंसा करते हैं किन्तु निश्चित ही ऐसे अनगिनत निष्पक्ष और किसी भी प्रकार के पूर्वाग्रह से मुक्त मस्तिष्क इस देश में उभरे हैं - उनका भी उतना ही योगदान है। इसके बावजूद मोहनदास गांधी ने राष्ट्र के लिए सबसे अधिक योगदान दिया ऐसा दावा किया जाता है, हम ऐसे किसी भी व्यक्ति की प्रशंसा नहीं कर सकते जिसने अस्पृश्यता (रंगभेद) - जो घोषित रूप से कनिष्ठतम अपराध है - उसका समर्थन किया हो। विश्व की इस प्राचीनतम सभ्यता के अनेकों आदर्शों के प्रति घोर दुर्लक्ष (उपेक्षा) करते हुए केवल मोहनदास गांधी को महिमामंडित कर भारत के सिर पर थोपा गया। हमारी दृढ़ मान्यता है कि इसका कारण महती व्यक्तियों के निष्पक्ष एवं तटस्थ वि-श्लेषण और उनके ठोस योगदान की अनदेखी है। 'भारत एक ख़ोज' के द्वारा अपनी मंशा और सयानापन दर्शा चुके मोहनदास गांधी के अतीव लाडले नेहरु के दृष्टिकोण पर हम यहां चर्चा नहीं करेंगे और यह सब इस अध्याय का मूल मुद्दा है भी नहीं। तात्पर्य यह है कि इनके पूर्ववर्ती तथाकथित राजनेता वैदिक जाति-प्रथा के भ्रामक ख्याल से जो किन्हीं कारणों से बुद्धिगम्य नहीं थे ऊपर उठ ही नहीं पाए।

(स्वामी दयानन्द के अतिरिक्त किसी में यह साहस नहीं था कि वह स्पष्ट शब्दों में घोषित करें कि जन्मना कोई भी ब्राह्मण नहीं होता। एक तथाकथित ब्राह्मण का मूर्ख पुत्र शूद्र से भी गया बीता है, जबकि एक तथाकथित चाण्डाल के यहां जन्मा विद्वान भी ब्राह्मण है। किसी को जन्म के आधार पर शूद्र कहने वाले स्वयं ही महामूर्ख और शूद्रों से भी नीचे हैं।)

पश्चिमी विद्वान

इस तथाकथित वैदिक जाति-व्यवस्था में पश्चिमी भारतीय विद्याविदों को ज़रूर एक सुनहरा मौका मिल गया कि वे हिन्दुओं को अपने मूल से विमुख कर सकें। वे यह बात अच्छी तरह जानते थे कि अधिकतर भारतीय विद्वान पश्चिमी विद्वानों के पुछल्ले हैं और केवल उन्हीं बातों का रटन करते हैं जो उनके गौरांग प्रभु बोलते हैं- यह आज भी जारी है। उन्हें अधिक कुछ करने की आवश्यकता ही नहीं थी क्योंकि हिन्दू अपनी मूर्खता के कारण दीमक की तरह फ़ैल चुकी जाति-प्रथा को अपने मूल से जुडा हुआ समझ कर उसी से चिपके रहे, आज भी चिपके हुए हैं। भले ही यह जाति-व्यवस्था पिछले हजार वर्ष से भी अधिक काल से उनकी दासता और अध:पतन का कारण रही है। अंग्रेजों ने सिर्फ इतना ही किया कि वेदों पर उस समय उपलब्ध गलत भाष्य की उच्छिष्ट (जूठन) को ख़रीदे हुए भारतीय विद्याविदों द्वारा अंग्रेजी में करवाया, फिर उन्होंने अपने विचार को ही मुख्य कह कर पूरी दुनिया में प्रचारित किया। आखिर चतुराई से बेचा गया झूठ भी सच बन जाता है! एक असरदार विज्ञापन के जरिये एक टॉयलेट क्लीनर को भी सफ़ल पेय बनाया जा सकता है!

हम देख सकते हैं कि जाति-प्रथा वेदों से निकली है – यह प्रस्थापित करने में हारनेवाले, जीतनेवाले, वकील, न्यायाधीश और दूर खड़े तमाशबीन – सब का स्थापित हित था।

अग्निवीर यह नहीं सहेगा

समय-समय पर इस मूर्खतापूर्ण जाति-व्यवस्था के विरुद्ध आवाजें उठती रही हैं। इन आवाज़ों को उठाने वालों को अग्निवीर अनुकरणीय मानता है। परन्तु, फिर भी वे लोग इस की जड़ तक नहीं पहुँच पाए और इस साजिश की नींव 'वेद जन्म आधारित जाति-व्यवस्था को स्वीकृति प्रदान करते हैं' इस पर उन्होंने कोई सवाल नहीं उठाए। उनके प्रयत्नों ने जनसाधारण को अपने मूल 'वेद' से विरक्त ही किया और शत्रु इससे और ताकतवर हुए।

यदि कोई आपकी माता के लिए अभद्र बात कहे तो क्या आप अपनी मां को निकाल बाहर करेंगे? नहीं ना, बल्कि आप इस आरोप की सच्चाई का पता लगाएंगे और यदि आरोप झूठे निकले तो आप अपनी मां का बचाव करेंगे, इसके विपरीत यदि आरोप सच पाए गए तभी आप उन्हें त्यागेंगे।

परन्तु, सिर्फ सुनी-सुनाई बात पर विश्वास कर अपनी मां को अस्वीकार कर देना तो कोई विक्षिप्त ही कर सकता है, ऐसे लोगों को अब और किस विशेषण से नवाजा जाए यह हम आप पर ही छोड़ते हैं। तात्पर्य यह है कि वेद सम्पूर्ण मानवजाति के लिए 'मां' हैं, बिलकुल

मां के दूध की तरह ही वेद - ज्ञान, बुद्धि और प्रेरणा का पहला स्रोत हैं। जो माता की अवहेलना करते हैं या बिना किसी तार्किक आधार के उसे दुर्वचन कहते हैं, वे निश्चित रूप से विनष्ट होते हैं!

आज मानवजाति इसलिए संकटों का सामना कर रही है क्योंकि उसने अपनी माता की उपेक्षा की और हमें, इस उपमहाद्वीप के रहिवासियों को तो और भी अधिक अपमान, विडम्बना, त्रासदी और परेशानियों का सामना करना होगा क्योंकि आधुनिक इतिहास में माता के सबसे निकट हम ही रहे हैं और फिर भी हमने उसकी सिर्फ अवहेलना ही नहीं की बल्कि उसे बदनाम भी किया। सच में, हम अधिक से अधिक सजा के हकदार हैं और सही तौर पर सज़ा हमें मिल भी रही है!

हालांकि इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि हम हिन्दू इतने बेसुध हो गए, आखिर हमने भी तो किन्हीं संदिग्ध लचर ग्रंथों की झूठी और बकवास कहानियों से ही प्रेरणा प्राप्त की है। जिनमें राम द्वारा सीता का निर्वासन और हरिशचन्द्र द्वारा अपनी पत्नी को बेचना, जैसी कथाओं का गुणगान भरा हुआ है। ईश्वर भी उन्हीं की सहायता करते हैं जो अपनी मदद आप करते हैं!

और यही वह वजह है कि स्वामी दयानन्द जैसे महापुरुष और अग्निवीर जैसी उनकी संतान वेदों के समर्थन में दृढ़ता से खड़ी है। यदि अनजाने में या अपनी मूर्खता से मां के सभी बच्चे उसे छोड़ दें या उसे ठेस पहुंचाने लगें तो इसका मतलब यह नहीं है हम सभी को स्वयं ही कोई दिव्य स्वीकृति मिल गई है कि हम भी और अधिक मूर्खतापूर्ण बरताव करें और उसकी उपेक्षा करें। कर्मफ़ल का सिद्धांत किसी को नहीं बख्शता।

ये भी गौर करना चाहिए कि यह कोई भावप्रधान अतिश्योक्ति नहीं है। क्योंकि ऐसे दृष्टिकोण जब आंखें मूंदकर अपना लिए जाएं तो मतान्ध आक्रामकता की ओर ले जाते हैं। कुछ लोग कुरान और बाइबिल को अपनी मां कहेंगे और उसके प्रति ज्यादा सुरक्षात्मक हो जाएंगे, दूसरे सोमालियाई समुद्री डकैती को अपनी मां क़रार देंगे और उसके प्रति आक्रामक भी हो सकते हैं। यह हमें सिर्फ मतांधता की ओर ही ले जाएगा।

इसके विपरीत ऊपर वर्णित दृष्टिकोण अच्छी तरह से विश्लेषित और तर्क की प्रक्रिया का परिणाम है। हम इसमें बहुत ही स्पष्ट हैं कि यदि वेदों में वास्तव में कुछ भी अतार्किक हो तो हम वेदों को भी उसी तरह त्याग देंगे जैसे गैंगरीन हो जाने पर किसी को अपनी बांह त्यागनी पड़ती है।

अग्निवीर की साईट पर उपलब्ध लेख आपको बहुत ही बारीकी से इस तर्क की प्रक्रिया को

समझाएंगे। जाति-व्यवस्था के सन्दर्भ में हम अन्य कई लेखों में वैदिक दृष्टिकोण विस्तार से समझा चुके हैं।

फ़िर भी एक प्रचलित ग़लतफ़हमी का दूर होना जरूरी है जो कि वेदों में आए पुरुष-सूक्त के मंत्र से संबंधित है और उसे जन्मना जाति-व्यवस्था का जनक मानती है। यह संभवतः वेदों में जाति-व्यवस्था को दर्शाने का एक मात्र कथित सन्दर्भ है। अन्य सभी आक्षेप इतने कमजोर हैं कि उनको गंभीरता से नहीं लिया जा सकता, उन्हें तो वेदों के विरुद्ध भाव रखने वाले भी गंभीरता से नहीं लेंगे। किन्तु फ़िर भी आश्चर्य है कि यह एक विचार जो उतना ही कमजोर है कैसे इतनी प्रसिद्धि पा गया, जैसे कि बहुत सारी बेहूदी बॉलिवुड़ की फ़िल्में भी सुपरहिट हो जाती हैं!

इस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

पुरुष सूक्त के बारे में

पुरुष सूक्त १६ मन्त्रों का सूक्त है, जो थोड़े से भेद से चारों वेदों में उपस्थित है। वेदों के अन्य किसी भी वैज्ञानिक पक्ष पर इतना शोध नहीं हुआ जितना कि पुरुष सूक्त पर हुआ है। इस सूक्त के मन्त्र ११ पर जन्म आधारित जाति-व्यवस्था को उपजाने का आरोप है।

शोधार्थी इस मन्त्र की व्याख्या करने में कई तरीके अपनाते हैं –

- कुछ उसका जस का तस अनुवाद करते हैं।
- कुछ अपने व्याकरण कौशल का उपयोग जाति-व्यवस्था को उचित ठहराने के लिए करते हैं।
- अन्य (विशेषतया आर्यसमाज से प्रभावित) इसी व्याकरण क्षमता का उपयोग इसके खंडन में करते हैं।
- अन्य कई का कहना है कि पुरुष सूक्त वेदों में बाद में मिलाया गया है क्योंकि वह ऋग्वेद के अंतिम मंडल में आता है। दरअसल उनके अनुसार ऋग्वेद का पूरा अंतिम मंडल ही बाद की मिलावट है, क्योंकि उन्हें ऐसा लगता है! शायद शाहजहां का भूत भी लाल किले में रहता है क्योंकि मुझे ऐसा लगता है!

(यह अलग बात है कि वे लोग यह समझाने में नाकाम रहे हैं कि क्यों वेदों का कोई भी संस्करण इस दसवें मंडल के बिना नहीं मिलता या फिर कैसे पुरुष सूक्त अन्य वेदों में भी उपस्थित है जो कि अंतिम भाग में नहीं है?)

(हम कई बार यह महसूस करते हैं कि वैज्ञानिक शिक्षा के अभाव ने सारी दुनिया को बिगाड़ कर रख दिया है। इतिहास, साहित्य, मीडिया इत्यादि क्षेत्रों में वर्चस्व रखनेवाले लोग वह हैं जो विज्ञान और गणित से इतना घबराते हैं जितना कि किसी भूत से भी ना घबराते हों! चाहे रोमिला थापर हों या वेंडी डोनीगर या मैक्समूलर या फिर कोई और। नियति ने उन्हें यह अवसर ही नहीं दिया कि वे विश्लेषण करने की क्षमता और वैज्ञानिक सोच की प्रक्रिया पर अधिकार प्राप्त कर सकें।

हमारा यह दृढ़ मत है कि यदि हम अपनी शिक्षण व्यवस्था को बचाना चाहते हैं तो इस क्षेत्र में विश्लेषणात्मक और वैज्ञानिक सोच रखनेवाले दिमागों की आवश्यकता है। इस सन्दर्भ में रुझान की परख या अभिक्षमता परीक्षा और तर्क परीक्षण अत्यंत जरूरी हैं।)

पुरुष सूक्त में जातिवाद

पुरुष सूक्त पर वापस आते हैं, पुरुष सूक्त का मन्त्र क्रमांक ११ जन्म आधारित जाति-व्य-वस्था का दोषी समझा जाता है। यह मन्त्र शब्दश: कहता है -

ब्राह्मण उसका मुख था, क्षत्रिय उसकी भुजा से उत्पन्न हुए, वैश्य जंघाओं से आए और शूद्रों ने पैरों से जन्म लिया।

उसके पैरों से जन्में शूद्र नीच व्यक्ति हैं और ब्राह्मण उच्च, जिन्होंने उसके मुख से जन्म प्राप्त किया। अतः मन्त्र में शूद्रों का तिरस्कार और ब्राह्मणों की स्तुति करने का निर्देश है, क्षत्रिय और वैश्य कहीं इन के बीच में हैं।

जैसे हम ने पहले कहा, इस मन्त्र की गंभीर समीक्षा करनेवाला और कई व्यापक परिपेक्ष्य देनेवाला विपुल साहित्य उपलब्ध है। कई लोगों ने बहुत विस्तार से कई घटनाओं की श्रृंखला देते हुए और विचारों की प्रक्रिया से यह बताया है कि कैसे यह मन्त्र वर्तमान युग की जाति--व्यवस्था के लिए जिम्मेदार है।

अन्य कुछ का कहना है कि यह मन्त्र बाद में प्रक्षेपित किया गया है क्योंकि वेद का अन्य कोई भी मन्त्र जाति-व्यवस्था के समर्थन में प्रस्तुत नहीं किया जाता। जैसा हमने पहले देखा, हम हमेशा ही माता को निकाल फेंकने में तत्पर रहते हैं ताकि किसी आरोप लगाने वाले से उलझना न पड़े!

वेदों के कुछ प्रबुद्ध समर्थक इस मन्त्र को जाति-व्यवस्था का मूल न बताने के प्रयास में मन्त्र में आए विविध शब्दों के वैकल्पिक अर्थ उपयोग में लाते हैं। वे अन्य साहित्य में उपस्थित

इन्हीं शब्दों के पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग दिखा कर इन आरोपों का खंडन करते हैं।

मेरी समझ से तो एक सीमा के बाद यह निरर्थक कवायद है। क्योंकि वेदों को समझने के लिए तार्किक विश्लेषण और आत्ममंथन की आवश्यकता अधिक है न कि व्याकरण और शब्द उत्पत्ति शास्त्र की। आखिरकार, भाषा वेदों से निकली, न कि वेद भाषा से निकले हैं।

(स्वामी दयानन्द ने विश्लेषणात्मक तर्क पर बहुत बल दिया है। उनके द्वारा प्रस्तुत शैक्षणिक पाठ्यक्रम में शिक्षा के प्रथम कुछ वर्ष जब कि मेधा की सीमाएं सीमित होती हैं तब बुनियादी चीज़ों के रटन के लिए दिए गए हैं और इसके बाद का समय विश्लेषण करने और आत्ममंथन करने की क्षमता के विकास के लिए समर्पित है। दुर्भाग्य से आधुनिक विद्वान - जिनमें आर्यसमाजी विद्वान भी शामिल हैं (स्वामी दयानन्द के अनुयायियों में से कुछ) वर्षों सिर्फ व्याकरण पर ही लगाते हैं और गणित तथा विज्ञान की अवहेलना करते हैं। उनकी विश्लेषणात्मक तर्कशक्ति अत्यंत सीमित रह जाती है और वे वेदों से नए शोध करने में तथा नई दृष्टी पाने में असफ़ल ही रह जाते हैं। कला के अन्य क्षेत्रों की तरह ही इस क्षेत्र में भी बहुत सा साहित्यिक शोध अपेक्षित है। (ड़िजिटलाइजेशन और सर्च इंजिन के चलते वह भी थोड़े समय में निकम्मा रह जाएगा!))

पुरुष सूक्त के जातिवादी मन्त्र का विश्लेषण

आइए इस सूक्त के मन्त्र का विश्लेषण अधिक गहराई और तर्कपूर्ण तरीके से करें। जिन्हें इस उत्तम मन्त्र से जातिवाद की गंध आती रही है, ऐसे लोगों के लिए हम कई बिंदूओं में विश्लेषण करेंगे। एक बार फिर से इस मन्त्र का अर्थ देखते हैं -

ब्राह्मण उसका मुख था, क्षत्रिय उसकी भुजा से उत्पन्न हुए, वैश्य जंघाओं से आए और शूद्रों ने पैरों से जन्म लिया।

१. अब इस मन्त्र में यह कहां आया है कि ब्राह्मण उच्च हैं और शूद्र नीच हैं? असल में यदि पुरुष सूक्त की कल्पना का जस का तस अर्थ लिया जाए तो ब्राह्मण सबसे घिनौने हुए और शूद्र काफी निर्मल हुए क्योंकि मुख से तो सिर्फ उलटी और बलगम ही बाहर आता है और मल मूत्र के बाद मनुष्य शरीर में उत्पन्न सबसे घृणित पदार्थ हैं – वमन और थूक।

यदि कोई चेरी (एक प्रकार का फल) आपके पैर पर गिर जाए तो आप उसे धोकर पुनः खा सकते हैं और असल में हम जो अनाज खाते हैं वह जमीन से ही उगता है और किसी न किसी रूप में उसका पैरों से संपर्क भी हुआ ही होता हैं। परन्तु अगर यही चेरी लार और

थूक में लिपटी हुई किसी के मुंह से निकले तो कई बार धोने पर भी आप उसे नहीं खाएंगे!

२. कोई भी चीज़ पैर, जंघा, मुख या हाथ से कैसे पैदा हो सकती है? मनुष्यों में भी प्रजनन अंग अलग होते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि यह मन्त्र कुछ और ही कह रहा है। नासमझ लोग ही किसी दृष्टांत या आलंकारिक वर्णन को यथाशब्द लेते हैं।

इस तर्क से 'यदि कोई पुत्र अपनी मां की आँख का तारा है' तो क्या इस मतलब यह है कि वह अपनी मां की आँखों में तारे के रूप में रहता है! अगर कोई इसका ऐसा मतलब निकाले तो उसे पागल ही कहेंगे।

३. वर्तमान काल की परम्परागत हिन्दू विचारधारा भी आत्मा के पुनर्जन्म में विश्वास रखती है। दरअसल, वैदिक धर्म और उससे निकली शाखाओं की बुनियाद ही यह है कि आत्मा अजन्मा और अमर्त्य है, उसका पुनर्जन्म होता है। प्रश्न यह है कि –

- आत्मा जो 'अजन्मा' है वह किसी चीज़ से जन्म कैसे ले सकता है? और अगर इसे सत्य समझें तो शेष वेद और वैदिक साहित्य झूठे साबित होते हैं।
- हमारी मृत्यु के उपरांत क्या होता है? क्योंकि यह तो प्रमाणित हो चुका है कि कोई ब्राह्मण अपने कर्मों की वजह से अगले जन्म में शूद्र भी बन सकता है और असल में यही वह प्रलोभन है – जो ये धूर्त ऊँची जातिवाले तथाकथित शूद्रों को देते हैं कि इस जन्म में हमारी सेवा करो और अगला जन्म ब्राह्मण का पाओ।

यदि अगले जन्म में जातियों का आपस में परिवर्तन संभव है, तो हम इसकी प्रक्रिया को भी समझना चाहेंगे - क्या आत्मा मृत्यु के बाद रक्त संचार के माध्यम से भ्रमण करती हुई पुरुष के मुख, हाथ या पैर या जंघा से अगले जन्मों के अनुसार उन-उन अंगों में वापस जाती है और पुनः जन्म लेती है?

- और पशुओं, कीड़े-मकोडों और पक्षियों का क्या होता है? ये सभी प्राणी कहां से जन्म लेते हैं और इन्हें ब्राह्मण आदि कैसे बनाया जा सकता है? यदि इस मन्त्र के अक्षरशः अर्थ को ही गंभीरता से लिया जाए तो क्या ये मूर्खतापूर्ण नहीं होगा?

४. वैदिक परमेश्वर तो हमेशा ही निराकार और सर्वव्यापक है तो उसके मुख, हाथ और पैर इत्यादि अंग कैसे हो सकते हैं? (यजुर्वेद ४०।८ इसे सुस्पष्ट रूप से कहता है।)

५. इस के सिवाय यदि हम यह मान भी लें कि परमेश्वर साकार है और हम उसके विभिन्न अंगों से जन्म ले सकते हैं - सिर्फ उन अंगों को छोड़कर जिनका उपयोग मनुष्यों में प्रजनन

के लिए होता है, तो इस का तात्पर्य जन्म-आधारित जाति-व्यवस्था से कैसे हुआ? इस मन्त्र से यह निष्कर्ष कैसे निकाला जा सकता है कि ब्राह्मण सिर्फ ब्राह्मणों के परिवार में ही जन्म लेंगे और शूद्र केवल शूद्र परिवारों में ही उत्पन्न होंगे? ब्राह्मण, शूद्र या जो कोई भी हो उसे सीधे तौर पर परमात्मा के शरीर से ही उत्पन्न होना चाहिए। अगर इस मन्त्र का यथाशब्द अर्थ ही लिया जाए तो - यदि कोई मनुष्य सीधे परमात्मा से उत्पन्न नहीं होता बल्कि किसी मर्त्य स्त्री के गर्भ से जन्म लेता है - वह मनुष्य इन चार वर्णों में परिभाषित नहीं हो सकता सकता, वह कुछ और ही होगा!

६. और तो और इस मन्त्र में भूतकाल का प्रयोग हुआ है, अधिक से अधिक कोई यह कह सकता है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र किसी असाधारण रूप से महाकाय पुरुष के विभिन्न अंगों से सृष्टि के आरम्भ में उत्पन्न हुए। परन्तु उन में से कोई भी आज तक जीवित नहीं रहा - आज के ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र तो मुश्किल से कुछ दशक पहले ही पैदा हुए हैं परन्तु मन्त्र के शब्दशः अर्थ के अनुसार तो जन्म पहले ही हो चुका है, इस में ऐसा नहीं आया कि ईश्वर भविष्य में भी ऐसे ही ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र उत्पन्न करता रहेगा।

आज के मनुष्य कहीं और से नहीं बल्कि अपनी मां की कोख़ से ही पैदा होते हैं। इसलिए ब्राह्मण , क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के आधुनिक दावेदार किसी भी जाति के सच्चे दावेदार हो ही नहीं सकते, यह सभी नकली दावेदार हैं।

७. यदि किसी ने किसी स्त्री के मुख से जन्म लिया होता, तो हम अन्धविश्वासी बन ऐसा कह सकते थे, "क्योंकि मां परमेश्वर है, इसलिए यह नवजात शिशु ब्राह्मण हुआ।" लेकिन तब भी किसी को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र बनने के लिए मुख, हाथ, पैर या जंघा से उत्पन्न होने की शर्त को ही मानना होगा। इस मन्त्र के शब्दशः अर्थ के अनुसार तो - बाकी बचे हुए हम जैसे साधारण मनुष्य जो अपनी मां की कोख़ से उत्पन्न हुए हैं, न कि हाथ, पैर या मुख इत्यादि से – वह तो शायद किसी दूसरे भगवान द्वारा रचित किसी दूसरी दुनिया के प्राणी हैं!

८. क्योंकि धरती पर हर व्यक्ति माता के गर्भ से ही जन्म लेता है, इसलिए यदि हमारा अस्तित्व है (जो कि है ही) तो मन्त्र के अनुसार हमें माता को ही परमात्मा मानना होगा और पुरुष इन में से किसी भी वर्ण में नहीं माने जायेंगे। स्त्रियों को ईश्वर के रूप में आदर देने पर हमें कोई आपत्ति नहीं है परन्तु इसके साथ ही सभी पुरुषों को मनुष्यों के आलावा कुछ और ही होना चाहिए, क्योंकि वह किसी स्त्री के मुख, भुजा या पैर से पैदा नहीं हुए हैं।

स्पष्ट है यदि इस मन्त्र का शब्दशः अर्थ लिया जाए तो उसके कोई मायने नहीं निकलते। यह

कितने खेद की बात है कि सदियों से हमें दीन-हीन बनाने वाली इस बकवास को हम ढ़ोते आ रहे हैं और आज भी इस मूर्खता से मुक्त नहीं होना चाहते।

मन्त्र का अंत:प्रेरित और सीधा-सीधा अर्थ

यदि इस मन्त्र का विश्लेषण इस सूक्त के शेष मन्त्रों के सन्दर्भ में किया जाए और अधिक बुद्धिमत्ता से किया जाए तो इस सूक्त से हमें जगत की रचना के ज्ञान का बोध होता है।

इस सन्दर्भ में अधिक जानकारी के लिए ऋषि दयानन्द द्वारा रचित 'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका' का सृष्टिविद्याविषयक अध्याय पढ़ें। तथापि यदि हम पक्षपात और पूर्वाग्रह का चष्मा उतार कर देखें तो अन्तःप्रेरणा से जाना गया इस मन्त्र का अर्थ अत्यंत सरल है। इसका अर्थ ठीक वही है जो सभी अनुवादक करते हैं –

ब्राह्मण उसका मुख था, क्षत्रिय उसकी भुजा से उत्पन्न हुए, वैश्य जंघाओं से आए और शूद्रों ने पैरों से जन्म लिया।

मुद्दा सिर्फ यह है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र का सम्बन्ध किसी आत्मा या मनुष्य से नहीं है। उनका सम्बन्ध वर्णों से या गुणधर्मों से है जिन्हें चुना जा सकता है।

और इसमें आया 'वह' केवल परमेश्वर के ही लिए नहीं बल्कि किसी भी स्वयं-पूरित परितंत्र जैसे किसी व्यक्ति, समाज, संस्था, या ब्रह्माण्ड के लिए आया है। आखिरकार, हर एक चीज़ ईश्वर से ही तो प्रेरित है!

मन्त्र का अर्थ है कि कोई भी स्वयं-पूरित परितंत्र अनिवार्य रूप से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णों या गुणधर्मों या विशेषताओं या घटकों को समाहित करता है। ब्राह्मण अर्थात् बुद्धिमत्ता और ज्ञान, क्षत्रिय अर्थात् बल और साहस, वैश्य अर्थात् प्रबंधन, संतुलन और स्थिरता, शूद्र अर्थात् अन्य सभी गुण और उसमें अज्ञानता भी शामिल है।

एक अच्छी व्यवस्था में यह चारों घटक अनुकूलित तरीके से प्रयुक्त होते हैं।

एक सफ़ल समाज में बुद्धिमान या ब्राह्मण मस्तिष्क की तरह होते हैं, योद्धा या क्षत्रिय रक्षा करने वाली भुजाओं की तरह होते हैं, वैश्य या व्यवसाय प्रबंधक स्थिरता प्रदान करने वाले या हमारे शरीर में मौजूद फ़िमर या जंघा की हड्डी की तरह होते हैं। (ध्यान रहे कि शरीर में अस्थि मज्जा या बोन मॅरो का उत्पादन करने वाली फ़िमर हड्डी शरीर में सबसे मजबूत होती है।) इन के आलावा शेष व्यक्ति समाज में सहयोग और मूलभूत ढांचा प्रदान करने में प्रयुक्त होते हैं।

एक सफ़ल कम्पनी भी स्वयं को इस रीति से ही सुव्यवस्थित रखती है। परमेश्वर भी ब्रह्माण्ड की रचना इस रीति से करता है कि यह चारों घटक संतुलित रहें।

एक मनुष्य के तौर पर हम में भी ये चारों ही समाहित होते हैं। परन्तु क्योंकि यह वर्ण (पसंद) हैं, इसलिए हमारे पास विकल्प है कि हम अपने जीवन की विविध परिस्थितिओं में इनकी मात्रा या परिमाण को घटा-बढ़ा सकते हैं। ध्यान दें कि हमारे पास इन गुणों को धारण करने या न करने का कोई विकल्प नहीं है, इन चारों का मौजूद होना ज़रूरी है।

हमारा मस्तिष्क ब्राह्मण का प्रतिक है, हमें जहां तक संभव हो सके उसका विकास करना चाहिए। अपनी रक्षा के लिए हमारी भुजाएं बलशाली होनी चाहिएं, दीर्घ जीवन जीने के लिए हमें स्वस्थ शरीर और अच्छे रक्त संचार की आवश्यकता होती है और साथ ही स्फूर्ति-शाली और क्रियाशील बने रहने के लिए हमारे पांव मजबूत होने चाहिए।

ऐसा कोई मनुष्य नहीं है कि जिस में इन में से कोई भी घटक अनुपस्थित हो और ऐसा कोई कार्य नहीं है जो इन चारों की अनुपस्थिति में पूर्ण हो सके। आख़िरकार हम सम्पूर्ण प्राणी हैं, कोई एक अवयव या भाग नहीं हैं।

यदि हम वेदों का अध्ययन भी कर रहे हों तो हमें ब्राह्मण से ज्ञान की आवश्यकता होगी, जिससे हम वेदों के तत्वों को समझ सकें। हमारे शांतिपूर्ण और निर्विघ्न अध्ययन के लिए क्ष-त्रिय हमें सुरक्षा प्रदान करेंगे। वैश्य हमें साधन उपलब्ध कराएंगे जैसे – वैदिक ग्रन्थ इत्यादि और शूद्र अध्ययन के समय अपने श्रम से हमारी मदद करेंगे जैसे – अध्ययन के स्थान की स्वच्छता, वहां पानी और बिजली इत्यादि की व्यवस्थाएं करके। इन में से एक भी वर्ण को नजरअंदाज कर के हम कार्य को सफ़लतापूर्वक और सुचारू रूप से पूर्ण नहीं कर सकते।

बौद्ध धर्म ने केवल ब्राह्मण (बुद्धि) पर ध्यान केन्द्रित किया, परिणामतः पश्चिम एशियाई लुटेरों ने उन्हें अफ़गानिस्तान से मिटा दिया। वहाबियों ने जंग और लड़ाई से दुनिया को एक खतरनाक जगह बना दिया। हिन्दू हद से ज्यादा व्यवस्थापक या वैश्य या जुगाड़बाज बन गए हैं इसलिए अपनी शक्ति और गरिमा को भी खो बैठे हैं। इस्लामी देश जैसे - पाकिस्तान जहां शिक्षा और अभ्यास की अवहेलना होती है वहां बर्बर, खूंखार और असभ्य लोगों का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है और पाकिस्तान एक नकारा समाज बनकर तबाही की ओर बढ़ रहा है।

हम अपनी सहूलियत के लिए किसी के प्रधान व्यवसाय को ध्यान में रखते हुए उसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र कहते हैं। तथापि यह अत्यंत सरलीकरण हुआ। वास्तव में देखा जाए

तो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र हमारे भीतर ही हैं अन्यथा हमारा अस्तित्व एक पल के लिए भी टिकना मुश्किल है।

आप देख सकते हैं कि कैसे इस मन्त्र का तार्किक अर्थ निकालने के बाद इस का अर्थ कितना बोधगम्य और सरल हो गया है। निश्चित ही हम थोडा अधिक मंथन और विश्लेषण करके जिसमें भाषा का ज्ञान भी शामिल है – इस अद्भुत सूक्त के इस व्यापक ज्ञानदायक मन्त्र का अधिक गहन अर्थ ख़ोज पाएंगे।

सारांश

यदि हम पूर्वाग्रहों और पूर्व निश्चित अवधारणाओं से मुक्त होकर देखें तो हम यह स्पष्ट और अन्तःप्रेरित भाव पाएंगे कि -

- इस मन्त्र का अत्यंत शाब्दिक अर्थ न लेते हुए इसे एक प्रतिक के रूप में समझा जाना चाहिए।
- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सभी मनुष्यों में व्याप्त चार गुणधर्मों को प्रस्तुत करते हैं।
- यह चारों ही गुणधर्म - वर्ण या अपनी पसंद हैं। जिसका मतलब है कि हम अपनी पसंद से हमारे जीवन की विविध परिस्थितियों में इनके परिमाण को घटा-बढ़ा सकते हैं।
- हमारे शरीर के चार अंग, मस्तिष्क या मुख, भुजाएं, जंघा और पैर, इन चार वर्णों के गुणधर्मों को प्रदर्शित करते हैं। यदि हम वैश्य के लिए आए "उरु" शब्द के अर्थ को व्यापक तौर पर देखें तो यह शरीर के सम्पूर्ण मध्य भाग, पाचन तंत्र से लेकर जंघा तक को दर्शाता है। यही मन्त्र अथर्ववेद में थोड़े से भेद से आया है - वहां उरु की बजाए मध्य शब्द का प्रयोग हुआ है – जो इसे और भी स्पष्ट करता है।
- कोई भी परितंत्र चाहे वह एक व्यक्ति हो या पूरा समाज - जो इन चार गुणधर्मों या इन गुणधर्मों का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्तियों को यथोचित भूमिका और दायित्व प्रदान करता है – वह निश्चित रूप से सफ़ल होता है, और ऐसा न होने पर समाज कि दुर्दशा होती है।

और जन्म-आधारित जाति-व्यवस्था में यही हुआ – अत्यंत मूढ़ व्यक्तियों को भी समाज के चेहरे या मस्तिष्क का स्थान दिया गया – सिर्फ इसलिए क्योंकि वह ब्राह्मण परिवार में

पैदा होने का दावा रखते थे। पारिवारिक ठप्पे के कारण ही कमजोर व्यक्तियों को योद्धा बनने का अधिकार मिल गया और सबसे बुद्धिशाली व्यक्तियों को हमने सेवक का दर्जा दिया केवल इसलिए क्योंकि वे किन्हीं दूसरे वर्ग के परिवारों में जन्मे थे। हम ने स्वयं को बरबाद कर लिया!

तथापि हम स्पष्ट देख रहे हैं कि बहुत खींच-तान कर भी पुरुष सूक्त के मन्त्र की संगति जन्म आधारित जातिव्यवस्था से जरा भी नहीं लगाई जा सकती। वेद सभी मनुष्यों के लिए गुणों और कर्मों पर आधारित व्यवस्था और समान अवसरों का समर्थन करते हैं।

पुरुष सूक्त मन्त्र ११ में जातिवाद सिद्ध करने या नकारने के लिए लिखे गए सारे शोध प्रबंध पूर्णत: असम्बद्ध या अप्रासंगिक हैं। इससे केवल ऐसे शोध कार्य करने वाले व्यक्तियों की गुणात्मक रूचि का पैमाना नापे जाने की आवश्यकता को पुनः बल मिलता है तथा ऐसे तथाकथित शोधार्थियों की तर्क बुद्धि और विश्लेषण करने की क्षमताओं पर सवालिया निशान लगता है।

जैसा कि हमने इस पुस्तक के अन्य अध्यायों में प्रस्तुत विश्लेषण से भी देखा - वेदों को नस्लवाद या जातिवाद या लिंग भेद का समर्थक बताने वाली यह पूरी जालसाज़ी कुछ लोगों के दिमाग की शैतानी उपज है। यह सच है कि इतिहास में काफ़ी लम्बे समय तक विश्व और राष्ट्र की अत्यधिक हानि करने वाली इस विकृत विचारधारा ने पूरे उप-महाद्वीप पर वर्चस्व जमाए रखा। मात्र घटनाओं का किसी प्रकार से हो जाना ही यह स्थापित नहीं करता कि वह घटना सही है। सिर्फ इसलिए कि कोई मूर्खतापूर्ण घटना रामायण या महाभारत या सम्राट अशोक के काल में घटित हुई है – वह सही नहीं ठहराई जा सकती।

(एक गलत धारणा यह भी बन गई है कि प्राचीन भारत वैदिक था और हम अवैदिक हैं या फिर पश्चिमी देश अवैदिक हैं और हम अधिक वैदिक हैं - यह सब हल्की सोच का परिणाम है। वेद मानवीय और प्रकृति के प्राथमिक नियमों का प्रतिनिधित्व करते हैं। ऐसा समय कभी नहीं रहा कि जब वेदों की शिक्षाओं को सौ प्रतिशत पूर्णता से समाज में क्रियान्वित किया गया और ऐसा समय भी कभी नहीं रहा जब कि समाज ने वेदों की शिक्षाओं को पूर्णतः नकार दिया हो। यह सब समयानुसार बदलते रहते हैं। जब हम अपने जीवन के किसी पहलू में इसे अपना लेते हैं तो लाभ प्राप्त करते हैं और अगर किसी में नकार देते हैं तो दुःख के भागी बनते हैं। कई बातों में हम रामायण और महाभारत के युग से अधिक वैदिक हैं और कई बातों में उनसे पीछे हैं। इसी तरह पश्चिमी जगत हमसे कई बातों में अधिक वैदिक है

जैसे – सभी मनुष्यों के लिए आदर की भावना होना, परन्तु पारिवारिक मूल्यों जैसी बातों में हम उनसे आगे हैं।

यह एक बहु-विचर अत्यंत अरैखिक और परिवर्तनात्मक फलन (Multivariate highly non-linear and Dynamic function) है। परन्तु वेद हमें किसी भी समय-बिंदु पर इस फलन (Function) का अधिकतम मान (Value) प्राप्त करने का मार्ग बताते हैं।)

इतिहास या वर्तमान युग के उदाहरणों से किसी बात या चीज़ को वैदिक या अवैदिक सिद्ध करना, यह वेदों को नकारने जितना ही मूर्खतापूर्ण है। गणित में हम वृत्त की अवधारणा को केवल इसलिए नहीं नकार देते कि असलियत में अचूक वृत्त बनाना संभव नहीं है।

हमें केवल यह करने की आवश्यकता है कि हम सही अवसर को खोजें ताकि वेदों के अनुसार सुधार हो, आदर्श उसी हेतु होते हैं।

यह जाति-प्रथा का अवैदिक कांटा सदियों से हमें चुभ रहा है। पिछले हज़ार सालों से चली आ रही हमारी सभी पीडाओं और कष्टों का मुख्य कारण यही है। अब वह सुनहरा समय आ गया है कि हम इसे जड़ से उखाड़ फेंके और कल्याण के भागी बनें।

आधुनिक युग का सामाजिक ढ़ांचा मनुष्य के वर्गीकरण को चार में से किसी एक वर्ण में बांटने को पुरातन सिद्ध करता है। अब समय आ गया है कि हम अधिक परिष्कृत प्रारूप को अपनाएं जिसमें प्रत्येक व्यक्ति में चार वर्ण हों, जिनका अनुपात जीवन की विविध अवस्थाओं में अलग-अलग समय पर और विभिन्न परिस्थितियों के अनुरूप बदलता रहता है।

और इसकी आधारशिला तथा प्रेरणा हमें वेदों से ही प्राप्त होती है जो हमारे मूल हैं। आइए आप और हम मिलकर वेदों में जाति-प्रथा के मिथक को नष्ट करें और पुरुष सूक्त द्वारा निर्देशित मार्ग पर चल कर हमारे समाज से जाति-प्रथा के हर एक निशान को मिटा दें।

निष्कर्ष

पुरुष सूक्त मन्त्र ११ के हमारे अर्थ को हम राष्ट्र के परिपेक्ष्य में देखें, जैसा हमने विस्तार से ऊपर देखा -

केवल बुद्धिशाली व्यक्ति ही राष्ट्र का मुख और मस्तिष्क बनें।

केवल सुदृढ़, शक्तिशाली और उत्तम चरित्र वाले व्यक्ति के बलशाली हाथों में राष्ट्र के रक्षा

की कमान रहे और वे अपने कार्यों से देश का गौरव बढ़ाएं।

चतुर प्रशिक्षित प्रबंधक हमारी पूरी प्रक्रिया का मार्गदर्शन करें और एक अत्यंत सचेतक स्वस्थ असरदार नियंत्रण-प्रणाली को सुनिश्चित करें। ताकि हमारा उपयोग एक सही आधार और सेवा के लिए किया जा सके जिससे कि व्यवस्था गतिशील औए सशक्त रहे।

हम कभी भी मूढ़ मतियों को राष्ट्र का मस्तिष्क और कमज़ोर व्यक्तियों को राष्ट्र के हाथ न बनने दें, अप्रशिक्षित अक्षम व्यक्तियों के हाथ में केन्द्रीय नियंत्रण-प्रणाली का प्रबंध न दें तथा हमारे प्रतिभावान संसाधनों को अनुपयोगी गतिविधियों में खर्च कर उन्हें बर्बाद न करें।

जन्म, परिवार, पक्षपात या भ्रष्टाचार इत्यादि जैसे तुच्छ कारणों की वजह से हम कभी भी प्रतिभाओं और उनके पेशों या नौकरियों या कार्यों के बेमेल संगतिकरण का समर्थन न करें।

कोई भी व्यवसाय, चाहे वो किसी भौतिक वस्तु के लिए हो या किसी आध्यात्मिक ध्येय की प्राप्ति के लिए हो वह किन्ही चुनिन्दा लोगों की जागीर नहीं होनी चाहिए जो - जाति, फ़िरके या लिंग भेद की संकीर्ण सीमाओं के आधार पर खडी हो। यदि ऐसी कोई सीमाएं हैं भी तो हमें उन्हें ध्वस्त कर देना चाहिए और पुरुष सूक्त का सही मायने में संवरण कर लेना चाहिए।

जाति-प्रथा सभी तरह के भ्रष्टाचारों की जननी है। आइये हमारे सम्मिलित प्रयासों से इसे पूरी तरह मन,वचन और कर्म से नष्ट कर दें।

भाग ४ : वेदों में जातिवाद

अध्याय १०

आर्य और जाति-व्यवस्था

"आर्य" शब्द किसी नस्ल को नहीं, बल्कि व्यक्ति के गुणों को दर्शाता है।

-अग्निवीर

प्रत्येक श्रेष्ठ और सुसभ्य मनुष्य आर्य है। अपने आचरण, वाणी और कर्म में वैदिक सिद्धांतों का पालन करने वाले, शिष्ट, स्नेही, कभी पाप कार्य न करनेवाले, सत्य की उन्नति और प्रचार करनेवाले, आतंरिक और बाह्य शुचिता इत्यादि गुणों को सदैव धारण करनेवाले आर्य कहलाते हैं।

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र यह चार वर्ण वास्तव में व्यक्ति को नहीं बल्कि "गुणों" को प्रदर्शित करते हैं। प्रत्येक मनुष्य में ये चारों गुण (बुद्धि, बल, प्रबंधन, और श्रम) सदा रहते हैं। आसानी के लिए जैसे आज पढ़ाने वाले को अध्यापक, रक्षा करने वाले को सैनिक, व्यवसाय करने वाले को व्यवसायी आदि कहते हैं वैसे ही पहले उन्हें क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य कहा गया और इनसे अलग अन्य काम करने वालों को शूद्र। अतः यह वर्ण व्यवस्था

जन्म-आधारित नहीं है।

आजकल प्रचलित कुलनाम लगाने के रिवाज से इन वर्णों का कोई लेना-देना नहीं है। हमारे प्राचीन धर्मग्रन्थ रामायण, महाभारत या अन्य ग्रंथों में भी इस तरह से प्रथम नाम - मध्य नाम - कुलनाम लगाने का कोई चलन नहीं पाया जाता है और न ही आर्य शब्द किसी प्रकार की वंशावली को दर्शाता है।

"आर्य" किसी वंश का नाम नहीं

मैं इस दावे का खंडन करता हूं कि आर्य शब्द किसी भी तरह से कुल या वंश परंपरा को दर्शाता है।

निस्संदेह परिवार तथा उसकी पृष्टभूमि का किसी व्यक्ति को संस्कारवान बनाने में महत्वपूर्ण स्थान है परंतु इससे कोई अज्ञात कुल का मनुष्य आर्य नहीं हो सकता यह तात्पर्य नहीं है। हमारे पतन का एक प्रमुख कारण है मिथ्या जन्मना जाति व्यवस्था जिसे हम आज मूर्खता पूर्वक अपनाये बैठे हैं और जिसके चलते हमने अपने समाज के एक बड़े हिस्से को अपने से अलग कर रखा है – उन्हें "शूद्र" या "अछूत" का दर्जा देकर – महज इसलिए कि हमें उनका मूल पता नहीं है - यह अत्यंत खेदजनक है।

"आर्य" शब्द किसी गोत्र से भी सरोकार नहीं रखता। गोत्र का वर्गीकरण नजदीकी संबंधों में विवाह से बचने के लिए किया गया था। प्रचलित कुलनामों का शायद ही किसी गोत्र से सम्बन्ध भी हो।

आर्य शब्द श्रेष्ठता का द्योतक है और किसी की श्रेष्ठता को जांचने में पारिवारिक पृष्ठभूमि कोई मापदंड हो ही नहीं सकती क्योंकि किसी चिकित्सक का बेटा केवल इसीलिए चिकि-त्सक नहीं कहलाया जा सकता क्योंकि उसका पिता चिकित्सक है, वहीँ दूसरी ओर कोई अनाथ बच्चा भी यदि पढ़ जाए तो चिकित्सक हो सकता है। ठीक इसी तरह किसी का यह कहना कि शूद्र ब्राह्मण नहीं बन सकता – सर्वथा गलत है।

ब्राह्मण का अर्थ है ज्ञान संपन्न व्यक्ति और जो शिक्षा या प्रशिक्षण के अभाव में ब्राह्मण, क्ष-त्रिय या वैश्य बनने की योग्यता न रखता हो – वह शूद्र है। परंतु शूद्र भी अपने प्रयत्न से ज्ञान और प्रशिक्षण प्राप्त करके वर्ण बदल सकता है। ब्राह्मण वर्ण को भी प्राप्त कर सकता है।

“द्विज” का अर्थ

द्विज अर्थात् जिसने दो बार जन्म लिया हो। जन्म से तो सभी शूद्र समझे गए हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इन तीन वर्णों को द्विज कहते हैं क्योंकि विद्या प्राप्ति के उपरांत योग्यता हासिल करके वे समाज के कल्याण में सहयोग प्रदान करते हैं। इस तरह से इनका दूसरा जन्म ‘विद्या जन्म’ होता है। केवल माता-पिता से जन्म प्राप्त करने वाले और विद्या प्राप्ति में असफ़ल व्यक्ति इस दूसरे जन्म ‘विद्या जन्म’ से वंचित रह जाते हैं – वे शूद्र हैं।

सारांश

यदि ब्राह्मण पुत्र भी अशिक्षित है तो वह शूद्र है और शूद्र भी अपने निश्चय से ज्ञान, विद्या और संस्कार प्राप्त करके ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य बन सकता है। इस में माता-पिता द्वारा प्राप्त जन्म का कोई संबंध नहीं है।

अध्याय ११

वेद और शूद्र

जन्म से तो हम सभी शूद्र हैं। हम अपने ज्ञान और कर्म से ही ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य बनते हैं।

-अग्निवीर

वेदों के बारे में फैलाई गई भ्रांतियों में से एक यह भी है कि वेद ब्राह्मण वादी ग्रंथ हैं और शूद्रों के साथ अन्याय करते हैं। हिन्दू या सनातन या वैदिक धर्म का मुखौटा बने जातिवाद की जड़ भी वेदों में बताई जा रही है और इन्हीं विषैले विचारों पर दलित आन्दोलन इस देश में चलाया जा रहा है।

परंतु इस से बड़ा असत्य और कोई नहीं है। इस अध्याय में हम इस मिथ्या मान्यता को खंडित करते हुए वेद तथा संबंधित अन्य ग्रंथों से स्थापित करेंगे कि

- चारों वर्णों का और विशेषतया शूद्र का वह अर्थ है ही नहीं, जो मैकाले के मानसपुत्र दुष्प्रचारित करते रहते हैं।
- वैदिक जीवन पद्धति सब मानवों को समान अवसर प्रदान करती है तथा जन्म-आधा-

रित भेदभाव की कोई गुंजाइश नहीं रखती।

- वेद ही एकमात्र ऐसा ग्रंथ है जो सर्वोच्च गुणवत्ता स्थापित करने के साथ ही सभी के लिए समान अवसरों की बात कहता हो। जिसके बारे में आज के मानवतावादी तो सोच भी नहीं सकते।

वैदिक मन्त्रों में शूद्र

आइए, कुछ उपासना मंत्रों से जानें कि वेद शूद्र के बारे में क्या कहते हैं –

यजुर्वेद १८।४८

हे भगवन! हमारे ब्राह्मणों में, क्षत्रियों में, वैश्यों में तथा शूद्रों में ज्ञान की ज्योति दीजिये। मुझे भी वही ज्योति प्रदान कीजिये ताकि मैं सत्य के दर्शन कर सकूं।

यजुर्वेद २०।१७

जो अपराध हम ने गाँव, जंगल या सभा में किए हों, जो अपराध हमने इन्द्रियों से किए हों, जो अपराध हमने शूद्रों में और वैश्यों में किए हों और जो अपराध हम ने धर्म में किए हों, कृपया उसे क्षमा कीजिये और हमें अपराध की प्रवृत्ति से छुडाइए।

यजुर्वेद २६।२

हे मनुष्यों! जैसे मैं ईश्वर इस वेद ज्ञान को पक्षपात के बिना मनुष्यमात्र के लिए उपदेश करता हूं, इसी प्रकार आप सब भी इस ज्ञान को ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र, वैश्य, स्त्रियों के लिए तथा जो अत्यन्त पतित हैं उनके भी कल्याण के लिये दो। विद्वान और धनिक मेरा त्याग न करें।

अथर्ववेद १९।३२।८

हे ईश्वर! मुझे ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र और वैश्य सभी का प्रिय बनाइए। मैं सभी से प्रसंशित होऊं।

अथर्ववेद १९।६२।१

सभी श्रेष्ठ मनुष्य मुझे पसंद करें। मुझे विद्वानों, ब्राह्मणों, क्षत्रियों, शूद्रों, वैश्यों का और जो भी मुझे देखे उसका प्रियपात्र बनाओ।

इन वैदिक प्रार्थनाओं से विदित होता है कि –

- वेद में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चारों वर्ण समान माने गए हैं।

- सब के लिए समान प्रार्थना है तथा सबको बराबर सम्मान दिया गया है।
- सभी अपराधों से छूटने के लिए की गई प्रार्थनाओं में शूद्र के साथ किए गए अपराध भी शामिल हैं।
- वेद के ज्ञान का प्रकाश समभाव रूप से सभी को देने का उपदेश है।

यहां ध्यान देने योग्य है कि इन मंत्रों में शूद्र शब्द वैश्य से पहले आया है, अतः स्पष्ट है कि न तो शूद्रों का स्थान अंतिम है और ना ही उन्हें कम महत्त्व दिया गया है।

सारांश

इस से सिद्ध होता है कि वेदों में शूद्रों का स्थान अन्य वर्णों की ही भांति आदरणीय है और उन्हें उच्च सम्मान प्राप्त है। यह कहना कि वेदों में शूद्र का अर्थ कोई ऐसी जाति या समुदाय है जिससे भेदभाव बरता जाए – पूर्णतया निराधार है। अगले अध्यायों में हम शूद्र के पर्यायवाची समझ लिए गए दास, दस्यु और अनार्य शब्दों की चर्चा करेंगे।

अध्याय १२

वेद और दस्यु

यदि शत्रु बलवान हो, तो तुम और भी घातक बनो। अगर युद्ध का आरंभ शत्रु करे तो उसका अंत तुम करो।

-अग्निवीर

मैकाले की कुटिल शिक्षा नीति के कारण ही अनेक भारतीय विद्वान भी यह मानते हैं कि वेद में कथित आर्यों और दस्युओं के संघर्ष का वर्णन है। आर्य लोग मध्य एशिया से आए हैं। भारत के मूल निवासी दास या दस्यु थे, जिन्हें आर्यों ने आकर लूटा, खदेडा, पराजित कर दास बनाया, कठोर व्यवहार कर उनसे नीचा काम करवाया और सदा के लिए भारतवर्ष पर आधिपत्य स्थापित कर लिया।

वेदों के बारे में पाश्चात्य विद्वानों ने यह लाल बुझक्कड़ वाली कल्पना इस देश की वैदिक विचारधारा, सभ्यता, संस्कृति को नष्ट कर पाश्चात्य पद्धतियों के प्रचार–प्रसार तथा यहां साम्राज्य स्थापित करने के लिए ही गढ़ी थी और इस देश का सत्यानाश करने के षड्यंत्र में शामिल उनके पुछल्ले साम्यवादी भी यही राग अलापते रहते हैं कि आर्यों ने अपनी महत्ता

को जन्मगत भेदभाव के आधार पर प्रस्थापित किया।

भारतवर्ष को विभाजित करनेवाले इन्हीं विचारों के कारण आज स्वयं को द्रविड़ तथा दलित कहलाने वाले भाई–बहन जो अपने आप को अनार्य (जो आर्य नहीं है) मानते हैं – उनके मन में वेदों के प्रति तथा उन्हें मानने वालों के प्रति घृणा और द्वेष का ज़हर भर गया है - परिणाम देश भुगत ही रहा है।

उनकी इस निराधार कल्पना का खंडन कई विद्वान कर चुके हैं। यहां तक कि डॉक्टर अम्बे-डकर भी उनके इन विचारों से सहमत नहीं थे।

दस्यु और वेद मन्त्र

क्योंकि इस मिथ्या विवाद का आधार वेदों को बताया जा रहा है तो अब हम वेदों से ही आर्य और दस्यु के वास्तविक अर्थ जानेंगे। यही इस अध्याय का मूल उद्देश्य है।

आरोप:

वेदों में कई स्थानों पर आर्य और दस्यु का वर्णन आया है। कई मंत्र दस्यु के विनाश तथा आर्यों के रक्षा की प्रार्थना करते हैं। कुछ मंत्र तो यह भी कहते हैं कि जो स्त्रियां भी दस्यु पाई जाएं तो उन्हें भी नहीं बख्शना चाहिए। इसलिए इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि वेद में दस्युओं पर आर्यों के अत्यंत घातक आक्रमण का वर्णन है।

समाधान:

ऋग्वेद में दस्यु से संबंधित ८५ मंत्र हैं। जिन में से कई दास के संदर्भ में भी हैं - जो दस्यु का ही पर्यायवाची है। आइए उन में से कुछ के अर्थ देखें:

ऋग्वेद १।३३।४

हे शूरवीर राजन्! विविध शक्तियों से युक्त आप एकाकी विचरण करते हुए अपने शक्ति-शाली अस्त्र से धनिक दस्यु (अपराधी) और सनक: (अधर्म से दूसरों के पदार्थ छीनने वाले) का वध कीजिये। आपके अस्त्र से वे मृत्यु को प्राप्त हों। यह सनक: शुभ कर्मों से रहित हैं।

यहां दस्यु के लिए 'अयज्व' विशेषण आया है अर्थात् जो शुभ कर्मों और संकल्पों से रहित हो और ऐसा व्यक्ति पाप कर्म करने वाला अपराधी ही होता है। अतः यहां राजा को प्रजा की रक्षा के लिए ऐसे लोगों का वध करने के लिए कहा गया है।

सायण ने इस में दस्यु का अर्थ "चोर" किया है। दस्यु का मूल 'दस' धातु है जिसका अर्थ होता है - 'उपक्षया' अर्थात् जो नाश करे। अतः दस्यु कोई अलग जाति या नस्ल नहीं है, बल्कि दस्यु का अर्थ विनाशकारी और अपराधी प्रवृत्ति के लोगों से है।

ऋग्वेद १।३३।५

जो दस्यु (दुष्ट जन) शुभ कर्मों से रहित हैं परंतु शुभ करने वालों के साथ द्वेष रखने वाले हैं, आपकी रक्षा के प्रताप से वे भाग जाते हैं। हे पराक्रमी राजेन्द्र! आपने सभी स्थानों से 'अव्रत' (शुभ कर्म रहित) जनों को निकाल बाहर किया है।

इस मंत्र में दस्यु के दो विशेषण आए हैं – 'अयज्व' अर्थात् शुभ कर्म और संकल्पों से रहित, और 'अव्रत' अर्थात् नियम न पलनेवाला तथा अनाचारी।

स्पष्ट है कि दस्यु शब्द अपराधियों के लिए ही आया है और सभ्य समाज में ऐसे लोगों को दिए जानेवाले दंड का ही विधान वेद करते हैं।

ऋग्वेद १।३३।७

हे वीर राजन्! इन रोते हुए या हँसते हुए दस्युओं को इस लोक से बहुत दूर भगा दीजिये और उन्हें नष्ट कर दीजिये तथा जो शुभ कर्मों से युक्त तथा ईश्वर का गुण गाने वाले मनुष्य हैं उनकी रक्षा कीजिये।

ऋग्वेद १।५१।५

हे राजेन्द्र! आप अपनी दक्षता से छल कपट से युक्त 'अयज्वा' 'अव्रती' दस्युयों को कम्पायमान करें, जो प्रत्येक वस्तु का उपभोग केवल स्वयं के लिए ही करते हैं, उन दुष्टों को दूर करें। हे मनुष्यों के रक्षक! आप उपद्रव, अशांति फैलानेवाले दस्युओं के नगर को नष्ट करें और सत्यवादी सरल प्रकृति जनों की रक्षा करें।

इस मंत्र में दान-परोपकार से रहित, सब कुछ स्वयं पर ही व्यय करने वाले को दस्यु कहा है।

"कौषीतकी ब्राह्मण" में ऐसे लोगों को "असुर" कहा गया है। जो दान न करे वह असुर है, अतः असुर और दास दोनों का तात्पर्य दुष्ट अपराधी जनों से है।

ऋग्वेद १।५१।६

हे वीर राजन्! आप प्रजाओं का शोषण करने वालों की हत्या और ऋषियों की रक्षा करते हैं

और दूसरों की सहायता करने वालों के कल्याण के लिए आप महादुष्ट जनों को भी कुचल देते हैं। सदा से ही आप दस्यु (दुष्ट जनों) के हनन के लिए ही उत्पन्न होते हैं।

यहां दस्यु के लिए 'शुष्ण' का प्रयोग है – जिसका अर्थ है शोषण करना – दु:ख देना।

ऋग्वेद १।५१।७

हे परमेश्वर! आप आर्य और दस्यु को अच्छे प्रकार जानते हैं। शुभ कर्म करने वालों के लिए आप 'अव्रती' (शुभ कर्म के विरोधी) दस्युओं को नष्ट करो। हे भगवन्! मैं सभी उत्तम कर्मों के पालन में आपकी प्रेरणा सदा चाहता हूं।

ऋग्वेद १।५१।९

हे राजेन्द्र! आप नियमों का पालन करने वाले तथा शुभ कर्म करने वाले के कल्याण हेतु व्रत रहित दस्यु का संहार करते हो। स्तुति करने वालों के साथ द्वेष रखने वाले, अनाचारी, ईश्वर के गुणगान से रहित लोगों को वश में रखते हो।

ऋग्वेद १।११७।२१

हे शूरवीर सेनाधीशों! आप उत्तम जनों की रक्षा तथा दस्यु का संहार करो। इस मंत्र में रचनात्मक कार्यों में संलग्न मनुष्यों को आर्य कहा गया है।

ऋग्वेद १।१३०।८

हे परम ऐश्वर्यवान् राजा! आप तीन प्रकार के – साधारण, स्पर्धा के लिए और सुख की वृद्धि के लिए किए जाने वाले संग्रामों में यजमानम् आर्यम् (उत्तम गुण, कर्म स्वभाव के लोग) का रक्षण करें और अव्रतान् (नियम को न पालनेवाले, दुष्ट आचरण वाले), जिनका अंत: करण काला हो गया है, हिंसा में रत या हिंसा की इच्छा करने वाले को नष्ट कर दें।

यहां 'कृष्ण त्वक्' शब्द से कालि त्वचा वाले लोगों की कल्पना कर ली गई है। जब की यहाँ 'कृष्ण त्वक्' का अर्थ अंत:करण का दुष्ट भाव है। साथ ही यहां 'ततृषाणाम्' और 'अर्शसानम्' भी आए हैं, जिनका अर्थ है – हिंसा करना चाहना और हिंसा में रत। इस के विरुद्ध आर्य यहां श्रेष्ठ और परोपकारी मनुष्यों के लिए आया है।

इस से स्पष्ट होता है कि आर्य और दस्यु शब्द गुण वाचक हैं, जाति वाचक नहीं हैं।

ऋग्वेद ३।३४।९

यह मंत्र भी दस्यु का नाश और आर्य की रक्षा का अर्थ रखता है। यहां आर्य के लिए "वर्ण" शब्द आया है, "वर्ण अर्थात् स्वीकार किए जाने योग्य", इसलिए आर्य वर्ण अर्थात् स्वीकार करने योग्य उत्तम व्यक्ति।

ऋग्वेद ४।२।२

मैं आर्य को भूमि देता हूं, दानशील मनुष्य को वर्षा देता हूं और सब मनुष्यों के लिए अन्य संपदा देता हूं। यहां आर्य "दान शील मनुष्यों" के विशेषण रूप में आया है।

ऋग्वेद के अन्य मंत्र हैं –

- ऋग्वेद ४।३०।१८
- ऋग्वेद ५।३४।६
- ऋग्वेद ६।१८।३
- ऋग्वेद ६।२२।१०
- ऋग्वेद ६।२२।१०
- ऋग्वेद ६।२५।२
- ऋग्वेद ६।३३।३
- ऋग्वेद ६।६०।६
- ऋग्वेद ७।५।७
- ऋग्वेद ७।१८।७
- ऋग्वेद ८।२४।२७
- ऋग्वेद ८।१०३।१
- ऋग्वेद १०।४३।४
- ऋग्वेद १०।४०।३
- ऋग्वेद १०।६९।६

इन मंत्रों में भी आर्य और दस्यु - दास शब्दों के विशेषणों से पता चलता है कि अपने गुण, कर्म और स्वभाव के कारण ही मनुष्य आर्य और दस्यु नाम से पुकारे जाते हैं। अतः उत्तम स्वभाव वाले, शांतिप्रिय, परोपकारी गुणों को अपनाने वाले आर्य तथा अनाचारी और अपराधी प्रवृत्ति वाले दस्यु हैं।

ऋग्वेद ६।२२।१० दास को भी आर्य बनाने की शिक्षा देता है। साफ़ है कि आर्य और दस्यु का अंतर कर्मों के कारण है जाति के कारण नहीं।

ऋग्वेद ६।६०।६ में कहा गया है, यदि आर्य (विद्वान श्रेष्ठ लोग) भी अपराधी प्रवृत्ति के हो जाएं तो उनका भी संहार करो। यही भावना ऋग्वेद १०।६९।६ और १०।८३।१ में व्यक्त की गई है। अतः आर्य कोई सदैव बने रहने वाला विशेषण नहीं है। आर्य गुणवाचक शब्द है। श्रेष्ठ गुणों को धारण करनेवाले आर्य कहलाते हैं। अगर वह अपने गुणों से विमुख हो जाएं – अपराधिक प्रवृत्तियों में लिप्त हो जाएं, तो वह भी दस्यु की तरह ही दंड के पात्र हैं।

अथर्ववेद ५।११।३ वर्णन करता है कि ईश्वर के नियमों को आर्य या दास कोई भंग नहीं कर सकता।

शंका:

इस मंत्र में आर्य और दास शब्दों से दो अलग जातियां होने का संदेह होता है। यदि दास का अर्थ अपराधी है तो ईश्वर अपराधियों को अपराध करने ही क्यों देता है? जबकि वो स्वयं कह रहा है कि मेरे नियम कोई नहीं तोड़ सकता?

समाधान:

ईश्वर के नियमानुसार मनुष्य का आत्मा कर्म करने में स्वतंत्र है। वह अपने लिए भले या बुरे दोनों प्रकार के कर्मों में से चुनाव कर सकता है। लेकिन कर्म का फ़ल उसके हाथ में नहीं है। कर्मफल प्राप्त करने में जीवात्मा ईश्वर के अधीन है। यही इस मंत्र में दर्शाया गया है।

इसी सूक्त के अगले दो मंत्रों अथर्ववेद ५।११।४ और अथर्ववेद ५।११।६ में कहा गया है कि बुरे लोग भी ईश्वर के अपरिवर्तनीय नियमों से डरते हैं, परंतु वे मनुष्यों से भयभीत नहीं होते और उपद्रव करते रहते हैं। इसलिए यहां ईश्वर से प्रार्थना है कि बदमाश और अपराधियों की नहीं चले, वे दबे रहें और विद्वानों को बढ़ावा मिले।

यहां बदमाश अपराधियों के लिए दास या दस्यु ही नहीं आए बल्कि कई मंत्रों में ज्ञान, तपस्या और शुभ कर्मों से द्वेष करने वालों के लिए 'ब्रह्मद्विष' शब्द भी आया है।

ऋग्वेद के ३।३०।१७ तथा ७।१०४।२ मंत्र ब्रह्मद्विष, नरभक्षक, भयंकर और कुटिल लोगों को युद्ध के द्वारा वश में रखने को कहते हैं। अब जैसे ब्रह्मद्विष, नरभक्षक, भयंकर और कुटिल कोई अलग जाति नहीं है, मनुष्यों में ही इन दुर्गुणों को अपनाने वालों को कहते हैं। उसी तरह अपराधी प्रवृत्ति के लोगों को दास, दस्यु और ब्रह्मद्विष कहते हैं – यह अलग कोई

जाति या नस्ल नहीं है।

ऋग्वेद ७।८३।७ इसे और स्पष्ट करता हुआ कहता है कि दस अपराधी प्रवृत्ति के राजा मिलकर भी एक सदाचारी राजा को नहीं हरा सकते। क्योंकि उत्तम मनुष्यों की प्रार्थनाएं हमेशा पूर्ण होती हैं और उन्हें बहुत से बलवान जनों का सहयोग और साधन भी मिलते हैं।

यहां अपराधी प्रवृत्ति के लिए 'अयज्व' आया है जो कि ऊपर के कुछ मंत्रों में दस्यु के लिए भी आ चुका है और कथित बुद्धिवादी पाश्चात्यों ने इस में दस राजाओं का युद्ध दिखाने का प्रयास किया है!

सारांश

अंत में ऋग्वेद के मंत्र ७।१०४।१२ से हम - आर्य और दास या दस्यु या अव्रत या अयज्व के संघर्ष को सार रूप में समझें –

"विद्वान यह जानें कि सत् (सत्य) और असत् (असत्य) परस्पर संघर्ष करते रहते हैं। सत्-असत् को और असत् - सत् को दबाना चाहता है। परंतु इन दोनों में जो सत् है और ऋत (शाश्वत सत्य) है, उसी की ईश्वर सदा रक्षा करता है और असत् का हनन करता है।"

आइए, हम भी झूठा अभिमान त्याग कर, सत् और ऋत के मार्ग पर चलें। अगले अध्याय में हम "दास" शब्द पर चर्चा करेंगे और यह देखेंगे कि दास का शूद्र से कोई लेना-देना नहीं है बल्कि दास - दस्यु का ही पर्यायवाची है।

अध्याय १३

वेद और दास

अविश्वास पाप नहीं है, अन्धविश्वास पाप है।

-अग्निवीर

आम बोल-चाल में दास और शूद्र शब्द इस तरह घुल-मिल गए हैं कि दास का अर्थ शूद्र ही समझ लिया गया है और जो निर्देश वेद में दास के लिए है, उसे शूद्र के लिए भी समझ लिया गया है।

वेद मन्त्रों में दास

आइए, कुछ वेद मन्त्रों में 'दास' शब्द के विभिन्न रूपों को और उनके वास्तविक अर्थ को देखें -

'दास' शब्द क्रियापद के रूप में

ऋग्वेद ७।१।२१

हमारे वीर योद्धा, न दास बनें और न नष्ट हों।

ऋग्वेद ६।५।४

जो छिप कर हमको (अभि + दासत्) नष्ट करना चाहता है। हे देव! उसे आप नष्ट करें। यहां (अभि + दासत्) अर्थात् हिंसा करता है, दुःख देता है।

ऋग्वेद ७।१०४।७

जो द्वेष से हमको (अभिदासति) नष्ट करना चाहता है, उसका कभी कल्याण न हो।

ऋग्वेद १०।९७।२३

हमारा वह शत्रु नष्ट हो, जो हमको (अभिदासति) नष्ट करना चाहता है।

इन सभी मंत्रो में 'दास' विनाश का प्रतीक है।

'दस' धातु

कई मन्त्रों में दास का वह रूप जिसका मूल 'दस' शब्द है – उस का प्रयोग हुआ है।

ऋग्वेद १०।११७।२

दानशील मनुष्य का धन (उप+ दस्यति) नष्ट नहीं होता है।

ऋग्वेद ५।५४।७

परमेश्वर जिसे प्रेरणा करते हैं, ऐसे मनुष्य का धन और समृद्धि कभी (उपदस्यन्ति) क्षीण नहीं होते।

'दस' (धातु) अर्थात् नाश या नष्ट होना। इससे यह स्पष्ट होता है कि दास का अर्थ विनाश से संबंधित है न कि दास का अर्थ कोई जाति या नस्ल है।

'दास' शब्द के प्रयोग

अब कुछ ऐसे मन्त्र देखते है जिनमें सीधे ही दास शब्द का प्रयोग हुआ है।

ऋग्वेद २।१२।४

दास या विनाशकारी मनुष्य का दमन करो।

ऋग्वेद ५।३४।६

आर्य लोग दास या विनाशकारी जनों को अपने वश में रखें।

ऋग्वेद ६।२२६।५

शांति को नष्ट करनेवाले जो दास हैं, उनका नाश हो।

इस मंत्र में 'शम्बर' दास के विशेषण के रूप में आया है, जो 'शम्' (शांति) का विरोधी है।

ऋग्वेद ७।१९।२

दास, शुष्णम् (धन लूटने वाले) और कुयवम् (आतंककारी) को पूर्णतया वश में करो।

ऋग्वेद १०।४९।६

पापस्वरुप दास सदा नष्ट हों।

ऋग्वेद १०।१९।७

जो मारने योग्य दास है, उस का नाश करो।

ऋग्वेद के मंत्र ४।३०।१५, ४।३०।२१ और ३।१२।६ भी दास के संहार के लिए कहते हैं।

सारांश

इन सभी उदाहरणों से समझा जा सकता है कि वेद में हिंसक, दुष्ट, हानि पहुँचाने वाला और विध्वंस करने वाला मनुष्य ही दास है, चाहे किसी भी समुदाय का हो। अतः सिद्ध है कि वेद में दास शब्द किसी भिन्न नस्ल या वंश का अर्थ नहीं रखता।

पहले लेख में हमने देखा कि विध्वंसकारी और अपराधी प्रवृत्ति वाले व्यक्ति को दस्यु कहते हैं। इस तरह दास - दस्यु का ही पर्यायवाची है। आजकल के अतिघातक विध्वंसकारी आतंकी इसी श्रेणी में आते हैं जैसे - कसाब, ओसामा बिन लादेन, याकूब और बगदादी इत्यादि।

आर्य (अच्छे कार्य करने वाले) और दास या दस्यु (बुरे कार्य करने वाले) के स्वभाव में अंतर है। दास या दस्यु लोग समाज और राष्ट्र के नाशक होते हैं। अतः वेद दास या दस्यु के वध का स्पष्ट निर्देश करते हैं। इसमें किसी जातिविशेष के नाश का नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र की रक्षा के लिए सब दुष्टों के ही नाश का भाव है।

सम्पूर्ण वेदों में 'शूद्र' शब्द कहीं भी दास के संदर्भ में प्रयुक्त नहीं हुआ है। वेदों में शूद्र आर्य ही है। ऋग्वेद के ३६ मंत्र 'आर्य' के विभिन्न रूपों को समाहित करते हुए श्रेष्ठ और सदाचारी मनुष्यों का ही अर्थ रखते हैं। आर्यों में जो परोपकारी लोग सेवा कार्य से अपनी आजीविका

चलाते हैं - वे शूद्र हैं और वेदों में शूद्र का स्थान अत्यंत सम्मानजनक है जैसा हमने 'वेद और शूद्र' अध्याय में देखा। यह बहुत ही खेद की बात है कि कालांतर में हम वेदों के असली सन्देश को भुला बैठे और शूद्र और दास के अर्थों को हमने पूरी तरह से अदल-बदल कर रख दिया। आज शूद्र एक "आपत्तिजनक" शब्द है और दास शब्द "दीनता" को दर्शाता है। यह वेदों से पूर्णतः विपरीत है।

यह उसी तरह हुआ होगा, जैसे यूरोपियन लोग सजा के तौर पर अपराधियों को आस्ट्रेलिया भेजा करते थे – जो बाद में एक देश बन गया। ऐसे ही, जब दासों या अपराधी प्रवृत्ति के लोगों को पकड़ा जाता था, तब सुधार योग्य दासों को कई काम सिखाए जाते थे, जैसे कि आज भी जेल में कैदियों को काम सिखाए जाते हैं और श्रम कराया जाता है। इसी तरह इन दासों को भी सेवा कार्यों की जिम्मेदारी दी जाती थी। समय के चलते वेदों के मूल सन्देश को हम भुला बैठे और इन दासों की अगली पीढ़ियों को भी 'दास' ही कहा जाने लगा और दास माने 'सेवक' अर्थ आरूढ़ हो गया। इस तरह वेदों की धारणाओं से पूर्णतः भिन्न शूद्र और दास आपस में पर्यायवाची बन गए। ऐसे ही आर्यों ने स्वयं को हिन्दू कहलाना शुरू कर दिया जिसका किसी भी शास्त्र में कोई आधार नहीं है।

विश्व के सभी श्रेष्ठ जन, शूद्रों सहित, आर्य हैं!

अध्याय १४

वेद और राक्षस

शक्तिशाली होने का अर्थ है - निर्बलों की रक्षा करना।

-अग्निवीर

एक भ्रांत कल्पना यह भी कर ली गई है कि आर्यों ने यहां के निवासियों को "राक्षस" नाम से पुकारा और उनका वध किया। अतः आर्यों के अत्याचार का शिकार माने गए दास या दस्यु ही राक्षस समझ लिए गए हैं। वस्तुतः राक्षस शब्द का अर्थ दस्यु या दास के काफ़ी पास है, परंतु राक्षस को भिन्न नस्ल या वंश मानना कोरी कल्पना ही है।

वेद मन्त्रों में राक्षस

पहले के अध्यायों में हम देख ही चुके हैं कि दास या दस्यु कोई भिन्न जाति या नस्ल नहीं बल्कि विध्वंसकारी गतिविधियों में रत मनुष्यों को ही कहा जाता था।

इस अध्याय में हम राक्षस कौन हैं और वेद में स्त्री राक्षसी के भी वध की आज्ञा क्यों दी गई है यह देखेंगे।

ऋग्वेद ७।१०४।२४

हे राजेन्द्र! आप पुरुष राक्षस का और छल कपट से हिंसा करने वाली स्त्री राक्षसी का भी वध करो। वे दुष्ट राक्षस भोर का उजाला न देखें।

यहां राक्षसों को यातुधान (जो मनुष्यों के निवास स्थान पर आक्रमण करते हैं) और क्रव्याद (कच्चा मांस खाने वाले) कहा गया है।

ऋग्वेद ७।१०४।१७

जो राक्षसी रात में उल्लू के समान हिंसा करने के लिए निकलती है, वह अन्य राक्षसों के साथ नष्ट हो जाए।

ऋग्वेद ७।१०४।१८

हे बलवान रक्षकों! आप प्रजा में विविध प्रकार से रक्षा के लिए स्थित हों, विध्वंसकारी और रात्रि में आक्रमण करने वाले राक्षसों को पकड़ें।

ऋग्वेद ७।१०४।२१

परम ऐश्वर्यशाली राजा, हिंसा करने वाले तथा शांतिमय कार्यों में विघ्न करने वाले राक्षसों का नाशक है।

ऋग्वेद ७।१०४।२२

उल्लू, कुत्ते, भेड़िये, बाज़ और गिद्ध के समान आक्रमण करनेवाले जो राक्षस हैं, उनका संहार करो।

स्पष्ट है कि राक्षस शब्द तबाही मचाने वाले, क्रूर आतंकियों और भयंकर अपराधियों के लिए प्रयुक्त हुआ है। ऐसे महादुष्ट पुरुष या स्त्री दोनों ही दंड के पात्र हैं।

इसी सूक्त के दो मंत्र राक्षस कर्म से बचने के लिए कहते हैं –

ऋग्वेद ७।१०४।१५

यदि मैं यातुधान (मनुष्यों के निवास स्थान पर आक्रमण करने वाला) हूं और यदि मैं किसी मनुष्य के जीवन को नष्ट करता हूं। यदि मैं ऐसा हूं तो, हे भगवन! मैं आज ही मर जाऊं, परंतु यदि मैं ऐसा नहीं हूं तो, जो मुझको व्यर्थ ही यातुधान कहता है वह नष्ट हो जाए।

ऋग्वेद ७।१०४।१६

जो मुझको यातुधान या राक्षस कहता है, जबकि मैं राक्षस नहीं हूं, और जो राक्षसों के साथ होने पर भी स्वयं को पवित्र कहता है - ऐसे दोनों प्रकार के मनुष्यों का नाश हो।

जो सदाचारी जनों को झूठे ही कलंकित करे और स्वयं राक्षसों – आतंकियों का समर्थक होकर भी सदाचारी बनने का दंभ करे, ऐसे भयंकर समाज घातकों के लिए भी वेद में दयाभाव के बिना विनाश की आज्ञा है।

सारांश

स्पष्ट है कि वेद किसी नस्ल या वर्ग का नहीं बल्कि आतंकी ताकतों और उनके समर्थकों के विनाश का निर्देश करते हैं। आइए, इन प्रार्थनाओं को सफ़ल बनाएं, समूचे विश्व से राक्षसों-आतंकियों और उनके संगठनों (जैसे –आईएसआईएस) का नामो–निशान मिटा दें।

अध्याय १५

वेदों में श्रम की महत्ता

शिकायत करनेवाले कभी नहीं जीतते। कर्म करनेवाले कभी नहीं हारते।

-अग्निवीर

अब तक के अध्यायों में हम ने दास, दस्यु और राक्षस के सही अर्थों को देखा और वेदों में उनके विनाश की आज्ञा का कारण जाना। इस के साथ ही साम्यवादी और कथित बुद्धिवादियों द्वारा फैलाई गई आर्यों के आक्रमण की मनगढ़ंत कहानियों की सच्चाई को भी जाना। वेदों में शूद्रों के गौरव और उनके उच्च स्थान को भी हम देख चुके हैं। अब इस अध्याय में हम श्रम के बारे में वेद क्या कहते हैं यह जानेंगे।

वेद मन्त्र और श्रम

वेद श्रम का अत्यंत गौरव करते हुए हर एक मनुष्य के लिए निरंतर पुरुषार्थ की आज्ञा देते हैं। वेदों में निठल्लापन पाप है। वेदों में कर्म करते हुए ही सौ वर्ष तक जीने की आज्ञा है (यजुर्वेद ४०।२)। मनुष्य जीवन के प्रत्येक पड़ाव को ही 'आश्रम' कहा गया है – ब्रम्हचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास, इन के साथ ही मनुष्य को शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति

करने का उपदेश है। वैदिक वर्ण व्यवस्था भी कर्म और श्रम पर ही आधारित व्यवस्था है।

आजकल जिन श्रम आधारित व्यवसायों को छोटा समझा जाता है, आइए देखें कि वेद उनके बारे में क्या कह रहे हैं –

कृषि:

ऋग्वेद १।११७।२१

राजा और मंत्री दोनों मिल कर बीज बोयें और समय-समय पर खेती कर प्रशंसा पाते हुए, आर्यों का आदर्श बनें।

ऋग्वेद ८।२२।६ भी राजा और मंत्री से यही कह रहा है।

ऋग्वेद ४।५७।४

राजा हल पकड़ कर मौसम आते ही खेती की शुरुआत करे और दूध देने वाली स्वस्थ गायों के लिए भी प्रबंध करे।

वेद, कृषि को कितना उच्च स्थान और महत्त्व देते हैं कि स्वयं राजा को इस की शुरुआत करने के लिए कहते हैं। इस की एक प्रसिद्ध मिसाल रामायण (१।६६।४) में राजा जनक द्वारा हल चलाते हुए सीता की प्राप्ति है। इस से पता चलता है कि राजा-महाराजा भी वेदों की आज्ञा का पालन करते हुए स्वयं खेती किया करते थे।

ऋग्वेद १०।१०४।४ और १०।१०१।३ में परमात्मा विद्वानों से भी हल चलाने के लिए कहते हैं।

महाभारत आदिपर्व में ऋषि धौम्य अपने शिष्य आरुणि को खेत का पानी बांधने के लिए भेजते हैं अर्थात् ऋषि जन भी खेती के कार्यों में संलग्न हुआ करते थे।

ऋग्वेद का सम्पूर्ण ४।५७ सूक्त ही सभी के लिए कृषि की महिमा लिए हुए है।

जुलाहे और दर्जी:

सभी के हित के लिए ऋषि यज्ञ करते हैं, परिवहन की विद्या जानते हैं, भेड़ों के पालन से ऊन प्राप्त कर वस्त्र बुनते हैं और उन्हें साफ़ भी करते हैं (ऋग्वेद १०।२६)।

यजुर्वेद १९।८० विद्वानों द्वारा विविध प्रकार के वस्त्र बुनने का वर्णन करता है।

ऋग्वेद १०।५३।६ बुनाई का महत्व बता रहा है।

ऋग्वेद ६।९।२ और ६।९।३ – इन मंत्रों में बुनाई सिखाने के लिए अलग से शाला खोलने के लिए कहा गया है –जहां सभी को बुनाई सीखने का उपदेश है।

शिल्पकार और कारीगर:

शिल्पकार, कारीगर, मिस्त्री, बढई, लुहार, स्वर्णकार इत्यादि को वेद 'तक्क्षा' कह कर पुकारते हैं।

ऋग्वेद ४।३६।१ रथ और विमान बनाने वालों की कीर्ति गा रहा है।

ऋग्वेद ४।३६।२ रथ और विमान बनाने वाले बढई और शिल्पियों को यज्ञ इत्यादि शुभ कर्मों में निमंत्रित कर उनका सत्कार करने के लिए कहता है।

इसी सूक्त का मंत्र ६ 'तक्क्षा' का स्तुति गान कर रहा है और मंत्र ७ उन्हें विद्वान, धैर्यशाली और सृजन करने वाला कहता है।

वाहन, कपडे, बर्तन, किले, अस्त्र, खिलौने, घड़ा, कुआँ, इमारतें और नगर इत्यादि बनाने वालों का महत्त्व दर्शाते कुछ मंत्रों के संदर्भ:

- ऋग्वेद १०।३९।१४, १०।५३।१०, १०।५३।८,
- अथर्ववेद १४।१।५३,
- ऋग्वेद १।२०।२,
- अथर्ववेद १४।२।२२, १४।२।२३, १४।२।६७, १५।२।६५,
- ऋग्वेद २।४१।५, ७।३।७, ७।१५।१४।
- ऋग्वेद के मंत्र १।११६।३-५ और ७।८८।३ जहाज बनाने वालों की प्रशंसा के गीत गाते हुए आर्यों को समुद्र यात्रा से विश्व भ्रमण का सन्देश दे रहे हैं।

अन्य कई व्यवसायों के कुछ मंत्र संदर्भ:

- वाणिज्य – ऋग्वेद ५।४५।६, १।११२।११,
- मल्लाह – ऋग्वेद १०।५३।८, यजुर्वेद २१।३, यजुर्वेद २१।७, अथर्ववेद ५।४।४, ३।६।७,
- नाई – अथर्ववेद ८।२।१९,

- स्वर्णकार और माली – ऋग्वेद ८।४७।१५,
- लोहा गलाने वाले और लुहार – ऋग्वेद ५।९।५,
- धातु व्यवसाय – यजुर्वेद २८।१३।

निष्कर्ष

इतने उदाहरणों से वेदों में श्रम की महत्ता स्पष्ट है और यह कहना निराधार है कि वेद श्रम आधारित व्यवसाय का आदर नहीं करते। अगर हम वेदों की इन शिक्षाओं को नहीं भुलाते तो न यहां हड़तालें होती, न इस देश का किसान आत्महत्या करता, न भुखमरी होती और न बेरोजगारी, न जहरीले विचारों वाले संगठन पनपते और न लाल आतंक इस देश में फैलता।

आइए इन सब से मुक्त एक संतुलित समाज और संगठित भारत बनाएं।

संजीव नेवर – एक परिचय

संजीव नेवर वेद, गीता और हिन्दू धर्म के यौगिक विद्वान हैं। वे वेद, योग, आध्यात्म और हिन्दू धर्म विषयक भ्रांतियों का निराकरण करनेवाली अनेक सुप्रसिद्ध पुस्तकों के लेखक हैं। वे अग्निवीर के संस्थापक हैं जो कि जाति, लिंग, क्षेत्र और मत-मतान्तरों की समानता के लिये देश-विदेश में कार्यरत एक आध्यात्मिक मुहिम है। वे जनजातीय इलाकों में जातिगत समानता का प्रसार करनेवाले अग्निवीर के उपक्रम 'दलित-यज्ञ' के प्रवर्तक हैं। वे एक भा-वनाशील कवि एवं वाग्मी हैं। वे आत्महत्या की ओर प्रवृत्त और अवसाद ग्रस्त युवाओं को निराशा के अंधेरे से बाहर निकाल, जीवन की ओर प्रेरित करने वाले तज्ञ हैं। वे आईआईटी और आईआईएम के भूतपूर्व छात्र और विख्यात डेटा साइंटिस्ट हैं जिन्हें रिस्क मैनेजमेंट में महारत हासिल है।

अग्निवीर - एक परिचय

अग्निवीर की स्थापना श्री. संजीव नेवर ने की, जो कि आई.आई.टी-आई.आई.एम से जुड़े एक पेशेवर डेटा वैज्ञानिक हैं। साथ ही वे निज को अंतर्बाह्य सुधार कर विश्व की उन्नति करने के लिए एक समाधान-उन्मुख, अध्यात्म से प्रेरित एवं सच्चा दृष्टिकोण देनेवाले योगी भी हैं। आधुनिक जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए वेद, गीता और योग के शाश्वत ज्ञान के क्रियात्मक प्रयोग करने में अग्निवीर अपनी विशेषता रखता है। अग्निवीर द्वारा बड़े पैमाने पर व्यक्तियों के जीवन में लाए गए परिवर्तन की गवाही ऐसे हज़ारों लोगों के बयान हैं, जो कभी सामाजिक अन्याय के दबाव में आकर आत्महत्या करने की कगार पर थे, नैराश्य से लड़ रहे थे या जीवन से भ्रमित थे।

अग्निवीर अनेक उपेक्षित, अप्रिय किन्तु महत्वपूर्ण मुद्दों की ओर जनता का ध्यान आकर्षित करने में सफल रहा है। अग्निवीर भारत में सामाजिक समता का अग्रणी समर्थक है। अपने उपक्रम 'दलित यज्ञ' द्वारा जाति भेद और लिंग भेद की दीवारों को तोड़ने में अग्निवीर की प्रमुख भूमिका रही है।

मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों की मुहिम चलाने में अग्निवीर अगुवा रहा है, जिसमें हमें मतान्ध रूढ़िवादियों द्वारा घोर प्रतिकार का सामना करना पड़ा है।

अग्निवीर हलाला, सेक्स-गुलामी, बहुविवाह, तीन तलाक एवं लव-जिहाद जैसे घृणित अत्याचारों का पर्दाफाश कर उनके ख़िलाफ़ जनजागृति लाने में सफल रहा है।

अग्निवीर की महिला हेल्पलाइन ऐसे कई मामलों को सुलझाकर अब तक अनेकों चेहरों पर मुस्कुराहट ला चुकी है।

अग्निवीर ने देश के संवेदनशील हिस्सों में आत्मरक्षा के लिए बिना हथियार लड़ने के प्रशिक्षण का प्रारंभ किया हुआ है, जिनसे ऐसी निपुण टीमों का निर्माण किया जा रहा है जो कि अपराधियों से कमज़ोरों की रक्षा करने में सक्षम हैं।

मतान्धता और आतंक के रास्ते पर भटक चुके अनेक युवाओं को समाज की मुख्यधारा में वापस जोड़ने में अग्निवीर को जबरदस्त सफलता हासिल हुई है। अग्निवीर डी-रेडीकलाईजेशन में अपना कोई सानी नहीं रखता।

अग्निवीर के शोध और इतिहास-वर्णनों ने ऐसी सार्थक हलचल उत्पन्न की है जिसने राजनैतिक दबावों के चलते पढ़ाए जाने वाले प्रचलित इतिहास की प्रामाणिकता पर प्रश्न-चिन्ह लगा दिया है।

अग्निवीर ने सामाजिक समता, जातीय समता, स्त्री-पुरुष समता, मानवाधिकार, विवादग्रस्त धार्मिक अधिकार और इतिहास जैसे विषयों के अलावा स्वयं-सहायता, हिन्दू धर्म और श्रेष्ठ जीवन यापन के तरीकों पर भी अनेक पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

अग्निवीर की पुस्तकें सरल, स्पष्ट, मौलिक, समाधान प्रस्तुत करनेवाली, क्रियात्मक, नवीन और अद्भुत ज्ञान से परिपूर्ण होने के कारण पाठकों द्वारा अत्यंत सराही गई हैं।

अपने जीवन को सम्पूर्णता के साथ जीते हुए सार्थक बनाने की इच्छा रखनेवाले प्रत्येक मनुष्य का अग्निवीर में स्वागत है, हमारी मुहिम में सहभागी बनिए।

अधिक जानकारी के लिए देखें-

वेबसाइट: http://www.agniveer.com/

फेसबुक: http://www.facebook.com/agniveeragni

यूट्यूब: http://www.youtube.com/agniveer

ट्विटर: http://www.twitter.com/agniveer

अग्निवीर का सदस्य बनने के लिए, यहां सदस्यता फॉर्म भरें:

http://www.agniveer.com/membership-form/

अग्निवीर को सहयोग प्रदान करने के लिए, यहां भुगतान करें:

पेमेंट पेज : http://www.agniveer.com/pay/

पेपाल : give@agniveer.com

अग्निवीर

राष्ट्र सेवा | धर्म रक्षा